ISSN-2321-3981

सचित्र प्रेरक बाल मासिक

देवपुत्र

कार्तिक २०७७ नवम्बर २०२०

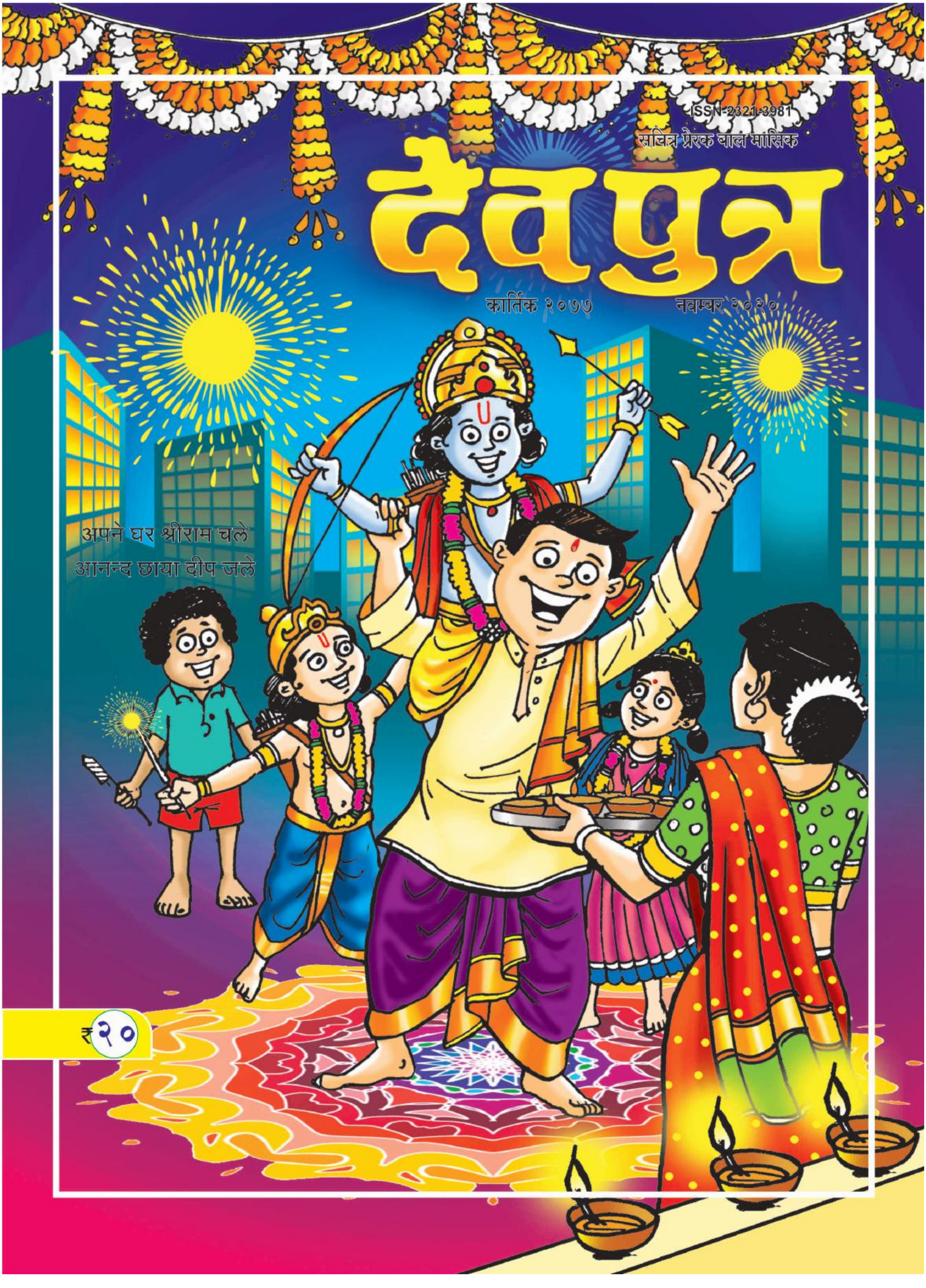

अपने घर श्रीराम चले
आनन्द छाया दीप जले

₹२०

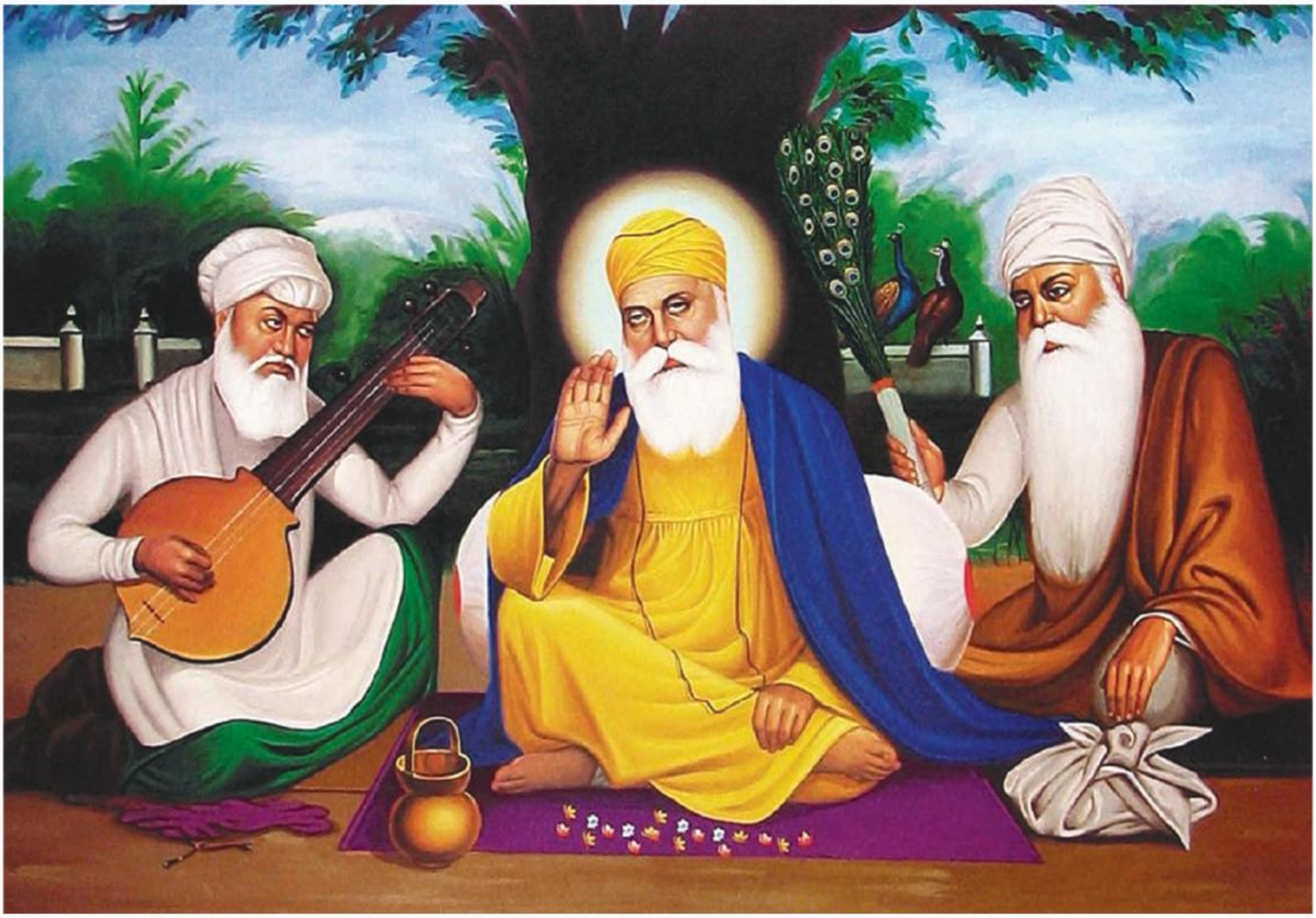

३० नवम्बर गुरु नानक जयंती

नानक नाम सुहावन

– रमेश कुमार शर्मा

संवत् पन्द्रह सौ छब्बीस,कार्तिक पूनम पावन।
परमतेज प्रगटा भूतल पर, नानक नाम सुहावन।।

रायभोए दी तलवंडी में दिव्य, अलौकिक बालक जन्मा,
मनमोहन वह रूप देखकर हर्षित हुई बहुत भारत माँ।
महक उठा माँ तृप्ता, कालू मेहता का घर–आँगन
परमतेज प्रगटा भूतल पर, नानक नाम सुहावन।।

व्यर्थ जातिगत भेदभाव है, यही सिखाते गुरुवर
सिख समाज में हैं नर–नारी, राजा–रंक बराबर।
उन्हें पुकारा लोगों ने कह 'जगचानन, कलितारण'
परमतेज प्रगटा भूतल पर, नानक नाम सुहावन।।

भाव 'एक ओंकार' जगाने गुरुजी ने यात्रा की
लंका, ताशकंद, मक्का तक पैदल धरती नापी।
गुरु के भजन सुने जगती ने, प्रात: प्रभु–गुणगायन
परमतेज प्रगटा भूतल पर, नानक नाम सुहावन।।

पुर करतार साक्षी, कैसी है गुरु–शिष्य सगाई
सुत को नहीं, शिष्य अंगद को गुरुगद्दी सँभलाई।
नानकदेव गये भूतल तज, करते प्रभु–आराधन
परमतेज प्रगटा भूतल पर, नानक नाम सुहावन।।

– बीकानेर (राजस्थान)

विश्व का सर्वाधिक प्रसार संख्या कीर्तिमान
देवपुत्र
(विद्या भारती से सम्बद्ध)

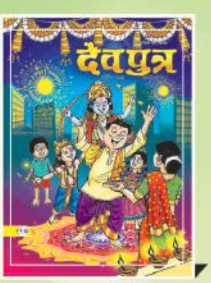

कार्तिक २०७७ ▪ वर्ष ४१
नवम्बर २०२० ▪ अंक ५

प्रधान संपादक
कृष्ण कुमार अष्ठाना

प्रबंध संपादक
शशिकांत फड़के

मानद संपादक
डॉ. विकास दवे

कार्यकारी संपादक
गोपाल माहेश्वरी

मूल्य

एक अंक	:	२० रुपये
वार्षिक	:	१८० रुपये
त्रैवार्षिक	:	५०० रुपये
पंचवार्षिक	:	७५० रुपये
आजीवन	:	१४०० रुपये
सामूहिक वार्षिक	:	१३० रुपये

(कम से कम १० अंक लेने पर)

कृपया शुल्क भेजते समय चेक/ड्राफ्ट पर केवल 'सरस्वती बाल कल्याण न्यास' लिखें।

संपर्क
४०, संवाद नगर,
इन्दौर ४५२००१ (म. प्र.)
दूरध्वनि: (०७३१) २४००४३९

e-mail:
व्यवस्था विभाग
devputraindore@gmail.com
संपादन विभाग
editordevputra@gmail.com

अपनी बात

प्यारे भैया-बहिनो,

दीपावली का त्यौहार कई प्रसंगों की शुभ स्मृतियों से जुड़ा है। आरंभ तो देवताओं और असुरों द्वारा क्षीरसागर के मंथन से उत्पन्न ऐरावत हाथी, उच्चै:श्रवा घोड़ा, कौस्तुभ मणि,कामधेनु गौ, अमृत कलश सहित भगवान धन्वन्तरि और ऐसी ही दिव्य उपलब्धियों के रूप में भगवती महालक्ष्मी के प्रकट होने की कथा से मान सकते हैं। सागर मंथन से प्रकट ये सब चौदह रत्नों के नाम से विख्यात हैं। इन्ही महालक्ष्मी के पूजन -अर्चन का विशेष पर्व दीपावली है।

दूसरा प्रसंग है श्रीराम का चौदह वर्ष के वनवास को पूरा करके, रावण -विजय का यश अर्जित करके अयोध्या लौटने का। प्रभु श्रीराम के माता जानकी और भ्राता लक्ष्मण सहित अयोध्या पुन: पधारने के आनंद को मनाते हुए समस्त नगरवासियों ने भव्य दीप मालिकाएं सजाई थीं । ये दीपमालाएं ही दीपावली कहलाती है। तत्पश्चात् यह पर्व सारे भारतवर्ष और अनेक स्थानों पर विदेशों में भी दीप पर्व के रूप में मनाया जाने लगा।

तीसरी कथा भगवान श्रीकृष्ण के द्वारा नरकासुर वध और इन्द्रपूजा के स्थान पर प्रकृतिपूजा की प्रतीक गोवर्द्धन पूजा के प्रचलन और उस समय अन्नकूट के रूप में जाति पाँति के भेदभाव के बिना सहभोज की परम्परा के रूप में प्रचलित है।

हजारों वर्षों से यह प्रसंग हमें उल्लास अभिव्यक्ति का माध्यम बनते आए हैं। इस वर्ष कोरोनाकाल की विषम परिस्थितियों में इस उत्साह पर चिंताओं की छाया तो है। आप अपने विद्यालय भी जाने के लिए आतुर हो रहे होंगे, लेकिन यह दीपावली घर में रह कर घर की बनी मिठाई खाकर और घर में बनाई वस्तुओं से सजावट करके मनाना ही ठीक है। कोरोना का औषधि न मिलने तक पूरी सावधानी रखना बहुत आवश्यक है।

इसी वर्ष अवधधाम में श्रीराम के मंदिर निर्माण का शुभारंभ हुआ है भावनात्मक रूप से राम हमारे घरों में भी पधारें ऐसी श्रद्धा से इस दीपावली का खूब आनंद मनाइए और उत्साह के दीप जलाए रखिए। शुभ दीपावली।

आपका
बड़ा भैया

web site - www.devputra.com

।। अनुक्रमणिका ।।

कहानी

- दुर्गा पूजा की सीख - नीतीश चौधरी ०५
- मोहल्ले का दशहरा - ललित शौर्य ०८
- क्रांति जीवन - रामकरण १२
- पुरस्कार - तारादत्त जोशी ३५
- पुतले की सीख - हरिन्दरसिंह गोगना ३९
- आँख खुल गई - उषा जायसवाल ४२
- थोड़ी सी हिम्मत - पवन कुमार वर्मा ४६

लघु कहानी

- बालमन - विनीता मोटलानी ४८

लोककथा

- सातवीं रानी - मूल अंग्रेजी- मानसरंजन महापात्र ३०
  - अनुवाद- सुषमा यदुवंशी

एकांकी

- डाकघर से... - तपेश भौमिक १६

प्रसंग

- स्वाभिमान के धनी - राजनारायण चौधरी १०
- बच्चे की भेंट - डॉ. रामसिंह यादव १०
- एक महान वैज्ञानिक - डॉ. ऋषिमोहन श्रीवास्तव ११
- साहस की विजय - सांवलाराम नामा ४८

कविता

- सच्चा विजय पर्व होगा - डॉ. रोहिताश्व अस्थाना ०२
- मतलाना चीन के... - कल्याणमय आनंद २४
- विजय दशमी - ओम उपाध्याय ३२
- बन्द देश का कोना... - केशरीप्रसाद पाण्डेय 'बृहद्' ३४
- चंदामामा - पवन कुमार पहाड़िया ४१
- ताक धिना धिन - अनुरूपा चौघुले ५१

स्तंभ

- संस्कृति प्रश्नमाला - ०६
- देश विशेष -श्रीधर बर्वे २०
- स्वयं बने वैज्ञानिक - राजीव तांबे/सुरेश कुलकर्णी २३
- सचित्र विज्ञान वार्ता -संकेत गोस्वामी २६
- आओ ऐसे बनें - मदन गोपाल सिंघल २८
- छः अंगुल मुस्कान - विष्णुप्रसाद चौहान ३१
- आपकी पाती -
- बड़े लोगों के हास्य प्रसंग -
- विषय एक कल्पना अनेक - राजकुमार जैन 'राजन' ४४
  - गोविन्द भारद्वाज ४४
  - दुर्गाप्रसाद शुक्ल आजाद ४५
- यह देश है वीर जवानों का ४९
- पुस्तक परिचय ५०

बाल प्रस्तुती

- गलती - आलीशा सक्सेना २५
- चींटी को जब गुस्सा... - राज आर्यन ४०

चित्रकथा

- मुफ्त में नहीं - देवांशु वत्स ०७
- सबसे बड़ा झूठ - संकेत गोस्वामी १५
- घड़ी की कीमत - देवांशु वत्स ३३

क्या आप देवपुत्र का शुल्क नेट बैंकिंग से जमा करा रहे हैं? तो कृपया ध्यान दें!

देवपुत्र का शुल्क इसकी प्रकाशन संस्था - **सरस्वती बाल कल्याण न्यास** के खाते में ही जमा कराएँ।
विवरण इस प्रकार है- खातेदार - **सरस्वती बाल कल्याण न्यास** बैंक - **स्टैट बैंक ऑफ इण्डिया, एम.वाय.एच.परिसर शाखा, इन्दौर** खाता क्रमांक-**38979903189** **चालू खाता (Current Account) IFSC- SBIN0030359** राशि जमा करने के बाद जमा पर्ची को देवपुत्र के ई-मेल **ID devputraindore@gmail.com** पर अवश्य भेजिए। नेट बैंकिंग में प्रेषक के कॉलम में पहले अपना स्थान लिखें फिर **सरस्वती शिशु मंदिर** का संक्षेप लिखें तो सन्देश ठीक आता है। उदाहरण के लिए -सरस्वती शिशु मंदिर, संजीत मार्ग, मंदसौर ने देवपुत्र का शुल्क भेजा तो उन्हें प्रेषक में लिखना चाहिए - "**मन्दसौर संजीत मार्ग SSM**" आशा है सहयोग प्रदान करेंगे।

छमछम आई दिवाली

कहानी

सुधा भार्गव

दीवाली का दिन और लक्ष्मी पूजन का समय पर बच्चे तो ठहरे बच्चे वे फुलझड़ियाँ, अनार छोड़ने में मस्त। तभी दादाजी की रौबदार आवाज ने हिला दिया– देव, दीक्षा, शिक्षा जल्दी आओ मैं तुम सबको एक कहानी सुनाऊँगा।

कहानी के नाम पर भागे बच्चे झटपट घर की ओर। हाथ मुँह धोकर पूजाघर में घुसे और कालीन पर बिछी सफेद चादर पर बैठ गये। सामने चौकी पर लक्ष्मीजी कमल पर बैठी बड़ी मनमोहक लग रही थी। पास में गणेशजी हाथ में लड्डू लिए मुस्करा रहे थे।

बातूनी देव कुछ देर उन मूर्तियों को बड़े ध्यान से देखता रहा। उसका जिज्ञासु मन बहुत सी बातों को जानने के लिए मचल उठा। बस लगा दी प्रश्नों की झड़ी।

''दादाजी! लक्ष्मीजी कमल पर क्यों बैठी हैं?''

''कमल अच्छे भाग्य का प्रतीक है और लक्ष्मी धन की देवी हैं। जिस घर में वह जाती हैं उसके अच्छे दिन शुरू हो जाते हैं। खूब अच्छा खाते हैं। रोज नए कपड़े पहनते हैं। बच्चे अच्छी शाला में खूब पढ़ते हैं।''

''हमारे घर में लक्ष्मीजी कब आएँगी दादाजी? उन्हें जल्दी बुला लाओ और कहो– हमारे घर में खूब सारा रुपया–पैसा भर दें। आह फिर तो क्या मजा! मैं तो खूब मिठाई खाऊँगा– खूब बम–पटाखा करूँगा।''

दीक्षा को अपने भाई की बुद्धि पर बड़ा तरस आया और बोली–

''अरे बुद्धू' इतना भी नहीं जानता– लक्ष्मीजी को बुलाने के लिए ही तो हम उनकी पूजा करेंगे।''

''देखो दीदी! मुझे चिढ़ाओ मत। अच्छा तुम्ही बता

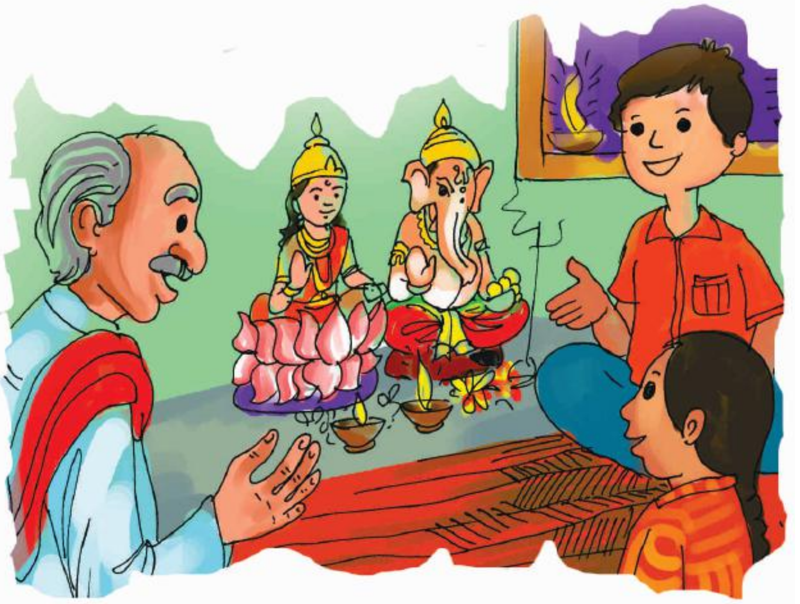

दो– लक्ष्मीजी कमल के साथ कब से रहती हैं?''

दीक्षा सकपका कर अपने दादाजी का मुँह ताकने लगी।

''बेटे! इसके पीछे भी एक कहानी है। तुमने अपनी माँ को देखा है न! दही को जब वह मथती है तो मक्खन निकल आता है। उसी तरह जब राक्षस और देवताओं ने समुद्र का मंथन किया उससे कमल सहित लक्ष्मीजी का जन्म हुआ। तभी से वे कमल के साथ रहती हैं और उसे बहुत स्नेह करती हैं। कमल का फूल होता भी तो बहुत सुंदर है। मुझे भी बहुत अच्छा लगता है।'' दादाजी बोले।

''आपने तो हमारे बगीचे में ऐसा सुंदर फूल उगाया ही नहीं'' देव बोला।

''बच्चे, यह बगीचे में नहीं, तालाब की कीचड़ में पैदा होता है।''

''कीचड़–वो काली–काली बदबूदार! फिर तो कमल को मैं छुऊँगी भी नहीं।'' दीक्षा ने नाक चढ़ाई।

''पूरी बात तो सुनो! कीचड़ में रहते हुए भी फूल ऊपर उठा मोती की तरह चमकदार रहता है। उस पर गंदगी का तो एक दाग भी नहीं। लक्ष्मीजी तभी तो इसे पसंद करती हैं।''

''कमाल हो गया– गंदगी में पैदा होते हुए भी गंदा नहीं। यह कैसे हो सकता है?''

''यही तो इसका सबसे बड़ा गुण है। तुम्हें भी गंदगी

में रहते हुए गंदा नहीं होना है।''

''दादाजी! हम तो कीचड़ में रहते नहीं, माँ धूल में भी नहीं खेलने देती– फिर गन्दे होने का प्रश्न ही नहीं!'' दीक्षा बोली।

''शाला में तो तुम्हें दूसरे बच्चे भी मिल सकते हैं जो गंदे हों।''

''हमारे शाला में कोई गंदे कपड़े पहन कर नहीं आता। मेरी सहेलियाँ तो रोज नहा कर आती हैं।''

''दूसरे तरीके की भी गंदगी होती है, दीक्षा बिटिया। जो झूठ बोलते हैं, नाक–मुँह में उंगली देते हैं, दूसरों की चीजें चुपचाप उठा लेते हैं, वे भी तो गंदे बच्चे हुए।''

''हाँ, याद आया परसों मोनू ने खेल के मैदान में बागची को धक्का दे दिया था और नाम मेरा ले दिया। उसके कारण शिक्षक ने मुझे बहुत डांटा। तब से मैंने उससे एकदम बोलना बंद कर दिया। देव चंचल हो उठा।

''ठीक किया। तुमको बुरे बच्चों के साथ रहते हुए भी उनकी बुरी आदतें नहीं सीखनी है।''

''समझ गया– समझ गया दादाजी! हमें कमल की तरह बनना है तभी तो लक्ष्मीजी से भर–भर मुट्ठी पैसे मिलेंगे और जेब में खन–खन बजेंगे। हा–हा खनखन–खनखन। खाली जेब में हाथ डालकर झूमने लगा।

''अब बातें एकदम बंद। मुँह पर उंगली रखो। आँखें मीचकर लक्ष्मीजी की पूजा में ध्यान लगाओ। अरे शिक्षा तुम्हारी आँखें खुली क्यों हैं?''

''दादाजी मैं तो पहले गणेश जी वाला बड़ा सा पीला लड्डू खाऊँगी तब आँख मीचूँगी। मैंने आँखें बंद कर ली तो नटखट देवू खा जाएगा।''

''अरे पगली मेरे पास बहुत सारे लड्डू हैं। पूजा के बाद प्रसाद में तुझे एक नहीं दो दे दूँगा। खुश''

''सच दादाजी– मेरे अच्छे दादाजी!'' उसने झट से खूब जोर लगाकर आँखें मींच लीं।

कुछ पल ही गुजरे होंगे कि बच्चे झपझपाने लगे अपनी पलकें। बड़ों की बंद आँखें देख कुछ इशारा किया और भाग खड़े हुए तीनों, तीन दिशाओं की ओर, पर पकड़े गये।

''कहाँ भागे– पहले दरवाजे पर मिट्टी के दिये जलाओ। फिर बड़ों को प्रणाम कर उनसे आशीर्वाद लो।'' दादाजी ने प्यार से समझाया।

बच्चे दीयों की तरफ मुड़ गए। टिपटिपाते दीयों की रोशनी उन्हें बहुत भाई।

उमंग भरे बच्चे दीप जलाते–जलाते गाने लगे–

दीप जलाकर हम खुशी मनाते
छम छम आई आह दिवाली
रात है काली काल कलूटी
फिर भी छिटका उजियाला
घर लगता हमको ऐसा जैसे
पहनी हो दीपों की माला।

गान पूरा होते ही उन्होंने बड़ों के पैर छुए। इसके बाद तो हिरण सी चौकड़ी भरते बाहर भागे जहाँ उनके मित्र प्रतीक्षा कर रहे थे।

''ओ देवू– देख मेरी फुलझड़ी ये रहा मेरा बम– धमाके वाला– आह अनार छोड़ूँगा तो फुस से जाएगा आकाश में। तू देखता ही रहे जाएगा।''

आई दिवाली आई छोड़ो पटाखे भाई–मित्र मंडली चहचहा उठी। बच्चों के कलरव को सुनकर दादाजी उनकी खुशी में शामिल हुए बिना न रहे। लड्डुओं का थाल लिए बाहर ही आ गए। लड्डुओं को देख बच्चों के चेहरे चमक उठे। सबने अपनी हथेलियाँ लड्डुओं के लिए उनके सामने पसार दीं।

''हे भगवान! तुम्हारी हथेलियाँ इतनी गंदी। किसी के हाथ में लड्डू नहीं रखा जाएगा। आज मैं अपने हाथों से तुम्हें लड्डू खिलाऊँगा।''

दादाजी देव, शिक्षा, दीक्षा के अलावा उनके मित्रों को भी बड़े प्यार से लड्डू खिलाने लगे। ऐसा लग रहा था उनके चारों तरफ आनंद और उल्लास की छमछम बरसात हो रही है। लक्ष्मीजी भी उन्हें देख पुलकित हो उठीं और पूरे वर्ष हँसने–मुस्कुराने का वरदान देकर चली गईं।

– बैंगलुरू (कर्नाटक)

ताक धिनाधिन

– डॉ. प्यारेलाल श्रीमाल 'सरस पंडित'

एक बात सुनोगे क्या भई क्या?
ताक धिनाधिन वाह भई वाह!
भारत माँ के बच्चे हम, दुनिया भर से अच्छे हम
हमसे अच्छा कौन यहाँ,
ताक धिनाधिन वाह भई वाह!
माँ है मेरी मोती माला, और पिताजी हीरे के।
दादा–दादी लाड़ लड़ाते, लड्डू पेड़े दे–दे के।
ताक धिनाधिन वाह भई वाह!
नाना–नानी घेवर फीनी, किस्से खूब सुनाते हैं।
नानीजी जब डाँट पिलाती, नानाजी समझाते हैं।
ताक धिनाधिन वाह भई वाह!
ताईजी हैं गरम जलेबी, बड़े प्यार से पुचकारे।
गुलाब जामुन खूब खिलाते, ताऊजी लगते प्यारे।
ताक धिनाधिन वाह भई वाह!
चाचाजी हीरो के जैसे, चाचीजी हीरोइन है।
पिक्चर देखे हमें दिखाएं, दोनों ही नम्बर वन हैं।
ताक धिनाधिन वाह भई वाह!
भुआजी हैं शक्कर जैसी, फूफाजी शक्करपारे।
बढ़िया कपड़े हमको लाते, पहने तो लगते न्यारे।
ताक धिनाधिन वाह भई वाह!
मासी मेरी मीठी मीठी, बातों से मन बहलाती।
मौसाजी को पास बिठाकर, अच्छी बातें सिखलाती।
ताक धिनाधिन वाह भई वाह!
मामा–मामी सोना चांदी, हमको खेल खिलाते हैं।
गोली–बिस्कुट, नानखटाई, चॉकलेट भी लाते हैं।
ताक धिनाधिन वाह भई वाह!
आज्ञा पालन करें गुरू की, सेवक मात–पिता के हम।
सेवा करते मेवा पाते, वीर–बहादुर बांके हम।
ताक धिनाधिन वाह भई वाह!
भाई–बहनों के संग खेलें, कभी नहीं झगड़ा करते।
जो भी बड़े मिले तो उनसे, कभी नहीं अकड़ा करते।
ताक धिनाधिन वाह भई वाह!
अच्छे–अच्छे लोगों के हम, 'सरस' सलौने बच्चे हैं।
खूब खेलते, पढ़ाई करते, बातों के हम सच्चे हैं।
ताक धिनाधिन वाह भई वाह!

– उज्जैन (म. प्र.)

खुशियों के दीप

कहानी

डॉ. देशबंधु 'शाहजहांपुरी'

कल दीवाली थी। सौरभ और सुरभि अपने पिताजी के साथ बाजार से ढेर सारे पटाखे, मिट्‌टी के दीपक, बिजली वाली झालरें, खेल–खिलौने, मिठाई और घर की सजावट का सामान लेकर आए थे। द्वार पर पैर रखते ही सौरभ चिल्लाया, ''देखो माँ, हम लोग पूरा बाजार ही उठा लाए।'' और इसी के साथ सौरभ ने दरवाजा खोला। काम वाली बाई आई थी। उसके साथ उसकी छोटी बेटी भी थी।

''यहाँ कोने में बैठ जाओ गुड़िया! जल्दी–जल्दी काम निपटाकर बाजार चलेंगे। फिर तुम्हें नई फ्रॉक दिलवाऊँगी। अब रोना बिलकुल नहीं।'' काम वाली बाई ने कहा और फिर रसोईघर में घुस गई।

उसकी बात सुनकर माँ ने गुड़िया की ओर देखा। वास्तव में गुड़िया की आँखों में आँसू तैर रहे थे। संभवत: वह इससे पहले बहुत रो चुकी थी। गुड़िया के सिर पर हाथ फेरते हुए माँ ने पूछा, ''तू तो बहुत अच्छी गुड़िया है। नन्हीं मुन्नी, प्यारी–प्यारी.... फिर भी रोती है? तेरी माँ तो तुझे अच्छी सी फ्रॉक दिलवाने जाएगी बाजार...।''

माँ की बात सुनकर काम वाली बाई ने कहा, ''यह इसलिए रो रही है मालकिन जी, कि इसे पटाखे और फुलझड़ी चाहिए। मोहल्ले के बच्चों

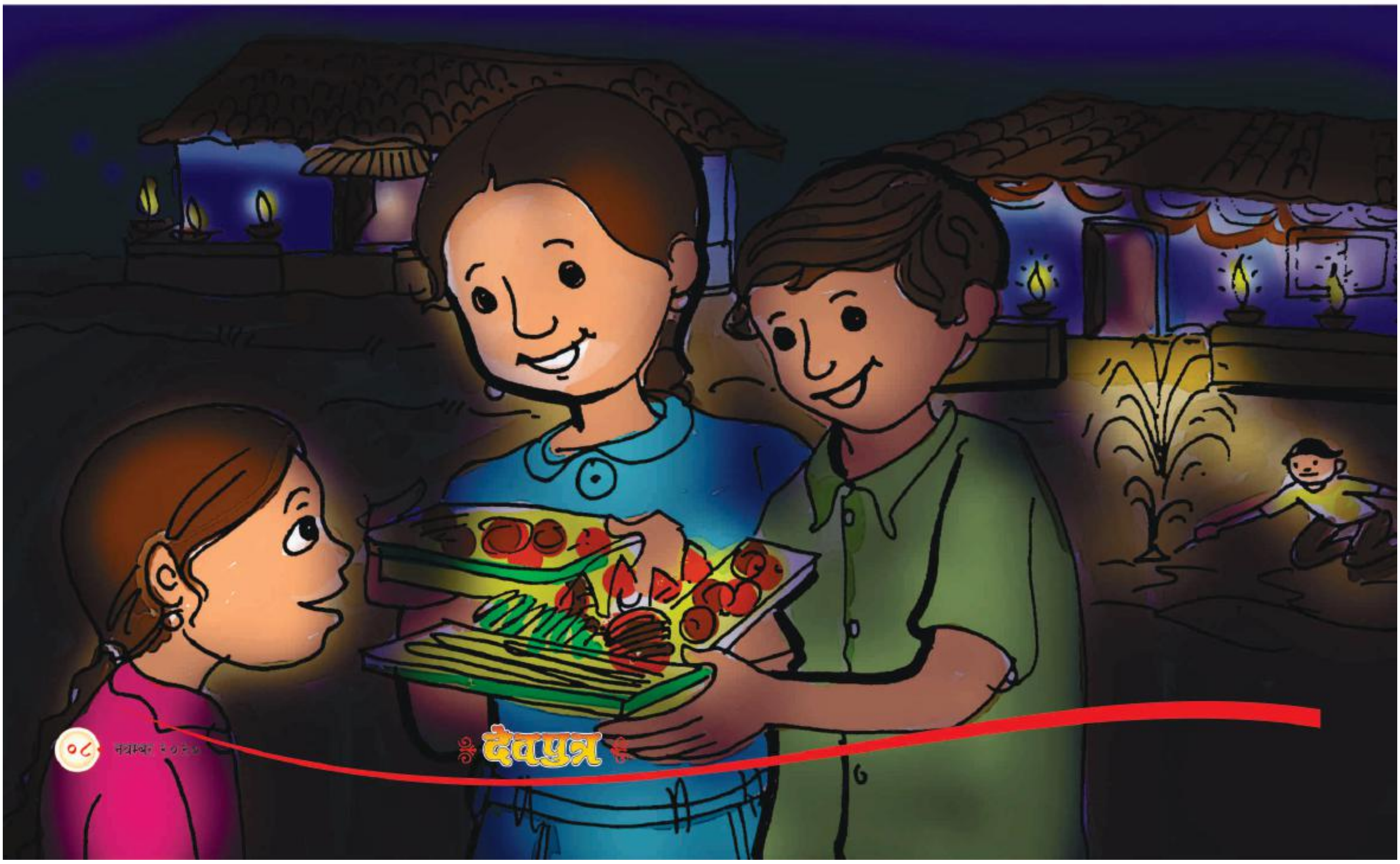

को फुलझड़ी और पटाखे चलाते देखकर यह भी मचल रही है। अब आप ही बताओ, यदि मैं सारे पैसे पटाखों में ही खर्च कर दूँगी तो इसके लिए फ्रॉक कहाँ से खरीद पाऊँगी?''

माँ और बाई की बातें सौरभ और सुरभि भी सुन रहे थे। उन्हें यह जानकर बहुत दु:ख लगा कि गुड़िया दीवाली पर पटाखे और फुलझड़ी इसलिए नहीं चला पायेगी, क्योंकि उसकी माँ के पास इसके लिए पैसे नहीं हैं। तभी सुरभि, सौरभ के काम के पास आपना मुँह ले जाकर फुसफुसाई, ''भैया! हम तो ढेर सारे पटाखे लाए हैं। यदि थोड़े से गुड़िया को भी दे दें तो यह भी दीवाली पर फुलझड़ी चला पायेगी।''

सौरभ को सुरभि की बात बहुत अच्छी लगी। उसने तुरंत सहमति में अपना सिर हिलाया और पटाखों के थैले में से फुलझड़ी, महताब और पटाखों के कुछ पैकेट अलग रखने लगा। यह देखकर पिताजी ने कहा, ''सौरभ! ये पटाखे अलग क्यों रख रहे हो? मैंने तुमसे कहा था न कि कल दीवाली वाले दिन, रात को पूजन हो जाने के बाद आतिशबाजी चलाना..।''

''पिताजी! मैं ये पटाखे आज थोड़े ही चलाने के लिए अलग रख रहा हूँ। मैं तो ये पटाखे गुड़िया को देने जा रहा हूँ। सुरभि भी यही चाहती है। थोड़े से पटाखे गुड़िया को देने से यह भी दीवाली वाले दिन आतिशबाजी का आनंद ले पायेगी।'' सौरभ ने पिताजी की ओर देखकर कहा।

सौरभ की बातें सुनकर पिताजी के चेहरे पर मुस्कान छा गई। काम वाली बाई भी सौरभ की बातें सुन रही थी। उसकी आँखों में खुशी के आँसू की बूँदें तैरने लगीं थी। मन ही मन उसने सौरभ और सुरभि को अनगिन आशीष दे डाले। माँ ने सौरभ का मस्तक चूमते हुए कहा, ''सचमुच खुशियाँ बाँटने से और बढ़तीं हैं। तुम दोनों ने दीवाली के पटाखें गुड़िया को देकर बहुत अच्छा काम किया है। इससे गुड़िया के मन में भी खुशियों के दीप जल उठेंगे।''

सौरभ और सुरभि ने जब गुड़िया को पटाखों का थैला पकड़ाया तो गुड़िया के रोते चेहरे पर मुस्कान फैल गई।

– शाहजहाँपुर (उ. प्र.)

चित्र विचित्र

• राजेश गुजर

नीचे बनी रांगोली में आपको एक ऐसा स्वस्तिक बनाना है जिसकी चारों भुजाओं में दीपक बराबर विभाजित हो जाए ।

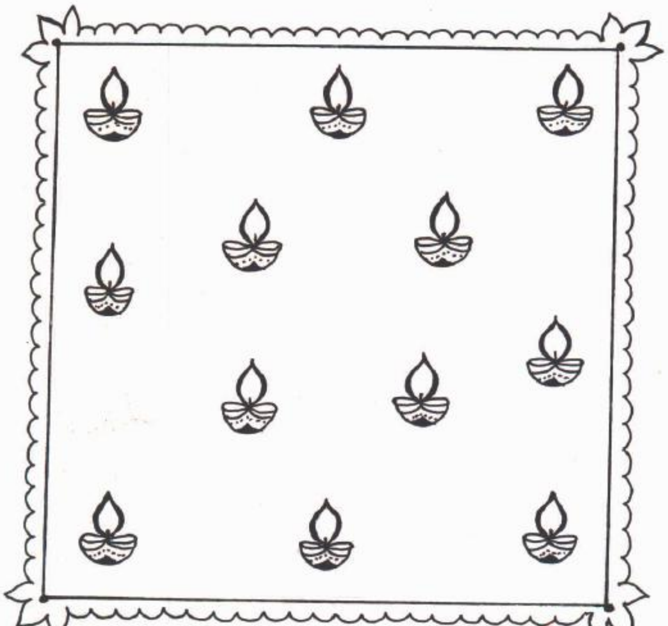

दीवाली

– रामगोपाल राही

बात न पूछो दीवाली की
खुशिया मिले निराली।
त्योहारों में सबसे बढ़कर
होती है दीवाली।।
साफ–सफाई घर की होती
सुंदर लगते प्यारे।
सजे रंगोली–रंग रोगन हो
दीपक जलते प्यारे।।
खिले खिले से मुखड़े सबके
फुलझड़ियों से लगते।
उपाहार सौगात, मिठाई,
खाते लगे न थकते।
जोर जोर से चले पटाखे
रात अनोखी न्यारी।
फूल झड़ाती, फुलझड़ियों संग
मने दीवाली प्यारी।।
परम्परागत पुण्य पर्व की
होती बात निराली।
पर्वों में महापर्व हमारा
सचमुच में दीवाली।।
मन में उत्साह स्वर्णिम आभा
रात लगे मतवाली।
छत, छज्जे मुंडेर घरों में
दीप जले उजियाली।।
कण–कण आलोकित धरती का
रहता दूर अँधेरा।
हर दीपक के तले आ गया
सिमटा चला अँधेरा।

– लाखेरी (बूँदी) राज.

दीवाली की धूम

– मोहन उपाध्याय

धूम मचाती आज दीवाली।
जगमग–जगमग करती–करती,
अंधकार को हरती–हरती,
जीवन में सुख भरती–भरती;
जीवन को सरसानेवाली।
चारों ओर भीड़ उमड़ी है,
गरज रही अब लड़ी–लड़ी है,
अहा! अहा!! की लगी झड़ी है;
जीवन को हरषानेवाली।
नर नारी सजधजकर आये,
बाल वृद्ध सब हैं हरषाये,
इक–दूजे से नेह लगाये
जीवन–गीत सुनानेवाली।
सतरंगी हैं लड़ियाँ–माला,
करतीं चारों ओर उजाला,
दीपक झिलमिल, दृश्य निराला;
सुंदरता बिखरानेवाली।
श्री लक्ष्मी का अब आराधन,
और पूज्य हैं आज गजानन,
सुख–वैभव का हुआ आगमन;
जीवन ज्योति जलाने वाली।

– अजमेर (राजस्थान)

Happy
Diwali

बच्चों की दीपावली

– अनिल अग्रवाल

नन्हें–नन्हें हाथो से अपने
लेकर दीप सलोनी आई।
रंग–बिरंगे फूल चुनकर
तान्या ने रंगोली बनाई।।
घर–आँगन को साफ कर
बच्चों ने बगिया महकाई।
जयंत ने वंदनवार सजाये
प्रणय ने रंगीन झालर लगाई।।
प्रदूषण होता फटाखों से
बच्चों ने भी चिंता जताई।
फटाखों से तौबा कर
मयंक ने फुलझड़ी जलाई।।
अंधकार को दूर भगाने
ज्ञान की ज्योति जलाने।
एक दीप रख चौराहे पर
स्वच्छता की अलख जगाई।।
देख बच्चों को होते हर्षित
माता–पिता ने पीठ थपथपाई।
पकवान खाकर सब बच्चों ने
हिलमिल दीपावली मनाई।।

– भोपाल (म. प्र.)

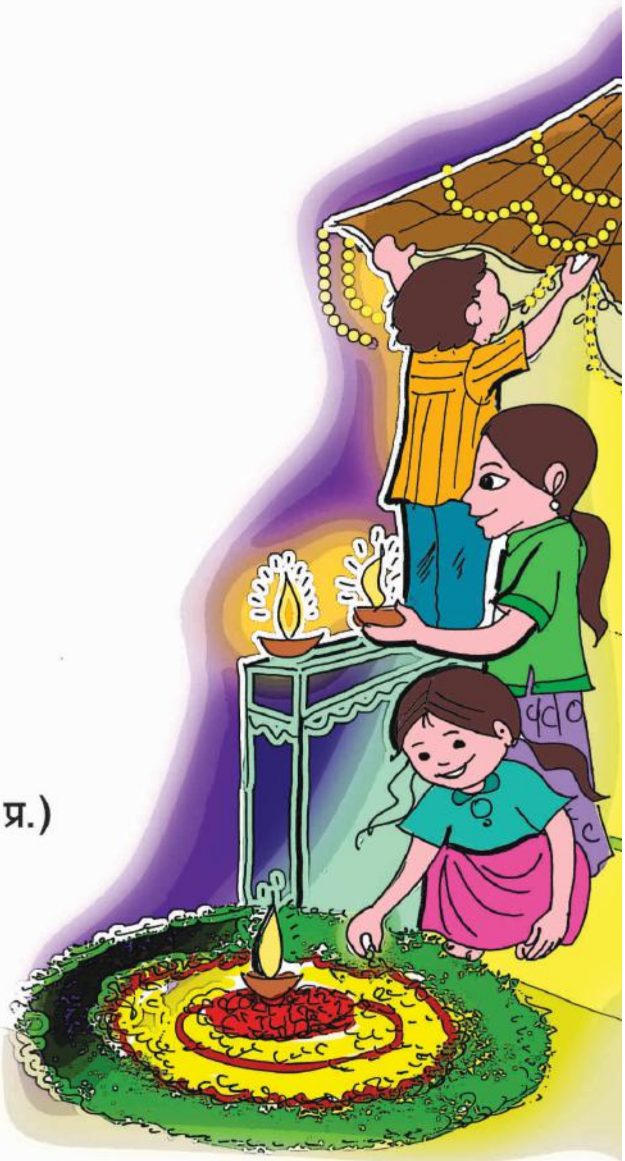

बच्चो! ऊपर के तीन श्रेष्ठ रचनाकारों की कविताएँ पढ़कर नीचे दिए खाली स्थान पर आपको 'दीपावली' विषय पर अपनी कल्पना को पंख लगाकर एक प्यारी सी कविता लिखना है।

आपकी कविता

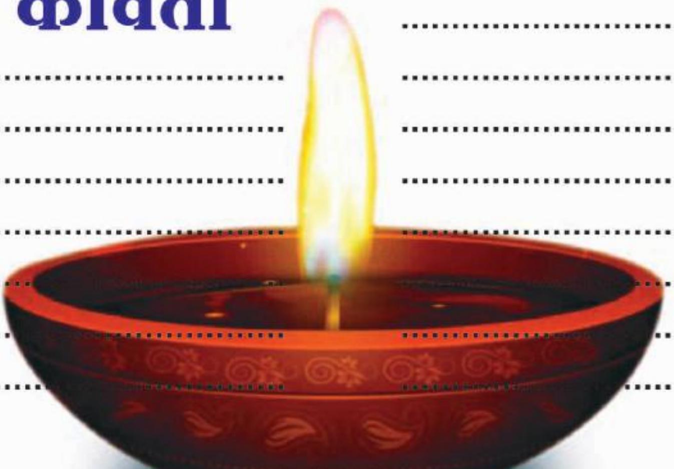

बालूमाटी का ढेर

मूल मराठी – लीना कुलकर्णी (पुणे)

हिन्दी अनुवाद – पद्मा चौगांवकर

चिन्मयी और मानस दोनों बहिन–भाई सारा समय साथ खेलते, चीनू मनू से केवल दो वर्ष बड़ी थी, पर उसे अच्छी तरह सम्हालती– बहुत बड़ी दीदी हो जैसे।

मनू का मन भी चीनू के बिना कहाँ रहता था। वह पास ही एक शाला में जाता बारह बजे तक वापस आता चीनू तीन बजे तक शाला से लौटती तब तक वह दस बार दरवाजे तक फेरे लगाकर उसकी राह देखता। एक दिन दुपहर, दोनों, सीढ़ियों के नीचे, खाली जगह में 'घर–घर' खेल रहे थे। चीनू की रसोई सज गई थी। भोजन तैयार होने की प्रतीक्षा में, मनू पास ही बैठा था। माँ–पिताजी की तरह बोलते करते दोनों खेल में मगन थे।

अचानक 'खड़–खड़', 'धड़–धड़' आवाजें आईं देखते ही देखते एक बड़ा ट्रक घर के सामने आ रुका। दो आदमी कूद कर बाहर निकले आवाजों और संकेतों से ट्रक को पीछे की ओर घुमाया। फिर फावड़ों से पीछे के पल्ले के कुंडे खोले, पल्ला नीचे लटक गया और ट्रक में बलुई मिट्टी नीचे बिखरी।

चीनू–मनू खेलना छोड़ बाहर आ गये थे– देखने दोनों मजदूर फावड़े से तेजी से मिट्टी गिराने लगे.. देखते ही देखते घर की दीवार के पास उस मिट्टी का बड़ा सा ढेर लग गया।

काम खत्म हुआ। खड़–खड़ आवाज करता ट्रक वापस चला गया, चीनू – मनू देख रहे थे– दो–तीन बच्चे और भी आकर वहाँ खड़े हो गये, काम छोड़ माँ भी दरवाजे तक आई! वहाँ से निकलती औरत ने पूछा–

''तुम्हारे यहाँ आई है मिट्टी?''

''हाँ, मकान मालकिन को काम करवाना है,'' चीनू की माँ ने कहा।

''अच्छा,'' ऊपर देखते हुए वह औरत निकल गई।

चीनू–मनू भी अंदर आकर खेलने में लग गये... पर थोड़ी ही देर में उन्हें बच्चों के बोलने–बात करने की आवाजें आई–बाहर आकर देखते हैं दो बच्चे माटी के ढेर पर चढ़ें हैं। एक दो तो दीवार तक चढ़कर बैठे हैं।

उन्हें देख चीनू–मनू भी देहरी की दो सीढ़ियाँ उतरकर नीचे आ गये और ढेर पर चढ़ने लगे, पहली बार पैरों को अनुभव होने पर बोला, रेतीली माटी का वह स्पर्श उन्हें बहुत प्यारा लगा। दोनों के चेहरे खिल गये। खिलखिलाकर हँसने लगे। माटी पर फँसते हुए पावों के साथ चलना आ हा!! इतना आनन्ददायक। अब तो यह नित्य का खेल हो गया। शाम तक बच्चे माटी के ढेर पर चढ़े रहते– ऊपर को चढ़ते फिर धपधपाकर नीचे आते।

रोज उस ढेर पर नये–नये बच्चे दिखाई देने लगे कोई सुबह कोई शाम तो कोई भरी दुपहर मिट्टी पर खेल रहा होता।

पर एक बात अवश्य थी, उस बालू के ढेर पर बच्चों में लड़ाई होते कभी नहीं देखी–किसी ने। उल्टे, जितने अधिक बच्चे उतना ही अधिक आनंद।

बड़े बच्चों को देख, धीरे–धीरे, छोटे वाले भी बालू में पाँव घुसाकर घरौंदे बनाना सीख गये।

कभी अचानक मिट्टी की मालकिन, बाहर आकर बच्चों को डपटती–''ऐ, मिट्टी मत फैलाओ।''

उसके बाद, डरकर कुछ बच्चे आना छोड़ देते फिर एक दो दिन बाद दो–तीन आने लगते फिर धीरे–धीरे सभी लौट आते।

मालकिन के आने पर कुछ इधर–उधर हो लेते और अंदर जाते ही, फिर खेलने लग जाते। मिट्टी का मोह ही ऐसा था।

उकताकर मालकिन ने भी कुछ कहना छोड़ दिया।

वह केवल मिट्टी की मालकिन थी पर

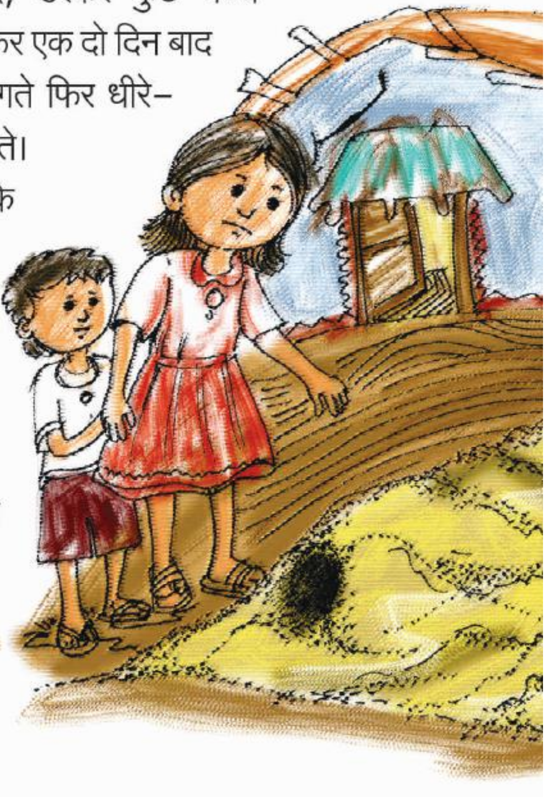

उसका ढेर बच्चों का था।

एक दिन एक बड़ी लड़की ने बालू मिट्टी को दोनों ओर से कुरेद कर एक सुरंगनुमा रास्ता बनाया। चीनू पास ही खड़ी देख रही थी, उस दीदी की एकाग्रता और खोदने थापने की कला को! देख चीनू सम्मोहित–सी हो गई। लम्बी सुन्दर सुरंग देख उसकी आँखें चौधियाँ गईं पर लाख प्रयत्न करने पर भी वह वैसी सुरंग न बना सकी।

वैसे अंधेरा छाने से पहले, चीनू मनू को लेकर घर लौट आती, पर आज देर होने पर माँ को आना पड़ा। बोली– ''क्या है रे! उस मिट्टी के ढेर पर?''

चीनू कुछ अनमनी थी। माँ के पूछने पर उसने बताया, दीदी की तरह सुरंग बनाना उसे नहीं आता, बार–बार टूटकर धसक जाती है।

माँ ने उसका मन रखने को कह दिया– ''अरी पगली आ जायेगा कुछ चीजें करते–करते आ पाती हैं।''

माँ ने हौंसला बढ़ाया था। शाला में सारा समय वह सुरंग की कल्पना में खोई रही। कब छुट्टी हो और कब माटी के ढेर पर पहुँचे।

माटी के ढेर पर मनू भी उसके साथ होता। तीन चार दिनों तक प्रयत्न जारी रहा पर सुरंग बनने में न आती थी। निराश होती... पर उसने हार न मानी और एक दिन अचानक, बोलते–खेलते उसके हाथों सुन्दर लम्बी सुरंग, बन गई.. न टूटी ना धसकी। मारे खुशी के वह पगला गई। मनू को पकड़कर गोल–गोल घुमाया फिर घर को भागी। माँ से लिपटकर सुरंग का समाचार सुनाया, माँ–पिताजी को भी खूब खुशी हुई, संतोष हुआ।

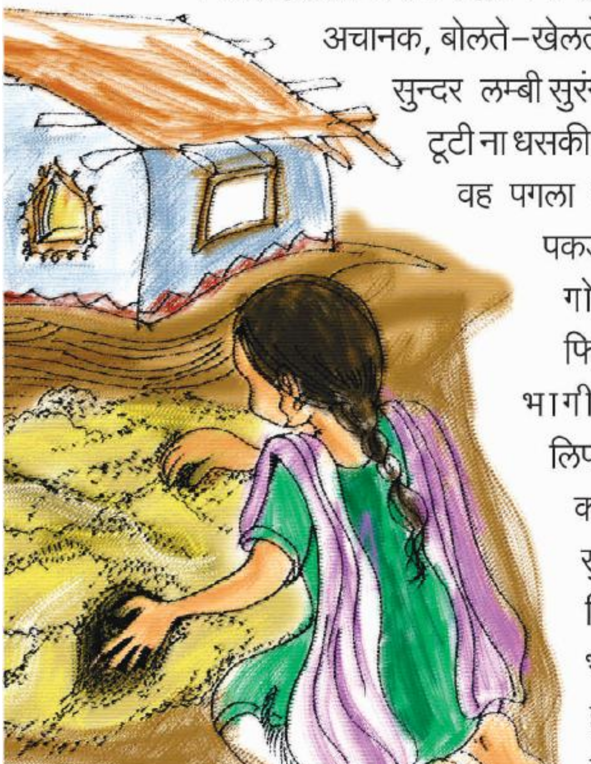

सुरंग बन गई प्रसन्नता मिल गई। अच्छा ही हुआ क्योंकि दूसरे दिन अनहोनी हो गई। सुबह–सुबह ठेकेदार आया, मजदूर आ गये। छत का काम शुरू हो गया। मजदूरों ने तसले भर–भर मिट्टी उठाई, खाली तसले नीचे आते, फिर मिट्टी भर ऊपर जाते देखते ही देखते २–३ घंटों में माटी का ढेर गायब हो गया। कुछ शेष पसरी माटी बता रही थी कि यहाँ एक ढेर था।

परीक्षा पास ही थी। इसलिये माँ ने राहत की साँस ली। मकान मालकिन भी खुश! काम वाले मजदूर न मिलने से छत का काम भी अटका पड़ा था, सामान भी बिखरा था।

चीनू–मनू को तो अपनी ही आँखों पर विश्वास न था। २–३ दिनों तक अगली पिछली गलियों से बच्चे आते रहे उस जगह घूम–फिर लौट जाते।

बालू–मिट्टी गई, बच्चे उदास थे। फिर वार्षिक परीक्षा आ गई चीनू की। मनू की छुट्टियाँ थी। उससे ये दिन कटते न थे। चीनू की छुट्टियों की उसे प्रतीक्षा रहती।

जिस दिन चीनू अंतिम प्रश्नपत्र देकर घर आई, मनू भागकर उसके पास गया बोला– ''मैं माँ के साथ बाजार गया था, लौटते हुए देशपाण्डे काकी मिली, बता रही थी उनके यहाँ मकान का कुछ काम होना है।''

मनू ने समाचार ही ऐसा सुनाया चीनू प्रसन्न हो गई। देशपाण्डे काकी का घर पिछवाड़े ही था। काम कब शुरू होगा, यह सूचना अभी आवश्यक नहीं थी। सच पूछो तो काम से कोई मतलब ही नहीं था। देखना ये था कि मिट्टी कब आती है।

दोनों ने निश्चय किया कहीं भी कामगार, मजदूर दिखाई देता है, तो उस पर ध्यान रखना। कभी भी किसी ट्रक की खड़–खड़, धड़–धड़ आवाज आये तो चेत जाना, एक–दूसरे को तुरंत सूचित करना। क्योंकि उन्हें जो अनुभव आया था, उससे एक बात पक्की थी ऐसी बातों में समय नष्ट करना ठीक नहीं और मिट्टी के ढेर का क्या भरोसा! जैसे अचानक आता है, एकाएक समाप्त भी हो जाता है।

जैसे भी, जहाँ हो, उतने दिन जीभरकर खेल लेना ही अच्छा।

– गंजबासौदा (म. प्र.)

सचित्र विज्ञान चर्चा- संकेत गोस्वामी

धातुएं

धातुएं बेहद प्राचीन समय से इंसान के काम आ रही हैं और ये सभ्यताओं के विकसित होने में सहायक भी रही है।

धातुएं अधिकतर चमकदार और मजबूत होती हैं जो सामान्य तापमान में ठोस अवस्था में ही रहती हैं। केवल पारा ऐसी धातु है, जो तरल अवस्था में पाई जाती है।

धातुओं को ठोक कर, दबाव देकर अलग-अलग आकारों में ढ़ाला जा सकता है। इन्हें विशेष आकर्षक आकार देने के लिए गलाकर, सांचों में भी डाला जा सकता है।

अधिकतर धातुएं सस्ती पड़ती हैं। इनका घिसाव या इनमें कमी बेहद कम होती है और ये पुन:निर्मित की जा सकती हैं। धातुओं को फिर से इस्तेमाल लायक बनाने के प्रयास, दुनिया में धातुओं को खोद कर हासिल करने से ज्यादा किए जाते हैं।

तांबा

लीड

टीन

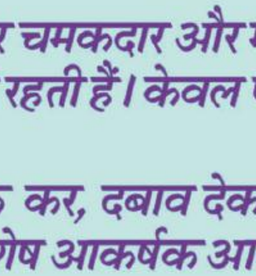
निकल

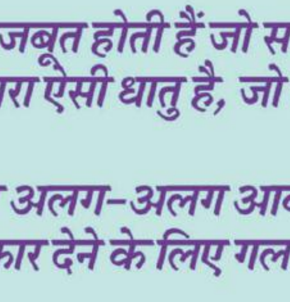
इस्पात

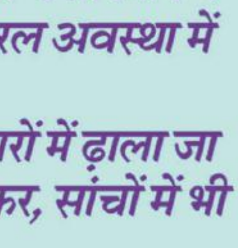
जिंस

सिक्के धातुओं की चपटी परत से बनाए जाते हैं। तांबा, चांदी और धातुओं के मिले रूप को मिश्र धातु कहा जाता है।

लोहा एक शक्तिशाली धातु है

यह मजबूत, लचीला और चुम्बकीय
गुणों से भी युक्त होता है।
पेरिस की एफिल टॉवर का निर्माण 1898 में
प्रदर्शनी के लिए किया गया था
ताकि वह कुछ साल खड़ी रहे और
लोहे की मजबूती की वजह से वो आज तक खड़ी है।
यह मजबूत है, लचीली भी।
आधुनिक अन्य टॉवर इस्पात से बने होते हैं
जो लोहे और कार्बन का मिश्रण होता है।

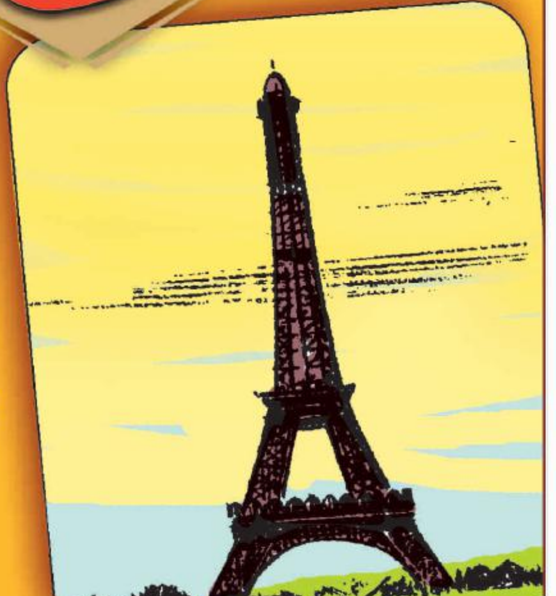

कांस्य युग –

कांसा, तांबे और टिन की मिश्र धातु है। तांबा बेहद मुलायम धातु है पर टिन के साथ यह कड़ा हो जाता है। यह खोज हजारों साल पहले की है। उस समय को कांस्य युग (ब्रोंज एज) कहा जाता है। उसी दौर में कांसे से कुल्हाड़ी बनाई गई, कुल्हाड़ी का यह तरीका बाद में भी जारी रहा जो आज भी देखा जा सकता है।

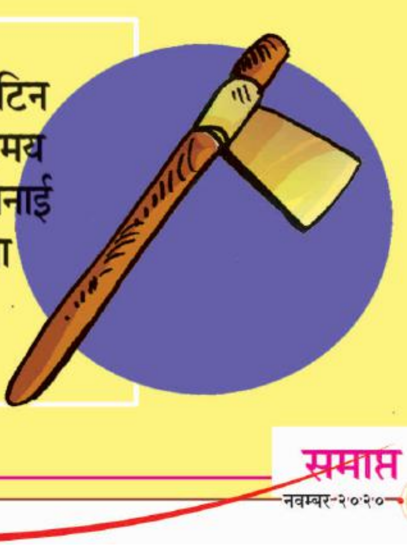

(लघुकथा)

निराली दीवाली

– सुनीता शेगाँवकर

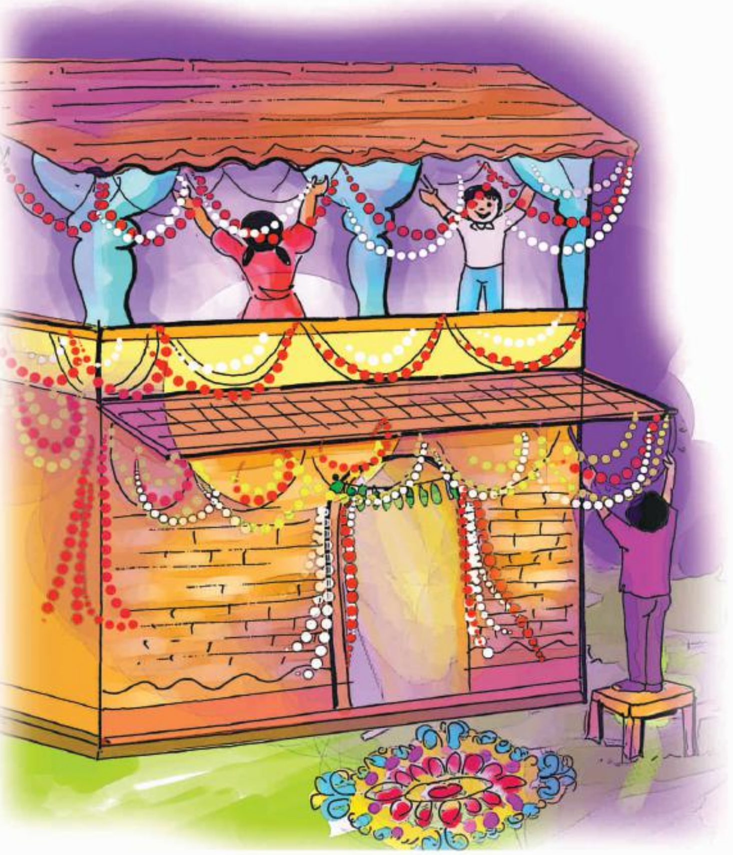

पिछली दीवाली पर मन्नू और सुगंधा दोनों बहुत ही प्रसन्न थे। रामू काका अपने दोनों बच्चों को लेकर शहर आये थे बच्चों को शहर की दीवाली देखनी थी। सब बच्चों ने मिलकर बंगले में रोशनी करने में रामू काका की सहायता की थी।

पूरा बंगला रंग–बिरंगी ज्योति की झालरों से जगमगा रहा था। कुछ दीपमालाएँ निरंतर जगमगा रही थीं तो कुछ जलबुझ वाला आँख–मिचौली का खेल–खेल रही थीं। शरद ऋतु की गुलाबी ठंडी हवा मानो हर पेड़ के हिलने वाली पत्तियों से बोल–बतिया रही हो। छोटी–छोटी दीपमालाओं के रंग–रंगीले परिधानों में सजे पेड़ और बंगले की झाड़ियाँ अपनी सजावट देख इतरा रहीं थी। लेकिन मन्नू और सुगंधा के मन में कोई दर्द था जो उन्हें बारबार टीस दे रहा था। इस बार बिट्टू और सारिका नहीं आये। बारबार वे रामू काका से मानमिनौती करते और कहते ''बिट्टू, सारिका को गाँव से बुला लीजिये ना? पिछले वर्ष शहर की जगमगाहट का आनंद उठाने के लिये कुछ दिन की छुट्टी लेकर स्वयं रामू गाँव से बच्चों को लेकर आया था, लेकिन इस बार संध्या की अकाल मृत्यु के कारण वो बड़ा निरुत्साह था।

इसीलिये उन्होंने साहब से घर जाने के लिये छुट्टी की मांग नहीं की।

शाम के धुंधलके में सौरभ और स्नेहा पूरे बंगले की जगर–मगर देखने में मग्न थे। स्नेहा ने सौरभ से कहा, ''बच्चे, बिट्टू और सारिका की बहुत कमी अनुभव कर रहे हैं, आप रामू काका को गाँव भेजकर बच्चों को बुलवा लीजिये।

सौरभ ने रामू काका को आदेश पूर्वक लेकिन प्रेमभरे शब्दों में कहा, ''रामू! संध्या नहीं है, ये मुझे मालूम है, लेकिन बिट्टू और सारिका दीवाली यहीं मनायेंगे हमारे साथ, कल गाँव जाकर उन्हें ले आइये।''

मन्नू और सारिका दोनों खुश हो गये और कपड़ों–मिठाइयों और पटाखों की सूची बनाने में लग गये। छत से लटकी दीपमाला वाली झालर कुछ अधिक ही जगमगाने लगी। क्योंकि इस बार की दीवाली कुछ निराली थी।

– पुणे (महाराष्ट्र)

बूझ पहेली मेरी

– मृगेन्द्र श्रीवास्तव

काले–गोरे की जंग, पूरी सेना भी संग।
अब क्या कहते लोग, पहले था चतुरंग।।

चारों ओर घुमा ले गर्दन, रजनीचर यह प्राणी।
इसी नाम से सम्बोधित हो, जो होते अज्ञानी।।

(लघुकथा)

लक्ष्मीजी की पड़ताल

– मीरा जैन

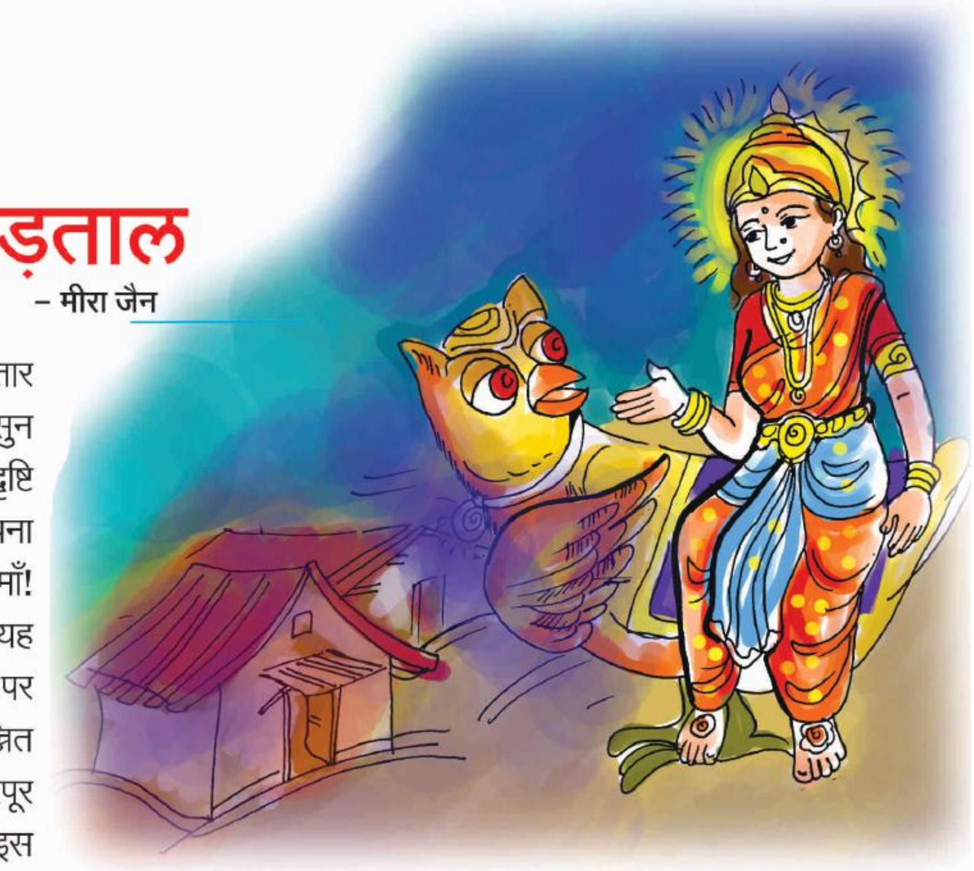

''ठहरो उल्लू! मुझे इसी घर में उतार दो।'' अचानक लक्ष्मी जी का आदेश सुन उल्लू वहीं ठिठक गया। कथित घर पर दृष्टि पड़ते ही वह विचलित हो उठा और अपना विरोध कुछ यूं प्रगट किया– ''हे देवी माँ! आपका आदेश शिरोधार्य, किन्तु देवी यह कैसा निर्णय? मैंने आपको अपनी पीठ पर बिठा एक से बढ़कर एक अति सुसज्जित हवेलियों, पूजा–अर्चना, आस्था से भरपूर घरों की सैर कराई, पर आप उन्हें छोड़ इस घर को अपना ठिकाना बनाना चाहती हैं, जहाँ न ठीक से दीप जल रहे हैं, न ही पटाखों की कोई गूंज, और तो और गृह स्वामी ने अब तक आपकी पूजा भी नहीं की है, ऐसे घर में भला आपको मैं कैसे उतार सकता हूँ?''

''उल्लू! तुम हमेशा उल्लू ही रहोगे। तुमने इस घर के बाहरी रूप का तो पूरा निरीक्षण कर लिया मगर यहाँ की आन्तरिक व्यवस्था से तुम बिल्कुल विमुख हो। परस्पर बच्चियों का वार्तालाप शायद तुमने सुना नहीं। ये बच्चियाँ इसलिये पटाखें नहीं फोड़ रही हैं, क्योंकि उनके दादाजी को अस्थमा और दादीजी को खाँसी की शिकायत है। धुएं व प्रदूषण से उनकी पीड़ा बढ़ सकती है और उनकी माँ को तेज बुखार होने के कारण पिताजी उन्हें डॉक्टर के पास लेकर गये हुए हैं। इसीलिये पूजा अब तक नहीं हो पायी है। साथ ही इस घर में तीन लड़कियों का होना इस बात का सूचक है कि इस घर के वासी कन्या हत्या जैसी खतरनाक दुष्वृति से कोसों दूर हैं। उल्लू! तुम्हें तो ज्ञात ही है, जहाँ बुजुर्गों तथा महिलाओं का सम्मान है वहीं मेरा धाम है।'' लक्ष्मी जी का स्पष्टीकरण सुन उल्लू अत्यन्त प्रसन्न हुआ। उसने अपनी गलती स्वीकारते हुए बिना एक पल गंवाये सहर्ष लक्ष्मी जी को तुरंत ही उस घर में विराजमान कर दिया।

– उज्जैन (म. प्र.)

नर से भी खतरनाक, है इसकी मादा।
बचना है तो कर लो, स्वच्छता का वादा।।

(उत्तर इसी अंक में)

स्वर्ग से आई, जटा में समाई।
भवसागर तारिणी है, सब कहते माई।।

कली, मगर नहीं खिलती है।
भूमि–भित्ति पर मिलती है।।

– शहडोल (म. प्र.)

व्यावहारिक वेदान्त दर्शन के व्याख्याता

स्वामी रामतीर्थ

संतोष सक्सेना

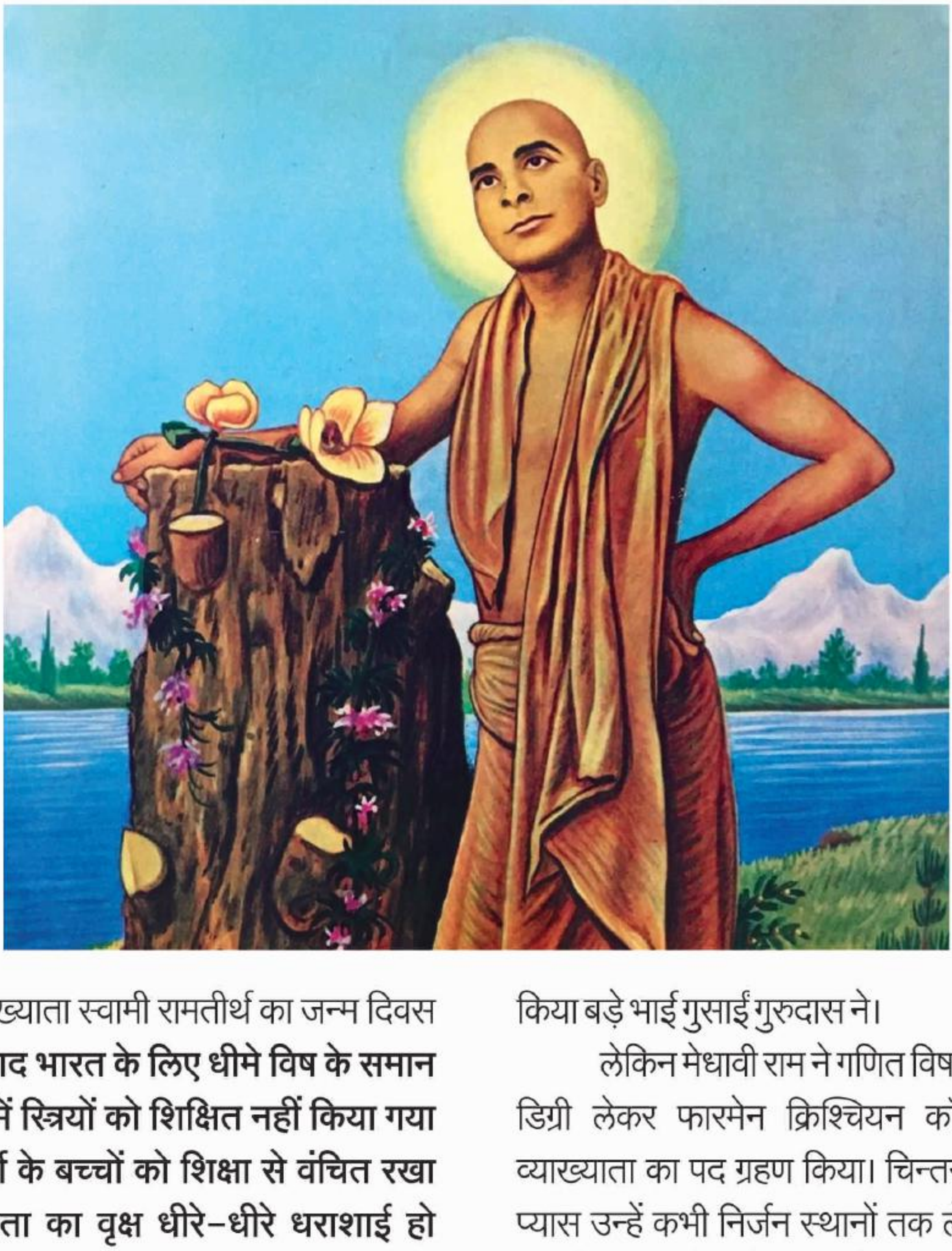

किसी ने सत्य ही कहा है अंधकार जितना गहरा होता है उसमें से फूटने वाले उजाले की किरण उतनी ही उर्जावान एवं स्थाई होती है। ज्योति पर्व दीवाली जहाँ एक ओर धन, वैभव एवं ऐश्वर्य की अधिष्ठात्री श्री एवं समृद्धि की प्रदाता लक्ष्मी जी का प्राकट्य दिवस है वहीं १९वीं शताब्दी के महान योगी संत एवं वेदान्त के व्यावहारिक व्याख्याता स्वामी रामतीर्थ का जन्म दिवस भी है। ''**जातिवाद भारत के लिए धीमे विष के समान है। यदि भारत में स्त्रियों को शिक्षित नहीं किया गया और मजदूर वर्ग के बच्चों को शिक्षा से वंचित रखा गया तो राष्ट्रीयता का वृक्ष धीरे-धीरे धराशाई हो जायेगा।**'' जैसे प्रगत क्रान्तिकारी विचारों का निरन्तर उद्घोष करने वाले स्वामी रामतीर्थ का जन्म दीप पर्व २२ अक्टूबर १८७३ को पंजाब के मुरारीवाला (गुजरांवाला) जिले में जो अब पाकिस्तान में है, हुआ था। पिता हीरानन्द गुसाईं गाँव के ही मंदिर में पुजारी थे अत: उनका तो सारा समय ठाकुरजी की सेवा के ही नाम था। दु:खद संयोग यह है कि माँ का देहावसान भी इनके जन्म के मात्र कुछ दिनों बाद ही हो गया। पालन-पोषण किया बड़े भाई गुसाईं गुरुदास ने।

लेकिन मेधावी राम ने गणित विषय में स्नातकोत्तर डिग्री लेकर फारमेन क्रिश्चियन कॉलेज लाहौर में व्याख्याता का पद ग्रहण किया। चिन्तन और मनन की प्यास उन्हें कभी निर्जन स्थानों तक ले जाती तो कभी ऋषिकेश। ऋषिकेश में गंगाजी में स्नान करते समय उन्हें अपने कई गूढ़ प्रश्नों के उत्तर प्राप्त हुए। सन् १८९७ में

लाहौर में प्रथम बार उनकी भेंट स्वामी विवेकानन्द से हुई। यह दो अद्‌भुत मेधाओं का मिलन था। इस भेंट ने राम की जीवन दिशा निश्चित की। सन् १८९९ में अपने पद से त्यागपत्र देकर वे संन्यास की ओर उन्मुख हो गये। धीरे–धीरे पंजाब में उनकी ख्याति कृष्ण भक्ति एवं अद्वैत वेदान्त व्याख्याता के रूप में फैल गई। सन् १९०१ में उन्होंने पूर्ण संन्यास धारण किया और तभी भारत के एक महाराज ने उन्हें अपने व्यय पर जापान भेजा। वहाँ से वे अमेरिका गये। स्वामी विवेकानन्द जी की सन् १८९३ में अमेरिका यात्रा के बाद किसी भारतीय विद्वान की यह दूसरी यात्रा थी। सन् १९०२ में यूनाइटेड स्टेटस ऑफ अमेरिका में अद्वैत वेदान्त पर व्याख्यान देने वाले प्रथम व्याख्याता के रूप में उन्हें प्रतिष्ठा मिली। वो दो वर्ष अमेरिका में रहे। उस बीच उन्होंने न केवल व्यावहारिक वेदान्त पर अनेक व्याख्यान दिये वरन् भारतीय युवा उच्च शिक्षा प्राप्त करें तथा अमेरिकन विश्वविद्यालयों में उनका प्रवेश हो इस दिशा में भी व्यावहारिक कार्य किया। इस हेतु उनकी पहल से भारतीय विद्यार्थियों के लिए अनेक छात्रवृत्तियाँ स्थापित हुईं। वापसी पर उनका भव्य स्वागत हुआ किन्तु सन् १९०६ में वे सब छोड़छाड़ कर गम्भीर चिंतन–मनन हेतु हिमालय की कन्दराओं में चले गये। वहाँ उन्होंने व्यावहारिक वेदान्त पर एक पुस्तक लिखना प्रारम्भ की जो अपूर्ण ही रहीं। १७ अक्टूबर सन् १९०६ को गंगाजी में ही समाधि अवस्था में उन्होंने देह त्याग दी। संयोग से यह दिन भी दीवाली का ही दिन था। गौतम बुद्ध के समान उनका भी जन्म एवं देहावसान दिवस एक ही था उनके दो निकटतम शिष्यों ने उनकी जीवनी को कलमबद्ध किया। सन् १९२४ में उनके शिष्य पूरन सिंह लिखित The Post Monk of Punjab का हिन्दी एवं अंग्रेजी में प्रकाशन हुआ और सन् १९३५ में नारायण स्वामी द्वारा उनकी जीवनी प्रकाशित की गई। उनसे प्रभावित परमहंस योगानन्द ने बाद में उनकी कविताओं का बांग्ला से अंग्रेजी में अनुवाद किया।

गौतम बुद्ध से वे काफी प्रभावित थे उनके दर्शन में उनके दर्शन का समावेश देखने को मिलता है। बुद्ध के समान उन्होंने भी अज्ञान को घोरतम पाप एवं ज्ञान को महानतम वरदान की संज्ञा दी। बहुत कम लोग जानते हैं कि उन्होंने एक सौ वर्ष पूर्व ही २१वीं शताब्दी में भारत के अप्रतिम विकास एवं विश्व मानचित्र पर छा जाने की भविष्यवाणी कर दी थी। वे कहते थे कि भारत को शिक्षित युवा वर्ग की आवश्यकता हैं न कि मिशनरीज की। **'स्त्रियों के हृदय में परमात्मा का वास है'** मानने वाले इस महान योगी की शिक्षाओं एवं दर्शन के प्रचार–प्रसार एवं अध्ययन हेतु उत्तराखण्ड में देहरादून के निकट कोटल गाँव में राजपुर में राम तीर्थ मिशन माध्यम की स्थापना की गई है।

– आगरा (उ. प्र.)

छ: अंगुल मुस्कान

– विष्णु प्रसाद चौहान

भारत की ट्रेनों में फ्लश का होना ही काफी नहीं है। उसके उपयोग के लिए ''दबाएं और जीते १ किलो सोना, ३ जापान के ट्रिप और ५०० लावा मोबाईल्स'' भी लिखा होना जरूरी है।

हर लड़के में वॉलीवुड का सुपर स्टार बनने की काबिलियत है, केवल बीच में आ जाते हैं, वो पान मसाले से रंगे हुए दाँत।

आजकल के बच्चों को सब कुछ याद रखने के लिए 'बादाम' खाने को दिया जाता है और एक वह समय भी था, जब 'दो झापड़' में सब याद आ जाता था।

– ढाबला हरदू (म. प्र.)

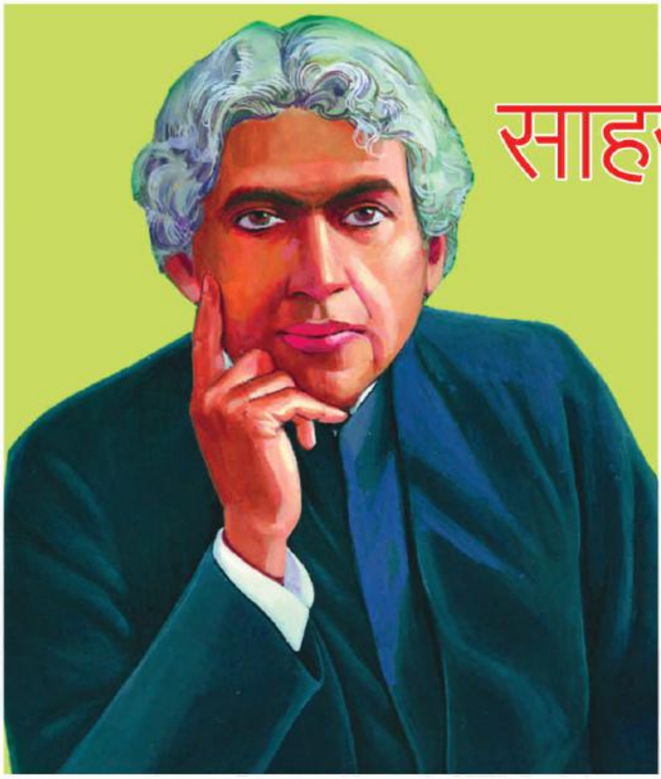

साहसी जगदीशचन्द्र बसु

– मदनगोपाल सिंघल

बंगाल के फरीदपुर के डिप्टी कलेक्टर का पुत्र था वह। उसकी देखरेख के लिये जो व्यक्ति नियुक्त किया गया था वह किसी समय में डकैत रहा था और उसके पिता के न्यायालय से ही उसे कैद का दण्ड मिला था। किन्तु जब वह वहाँ से छूटा तो सीधा ही उसके पिता के घर आया था और उसके पैर पकड़कर बैठ गया था। उसने उनसे डकैती का पेशा छोड़ देने की प्रतिज्ञा की थी और इस पर उन्होंने उसे अपने यहाँ नौकर रख लिया था।

वह व्यक्ति उस बालक को अपने कन्धे पर बैठाकर घुमाने ले जाता था और सारे ही रास्ते उसे अपने साहसी जीवन की कहानियाँ सुनाया करता था। उन्हीं कहानियों को सुन–सुनकर वह बालक स्वयं भी बड़ा साहसी बन गया था।

उसकी अवस्था पाँच वर्ष की ही थी कि उसके पिता ने उसके लिये एक टट्टू खरीद दिया और वह उसी पर बैठ कर नित्य प्रति सायंकाल को घूमने जाने लगा।

और एक दिन जब वह अपने उसी टट्टू पर सवार चला जा रहा था तो सहसा ही उसकी दृष्टि घुड़दौड़ के मैदान की ओर चली गई। दौड़ प्रारम्भ होने वाली थी, सब घोड़े पंक्ति में खड़े हो चुके थे। उस बालक को भी न जाने क्या सूझा कि अपने टट्टू को लेकर उन घोड़ों की पंक्ति के निकट ही जा खड़ा हुआ और जब घुड़दौड़ के घोड़े दौड़े तो उसने भी अपने टट्टू को उनके साथ ही दौड़ा दिया।

टट्टू दौड़ा और बालक को गिरा कर आगे भाग गया। बालक के शरीर पर कई स्थानों पर चोटें आईं। दर्शकों ने दौड़ कर उसे उठाया। किन्तु वह इससे घबराया नहीं, उस टट्टू पर बैठकर ही घर लौटा।

पिता ने उसे देखा तो वह समझ गये। उन्होंने आगे बढ़कर उसे गोदी में ले लिया।

'शाबास' उन्होंने कहा– ''बहादुर बच्चे ऐसे ही होते हैं।''

जानते हो वह वीर बालक कौन था? वह था जगदीश चंद्र बसु– जिसने बड़े होकर अपने वैज्ञानिक आविष्कारों से सारे संसार में ख्याति प्राप्त की और अपने परीक्षणों से अपनी जन्मभूमि भारत का मस्तक ऊँचा किया।

–

चित्र विचित्र का हल

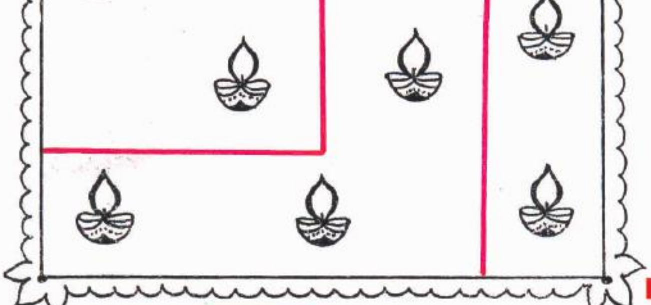

मेलजोल

– प्राजक्ता देशपाण्डे

नवंबर का महिना था, खुशनुमे मौसम में श्लोक का मन कार से लंबी सैर पर जाने का हो रहा था।

पिताजी! कितने दिनों से हम कहीं घूमने–फिरने नहीं गए पहले लॉक–डाउन था बाद में मेरी ऑन–लाइन कक्षाएं शुरू हो गई। चलिये न, कहीं लम्बी सैर पर चलते हैं।

''विचार तो अच्छा है, वैसे शनिवार को बाल–दिवस भी है।'' पिताजी ने मुस्कराते हुए कहा।

''हाँ पिताजी! हर वर्ष पूरे देश में चौदह नवंबर को हमारे पहले प्रधान मंत्री पंडित जवाहरलाल नेहरू के जन्मदिन को याद करते हुये इसे मनाया जाता है, क्योंकि वे बच्चों को बहुत प्यार करते थे। मतलब इस दिन सब बच्चों के मन का ही होना चाहिए।'' श्लोक ने चहकते हुए कहा।

''चलो इस बारे में तुम्हारी माँ की राय भी जान लेते हैं?'' पिताजी ने कहा।

तब तक माँ ने दोनों की बातचीत सुन ली थी। रसोई में काम करते हुए ही वह बोली– ''सच में, बहुत दिन हुए दीदी से मिले हुए।''

''और बड़े भैया भी का घर भी तो पास ही हैं उनसे भी मिल आयेंगे।'' पिताजी ने सुझाव दिया।

''तो फिर तय हुआ।'' माँ ने बात स्पष्ट की।

श्लोक जो हमेशा काका, बुआ के यहाँ जाने के लिए प्रसन्नता पूर्वक तैयार रहता था, यह सुनकर बिलकुल भी प्रसन्न नहीं हुआ।

शनिवार को सुबह–सुबह ही पिताजी कार की सफाई में लग गए माँ भी फटाफट घर के काम निबटा रही थी साथ ही श्लोक को भी नहा–धोकर तैयार होने के लिए भी कह रही थी।

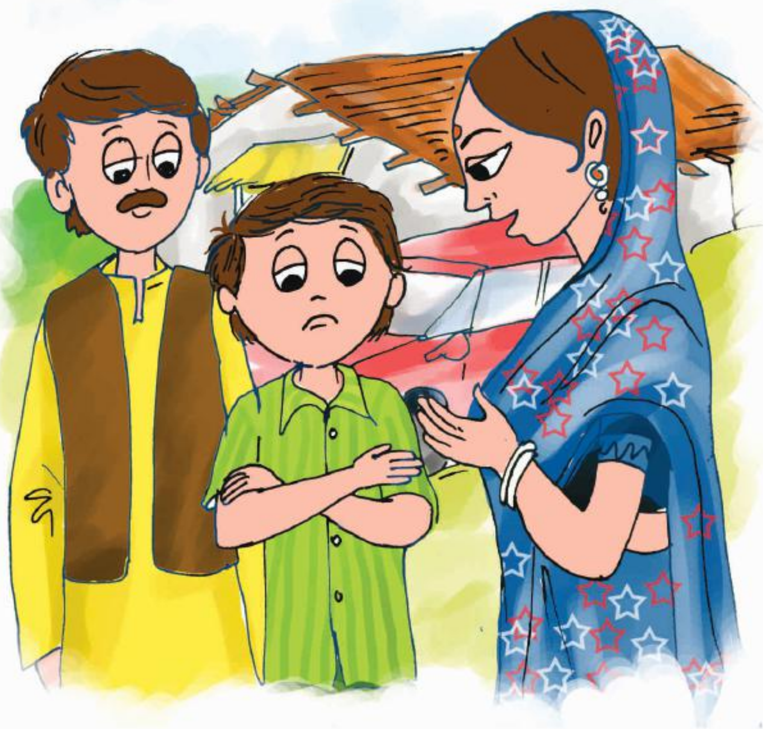

''बेटा, बालदिवस की शुभकामनाएं और यह क्या? तुम अभी तक तैयार नहीं हुए?'' अनमने श्लोक को यूं ही बैठ देख पिताजी ने पूछा।

''पिताजी! मुझे कहीं नहीं जाना'' श्लोक ने उखड़े अंदाज में जवाब दिया।

''क्यों?'' माँ ने प्रश्न किया।

''मैंने तो आप लोगों से घूमने–फिरने की बात कही थी, पर आप लोगों ने तो कुछ और ही तय कर लिया।'' श्लोक की आवाज से अप्रसन्नता स्पष्ट झलक रही थी।

''सबसे मिलकर हम घूमने निकल जाएंगे।'' पिताजी ने समझाया।

''बुआ और काका के यहाँ जा कर आप लोग तो अपनी बातों में लग जाते हो, मैं बहुत ऊब जाता हूँ।'' श्लोक ने अपनी परेशानी बताई।

''लेकिन वे लोग तो आपसे बहुत प्यार करते हैं। आपकी प्रत्येक रुचि का पूरा–पूरा ध्यान रखते हैं।'' माँ ने कहा।

''फिर भी मुझे वहाँ नहीं जाना।'' श्लोक अड़ा हुआ था।

पिताजी! समझ गए कि उनके बेटे का कुछ भी सुनने की मन नहीं है। उन्होंने कहा, ''ठीक है, जैसा तुम चाहो।''

''वैसे तुम्हें पता है मनोवैज्ञानिकों की शोध से यह

सिद्ध हुआ है कि घर–परिवार के लोगों का आपसी मेलजोल बच्चों के साथ–साथ बड़ों के लिए बहुत आवश्यक है। हमें नई–नई बातें सीखने को मिलती हैं और प्रसन्नता भी।'' माँ ने कहा।

''सच में, लॉक डाउन के समय में जब हम घरों में बंद हो गए थे तब हमारे मित्र, सगे–संबंधी ही तो थे जिनसे हम घंटों फोन के माध्यम से बातचीत कर अपना मन बहलाते थे, वरना पता नहीं क्या होता? खैर, तुम्हारा मन नहीं है तो कोई बात नहीं।'' पिताजी ने गहरी सांस लेते हुए कहा।

श्लोक को भी याद आया कि लॉक–डाउन के समय जब पिताजी का घर से ही काम (वर्क फ्रॉम होम) चल रहा था और माँ भी घर के कामों में व्यस्त रहती थीं तब काका ही तो उसके साथ कम्प्यूटर पर ऑन–लाईन बोर्ड गेम जैसे साँप–सीढ़ी, लूडो आदि खेलते थे और बुआ हर दिन रोचक किस्से और चुटकुले सुनाकर मन बहलाती। सबके साथ से वह कठिन समय सरलता से बीत गया।

अपनी बात समाप्त कर माता–पिता अपने–अपने काम में लग गए। थोड़ी देर बाद सभी कार में थे, पिताजी ने कार राजमार्ग की ओर मोड़ दी।

''पिताजी! इस ओर नहीं, उस ओर।'' श्लोक ने अचानक उन्हें रोकते हुये सड़क की ओर अंगुली दिखाते हुए कहा। जिसे देख माता–पिता भी आश्चर्य चकित थे।

''पिताजी! मैं जान चुका हूँ कि परिवार में आपसी मेलजोल रखना बहुत आवश्यक है। यह बालदिवस मैं आप सभी के साथ मनाना चाहूँगा। सबके साथ मिलकर घूमने में भी बड़ा आनन्द आएगा।'' कहते हुए श्लोक प्रसन्न था।

''तो पहले तुम्हारी मनपसंद मिठाई और नमकीन ले लें?'' बुआ के घर की ओर कार मोड़ते हुये पिताजी ने पूछा तो सभी हँस पड़े।

– इन्दौर (म. प्र.)

संस्कृति प्रश्नमाला

- ***वनवास काल में पंचवटी जाने के पूर्व श्रीराम ने किन महर्षि से आशीर्वाद ले दिव्यास्त्र प्राप्त किये?***
- ***अभिमन्यु की माता सुभद्रा किन की पुत्री थी?***
- ***डेढ़ सौ वर्ष पहले जॉन स्पीकी नाम के व्यक्ति ने मिस्र की प्रमुख नदी नील का उद्‌गम स्थल खोजा, उसने किन ग्रन्थों की सहायता से यह खोज की?***
- ***झारखण्ड के गिरीडीह जिले में एक पहाड़ी २३वें तीर्थंकर श्री पार्श्वनाथ से जुड़ी है। इसका नाम क्या है?***
- ***विवाह के समय बोले जाने वाले मंत्र ऋग्वेद में आये विवाह–सूक्त के होते हैं। इस सूक्त की रचना किस ऋषिका ने की थी?***
- ***शाहजी महाराज को धोखे से किसने बन्दी बना लिया था?***
- ***अंगों को सुन्न करने के लिए प्राचीन भारत में किस औषधि (एनेस्थेटिक) का प्रयोग किया जाता था?***
- ***जिस जर्मन पनडुब्बी से वीर सावरकर को अन्दमान से निकालने का प्रयत्न किया गया उसका कमाण्डर कौन था?***
- ***राजस्थान का कौन सा नगर महर्षि जाबालि की तपोभूमि माना जाता है?***
- ***आचार्य महाप्रज्ञ का जन्म कहाँ हुआ था?***

(उत्तर इसी अंक में)

(साभार : पाथेय कण)

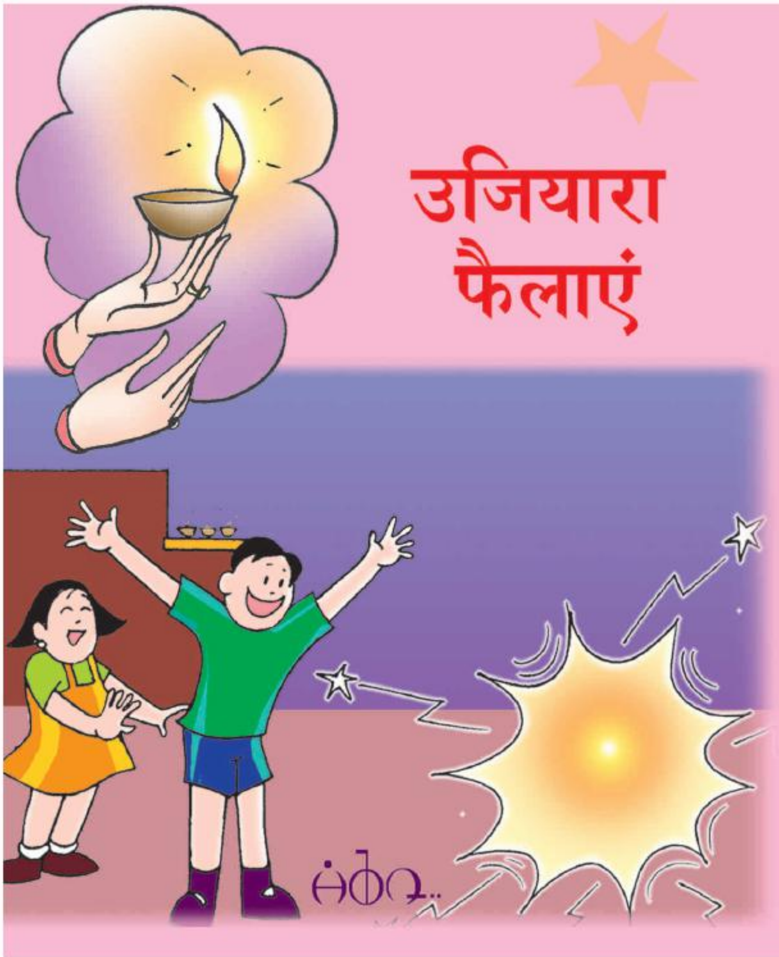

उजियारा फैलाएं

करें रोशनी हम तुम देखो,
उजियारा फैलाएं.
दीवाली है पर्व प्यार का,
हम इक दीप जलाएं.

झूठ कपट से अब हम जीतें,
जोश भला दर्शाएं.
दीप पर्व के इस प्रकाश में,
सबको गले लगाएं.

लाली,कालू,गोलू,छोटू,
मिलकर इसे मनाएं.
खूब पटाखे छोड़ें हम सब,
आओ धूम मचाएं.

तुम फुलझड़ी जलाओ..

प्यारे बच्चों बड़े बमों से,
मत करो धूम –धड़ाका.
वरना पल में आस–पास का,
बदल जाएगा खाका.

नई ड्रेस है मूड है अच्छा,
प्यारी है दीवाली.
घटी जो कोई अनहोनी तो,
होगी खाली–खाली.

सुनो दोस्तों कहती रानू ,
तुम फुलझड़ी जलाओ.
बम को छोड़ो और खुशी से,
यह त्यौहार मनाओ.

यूं मनाओ दीवाली

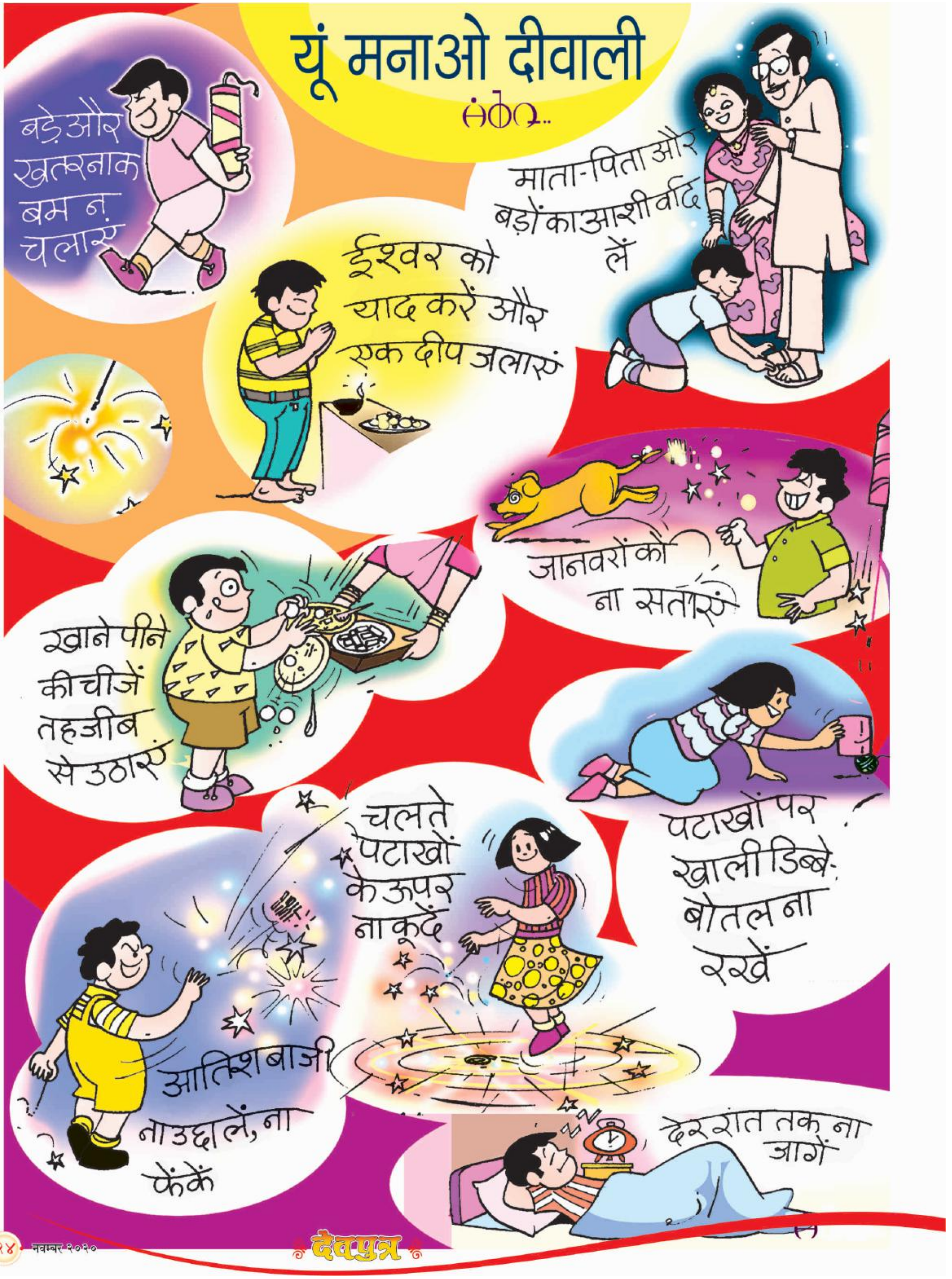
बड़े और खतरनाक बम न चलाएं
माता-पिता और बड़ों का आशीर्वाद लें
ईश्वर को याद करें और एक दीप जलाएं
जानवरों को ना सताएं
खाने पीने की चीजें तहजीब से उठाएं
पटाखों पर खाली डिब्बे-बोतल ना रखें
चलते पटाखों के ऊपर ना कूदें
आतिशबाजी ना उछालें, ना फेंकें
देर रात तक ना जागें

दीवाली कार्ड बनाओ

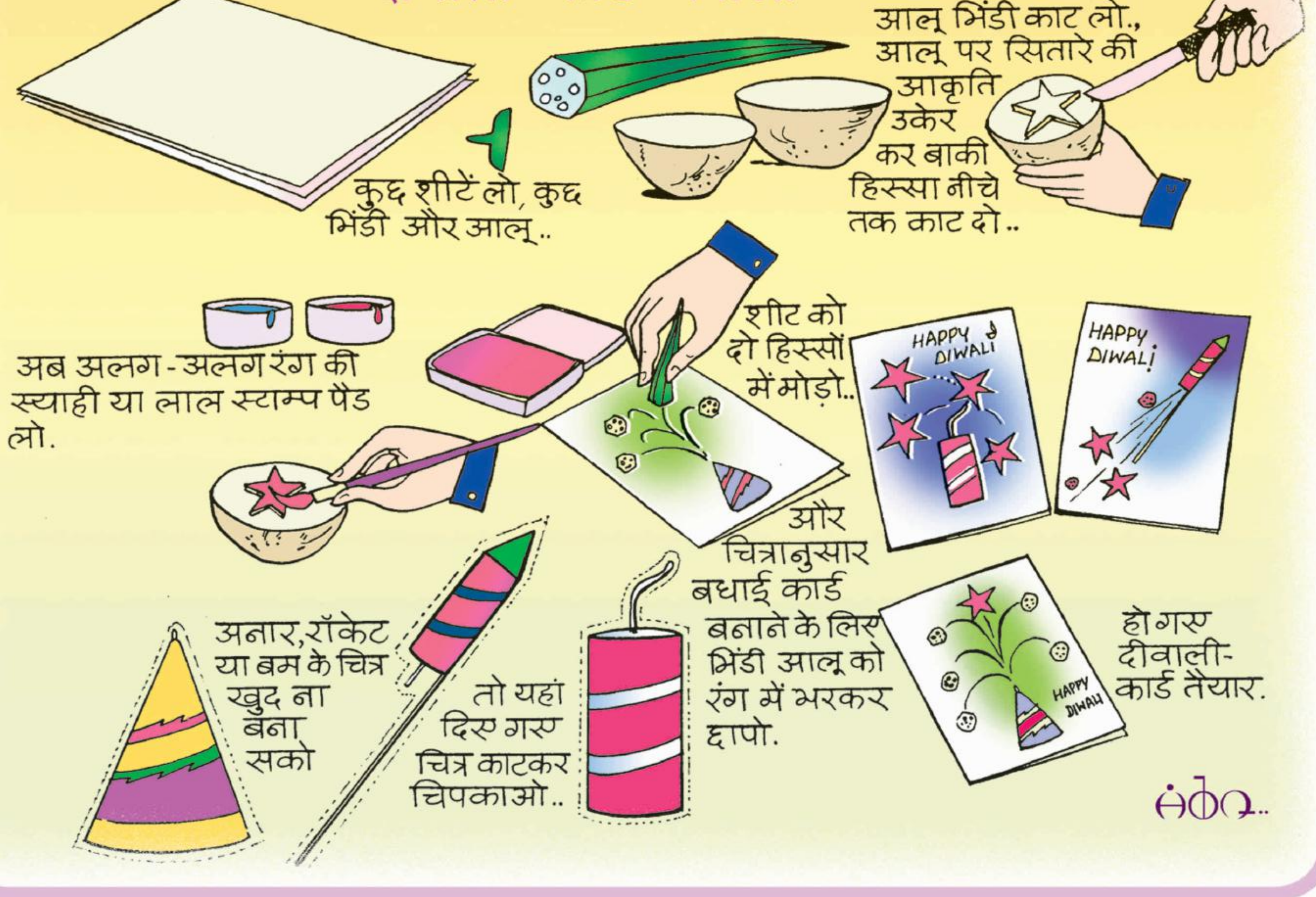

कुछ शीटें लो, कुछ भिंडी और आलू..

आलू भिंडी काट लो., आलू पर सितारे की आकृति उकेर कर बाकी हिस्सा नीचे तक काट दो..

अब अलग-अलग रंग की स्याही या लाल स्टाम्प पैड लो.

शीट को दो हिस्सों में मोड़ो..

और चित्रानुसार बधाई कार्ड बनाने के लिए भिंडी आलू को रंग में भरकर छापो.

अनार, रॉकेट या बम के चित्र खुद ना बना सको तो यहां दिए गए चित्र काटकर चिपकाओ..

हो गए दीवाली-कार्ड तैयार.

HAPPY DIWALI
HAPPY DIWALI!
HAPPY DIWALI

जानो

पर्यावरण और वन मंत्रालय, भारत सरकार ने अक्टूबर 1999 से उन पटाखों के बनाने, बेचने और जलाने पर रोक लगा दी है जिनकी आवाज 125 डेसीबल से ज्यादा हो.

सर्वे बताते हैं कि 95 प्रतिशत पटाखे शोर और प्रदूषण के विरुद्ध बने नियमों को तोड़ते हैं.

ढूंढ़ो

नीचे दिए गए दो एक से चित्रों में 8 अंतर छिपे हैं, उन्हें ढूंढो.

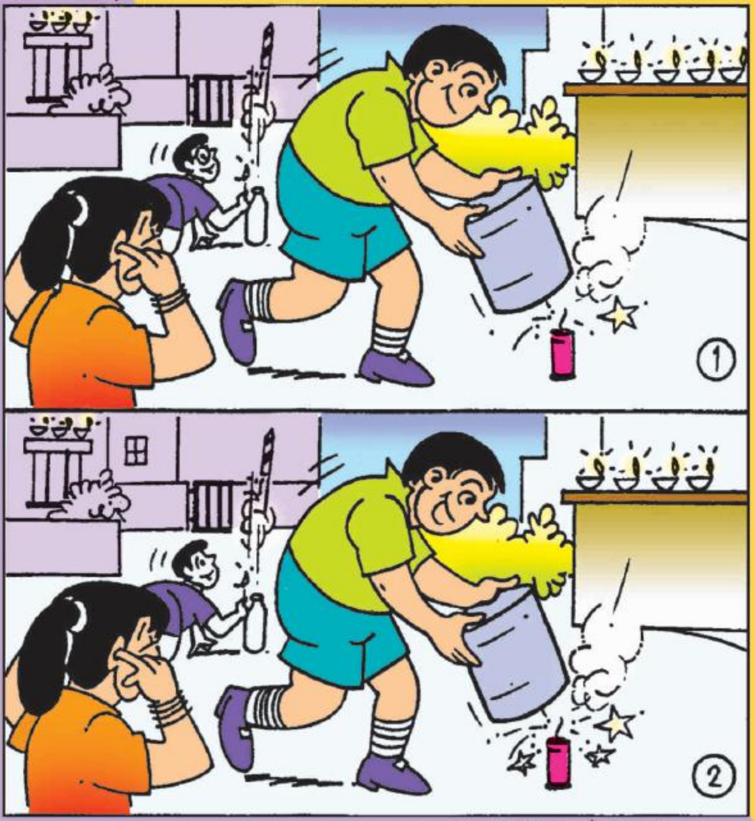

अंतर हैं- 1.लड़के का मुंह खुला 2.उसके मौजे 3.पीछे के मकान की खिड़की 4.लड़की की चोटी 5.उसकी चूड़ियां 6. पीछे रॉकेट चला रहे लड़के का चश्मा 7.बम की चिंगारियां ज्यादा 8.एक दीपक कम.

बताओ

टुकटुक को उस जगह पहुंचने का रास्ता बताओ जहां उसके पापा ने उसके पटाखे रखे हैं.

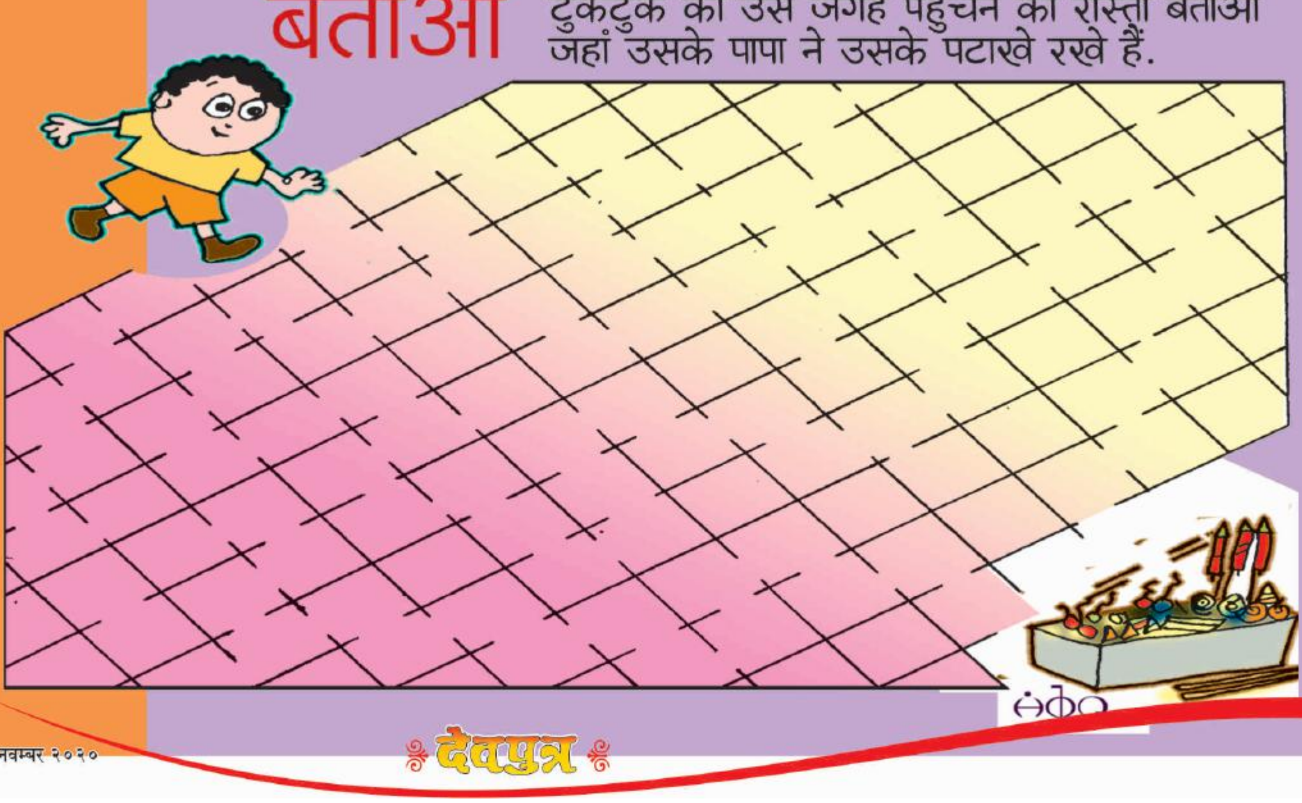

फूटे बम

फूलझड़ी,
रही खड़ी.
फूटे बम,
धम धम.

सभी अनार,
थे बीमार.
फूटे बम,
धम धम.

नहीं फिरी,
कोई चकरी.
फूटे बम,
धम धम.

सब रॉकेट,
हो गए लेट.
फूटे बम,
धम धम.

बड़े चलाते,
तकते हम.
फूटे बम,
धम धम.

थोड़ा मुस्कुरा लो

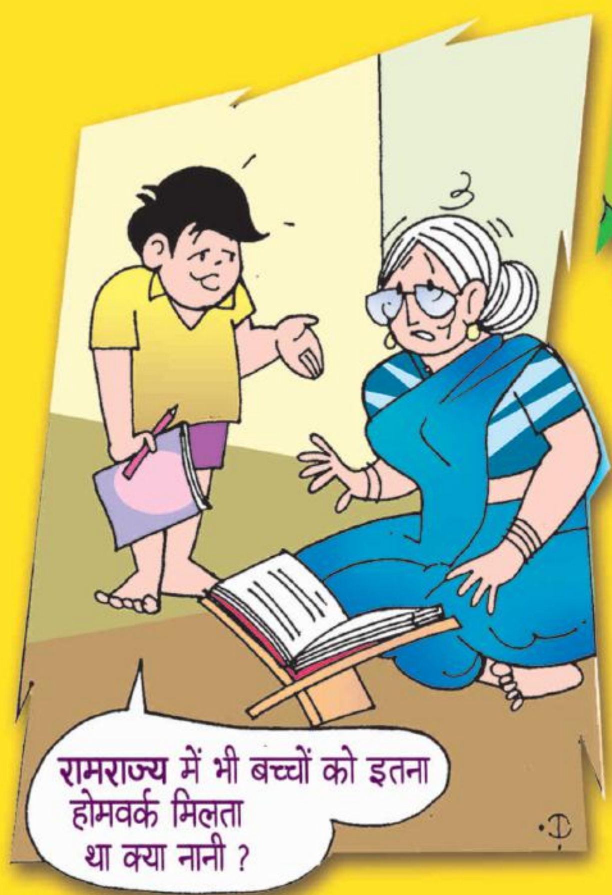
रामराज्य में भी बच्चों को इतना होमवर्क मिलता था क्या नानी ?

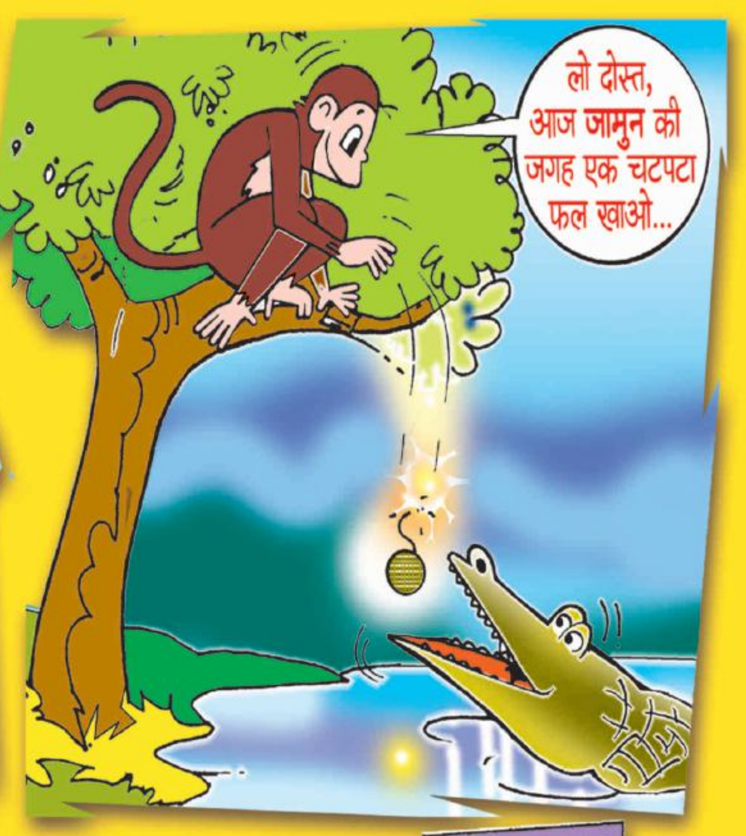
लो दोस्त, आज जामुन की जगह एक चटपटा फल खाओ...

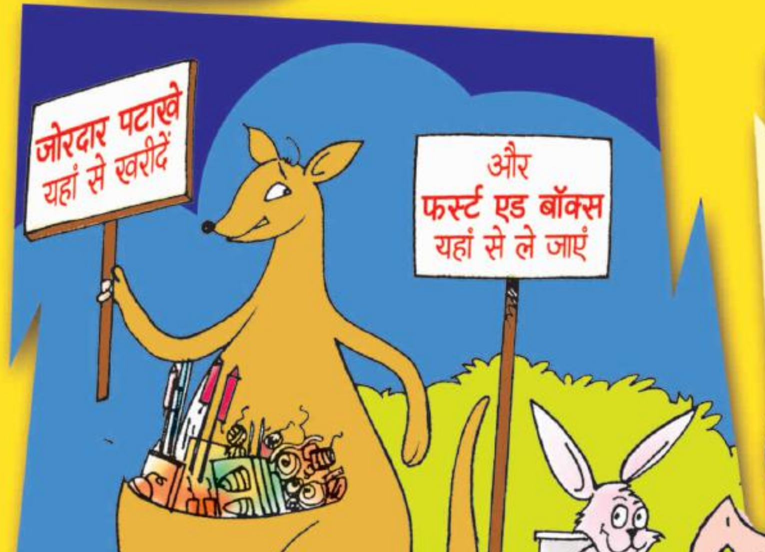
जोरदार पटाखे यहां से खरीदें
और फर्स्ट एड बॉक्स यहां से ले जाएं

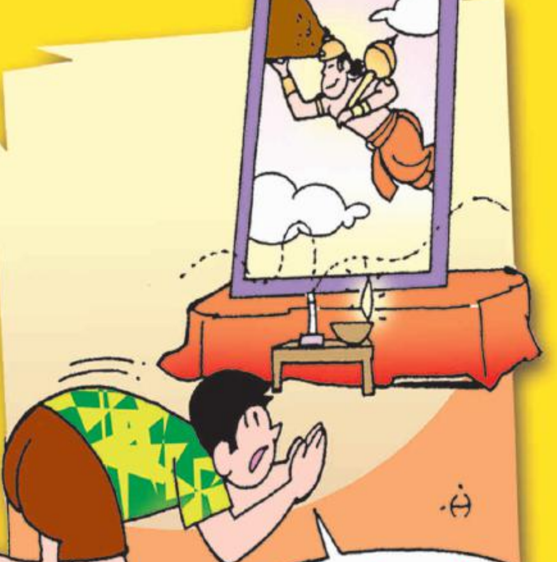
हे बजरंग बली, मुझे बस्ता उठाने की शक्ति दो...

कैसी दिवाली!

चित्रकथा: देवांशु वत्स

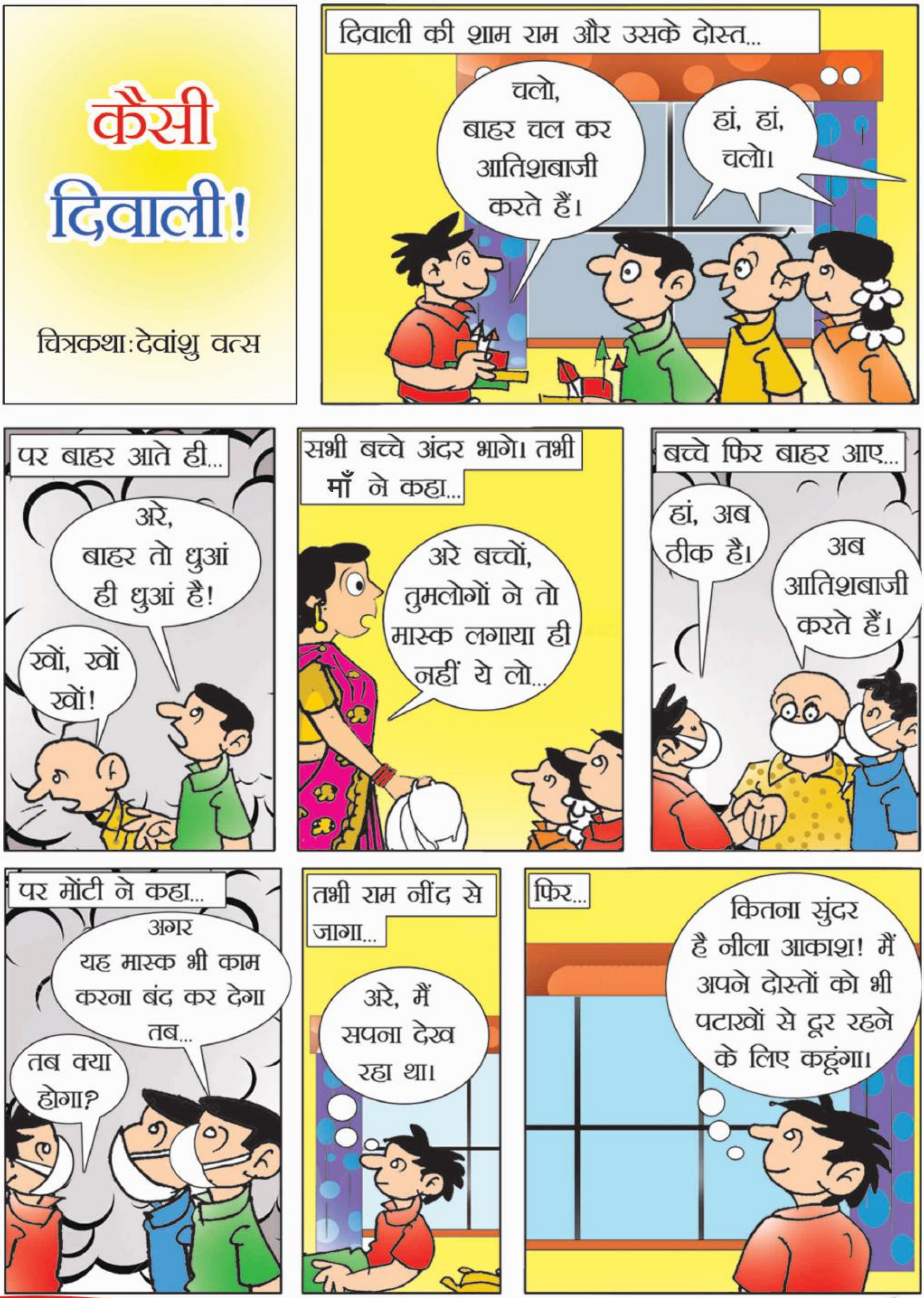
दिवाली की शाम राम और उसके दोस्त...
चलो, बाहर चल कर आतिशबाजी करते हैं।
हां, हां, चलो।
पर बाहर आते ही...
अरे, बाहर तो धुआं ही धुआं है!
खों, खों खों!
सभी बच्चे अंदर भागे। तभी माँ ने कहा...
अरे बच्चों, तुमलोगों ने तो मास्क लगाया ही नहीं ये लो...
बच्चे फिर बाहर आए...
हां, अब ठीक है।
अब आतिशबाजी करते हैं।
पर मोंटी ने कहा...
अगर यह मास्क भी काम करना बंद कर देगा तब...
तब क्या होगा?
तभी राम नींद से जागा...
अरे, मैं सपना देख रहा था।
फिर...
कितना सुंदर है नीला आकाश! मैं अपने दोस्तों को भी पटाखों से दूर रहने के लिए कहूंगा।

बाल दिवस पर विशेष आलेख

प्रेरणादायी बालक

– ललित नारायण उपाध्याय

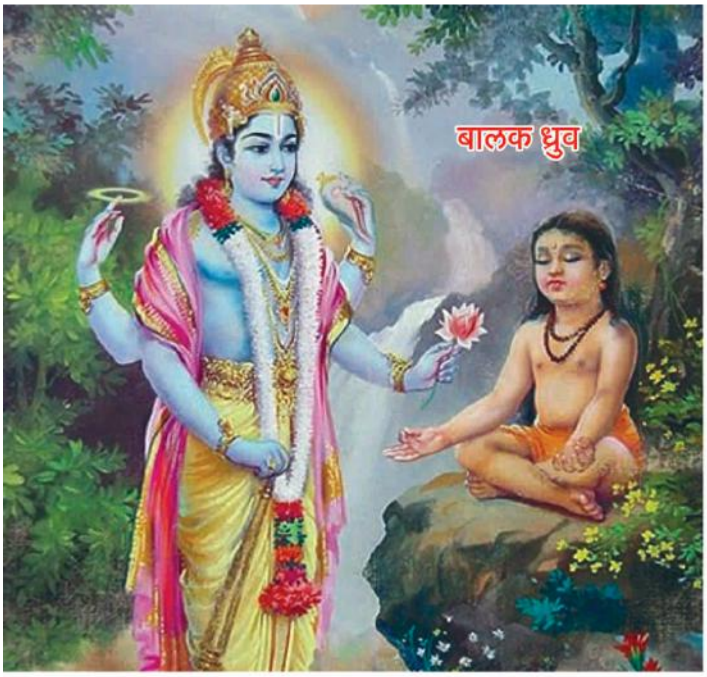

हमारे देश में अनेक ऐसे महापुरुष हुए हैं जिन्होंने अपने बचपन में ही ऐसे कार्य किए जो हमारे लिए प्रेरणा का विषय बने। उनका बाल्यकाल ही बता रहा था कि आगे जाकर वे होनहार बनने वाले हैं। यहाँ हम ऐसे कुछ बच्चों का उल्लेख कर रहे हैं, जिनका बाल या किशोर अवस्था में ही संसार में नाम हो गया और वे प्रेरणा की विषय वस्तु बन गये। उदाहरणार्थ भक्त ध्रुव का नाम ऐसे बालकों में सर्वप्रथम स्मरण आता है। ध्रुव के पिता का नाम राजा उत्तानपाद था। उनकी माता का नाम सुनीति था। उनकी दूसरी सौतेली माता का नाम सुरुचि था। रानी सुरुचि का पुत्र उत्तम राजा को अधिक प्रिय था, ध्रुव को वे उतना नहीं चाहते थे।

राजा उत्तानपाद एक दिन राज्य सिंहासन पर बैठे थे। उनकी गोदी में ध्रुव का सौतेला भाई बैठा था। ध्रुव ने भी राजा की गोदी में बैठने की जिद की। रानी सुरुचि ने उसे रोक दिया और कहा– ''राजा की गोद मेरे ही पुत्र के योग्य है। ध्रुव यदि तुम उस पर बैठना चाहते हो तो इतने पुण्य संचित करो कि मेरी कोख से जन्म ले सको, तभी तुम उसके योग्य हो सकते हो।'' बालक ध्रुव बड़ा ही स्वाभिमानी था। उसे रानी की दुत्कार ने झकझोर दिया।

बालक ध्रुव ने प्रतिज्ञा की– मैं दूसरों के द्वारा दिए गए स्थान को ग्रहण नहीं करूँगा। मैं अपने परिश्रम और तपस्या से अपना स्थान स्वयं बनाऊँगा तथा ऐसा स्थान प्राप्त करूँगा जो किसी और ने आज तक नहीं किया होगा। ध्रुव की माता ने उसे 'ॐ नमो भगवते वासुदेवाय' का मंत्र दिया। बालक ध्रुव ने घोर तपस्या की और अंत में भगवान विष्णु ने उसे दर्शन दिए और वर मांगने को कहा। ध्रुव ने कहा– ''हे ईश्वर! मुझे ऐसा पद दीजिए जो सब पदों से ऊँचा हो। अपना अलग महत्व रखता हो तथा जिस पद पर आज तक कोई विराजमान न हुआ हो। विष्णु ने उसे सब तारों के बीच सर्वोच्च स्थान दिया। जीवनोपरांत वह ध्रुव का तारा बनकर अमर हुआ। ध्रुव तारे को सब तारों में सबसे ऊँचा स्थान प्राप्त है।

वीर पुत्र भरत का स्थान भी प्रेरणादायक बालकों में सबसे बड़ा महत्व रखता है। भरत के पिता नाम राजा दुष्यंत और माता का नाम शकुन्तला था। भरत बचपन से ही सिंहों के साथ खेला करते थे। कहते हैं कि सिंह और सिंह के शावक ही मित्र थे। वे सिंह शावकों के दाँत गिना करते थे। जो सिंहों के साथ खेलता हो वह कितना वीर और निर्भय होगा, इसकी कल्पना आप आसानी से कर सकते हैं। भरत के कारण ही हमारे देश का नाम भारतवर्ष या भरत का देश पड़ा है। भक्त प्रह्लाद की कथा भी बड़ी रोचक है। प्रह्लाद के पिता का नाम हिरण्यकश्यपु था। वह एक अहंकारी राजा था। वह नास्तिक था और अपने आपको ही ईश्वर मानता था। उसने तपस्या कर ऐसा वरदान प्राप्त कर लिया था कि वह अजेय व अमर हो जाएगा तथा उसकी मृत्यु कभी भी और कहीं भी नहीं होगी। ईश्वर ने उसे वरदान दिया था कि वह न दिन में न रात में, न घर में, न बाहर मरेगा। न मनुष्य के हाथों न देवताओं के हाथों मारा जाएगा। इस प्रकार वह अमर होना चाहता था।

प्रह्लाद की ईश्वर में अटूट भक्ति थी। उसने अपने पिता को अहंकार छोड़कर ईश्वर की भक्ति करने को कहा, परन्तु हिरण्यकश्यपु ने अपने पुत्र की एक भी बात नहीं मानी। अंत में ईश्वर ने 'नृसिंह अवतार' लेकर संध्या के समय देहरी के ऊपर नृसिंह का अनोखा रूप लेकर हिरण्यश्यपु का वध किया तथा प्रजा को उसके अत्याचारों से मुक्ति दिलाई।

एक बार बालक सिद्धार्थ उपवन में टहल रहे थे। उनके भाई ने उसी समय एक हंस का शिकार किया था। तीर से बिंधा खून से लथपथ हंस संयोगवश सिद्धार्थ के पास आकर गिरा। सिद्धार्थ ने उसकी सेवा सुश्रुषा की तथा उसके प्राण बचाए। उसी समय देवदत्त ने आकर सिद्धार्थ से अपने द्वारा मारे गए हंस की मांग की। सिद्धार्थ ने वह हंस देने से मना कर दिया। अंत में मामला राजसभा में पहुँचा। तब राजा शुद्धोधन ने सारा विवाद सुनकर निर्णय दिया कि मारने वाले से बचाने वाला बड़ा होता है। सिद्धार्थ ने हंस को बचाया है अत: इस पक्षी पर सिद्धार्थ का पहला स्वामित्व है। इस प्रकार दया, धर्म और न्याय की शिक्षा सिद्धार्थ के बचपन से ही हमें मिलती है। सिद्धार्थ आगे जाकर गौतम बुद्ध के नाम से प्रसिद्ध हुए। उन्होंने प्राणी मात्र के प्रति दयावान होने का भी संदेश अपने बचपन में ही दिया था। जो आज भी हमारा मार्गदर्शन कर रहा है।

गुरुनानक अपने बचपन से ही बड़ा सुंदर आध्यात्मिक भाषण देने लगे थे। उनकी वाणी इतनी मीठी थी कि लोग उन्हें मंत्रमुग्ध होकर सुना करते थे।

शिवाजी बचपन से ही शूरवीर और निर्भय थे। उसी प्रकार झाँसी की रानी के नाम से विख्यात लक्ष्मीबाई ने अपने बचपन से ही सारी शस्त्र–विद्या सीख ली थी। बालक दयानंद ने अपने बचपन में ही छुआछूत के विरोध में सोचना प्रारंभ कर दिया था। इसी प्रकार गांधीजी ने भी बचपन में ही छूआछूत के निवारण के बारे में सोचना प्रारंभ कर दिया था। समय का पालन करना उन्होंने इसी आयु में सीख लिया था। वे पहली घण्टी बजने के पूर्व शाला पहुँच जाते थे और अंतिम घंटी के बजने तक शाला में ही रहते थे। अपने मित्र को आम न खिला पाने के कारण वे इतने दुखी हो गए थे कि उन्होंने सारे मौसम फिर आम नहीं खाए जबकि आम उन्हें सर्वाधिक प्रिय थे। राजा हरिश्चन्द्र के जीवन चरित्र से उन्होंने बचपन से ही सत्य बोलने की प्रतिज्ञा की थी।

बालक सिद्धार्थ

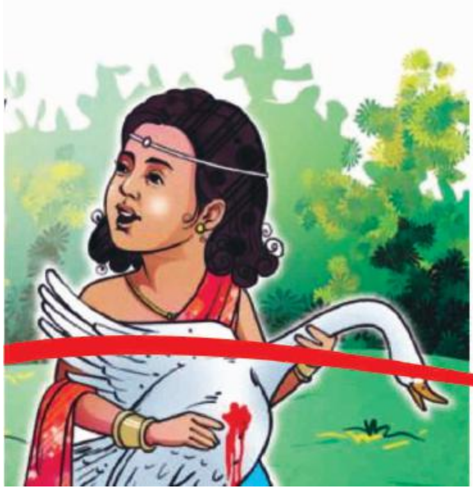

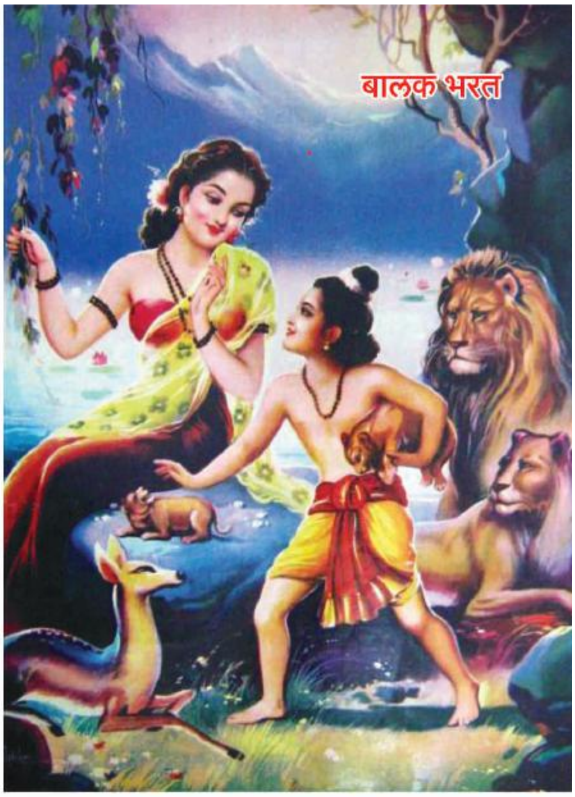

बालक भरत

महादेवी वर्मा, सुभद्रा कुमारी चौहान अपनी ६–७ वर्ष की आयु से ही बाल–कविताएं करने लगी थीं और अपने बचपन में ही कवियत्री होने का संकेत दे चुकी थीं। बारह वर्ष की आयु में जयशंकर प्रसाद को हिमालय देखने का सौभाग्य मिला और वहीं उनका कवित्व हृदय से फूट पड़ा। उन्होंने बहुत कम आयु में कविता लिखना प्रारंभ कर दिया था। प्रसिद्ध कविगणों में निराला जी तथा माखनलाल चतुर्वेदी तथा सुमित्रानंदन पंत ने भी बचपन से ही कविताएं लिखकर अपने से बड़ों को आश्चर्यचकित कर दिया था। महान देशभक्त भगतसिंह बचपन से ही निर्भय थे तो वल्लभभाई पटेल, सुभाषचन्द्र बोस, जयप्रकाश नारायण, केशव बलिराम हेडगेवार आदि बचपन से ही यह ज्ञापित कर चुके थे कि आगे जाकर बड़े व्यक्ति बनेंगे। प्राचीनकाल में एकलव्य ने गुरु को अपना अंगूठा दान किया और गुरुभक्ति का आदर्श स्थापित कर नाम कमाया। प्रेरणा किसी भी व्यक्ति की थाती या धरोहर नहीं, वह हमें छोटे से बच्चे से भी मिल सकती है और प्रतिभा अपने पंख बचपन से ही फैलाने लगती है।

– खण्डवा (म. प्र.)

कहानी

भँवर ने फँसाया

– रजनीकांत शुक्ला

बहती हुई नदी और उसके किनारे पर बसा हुआ एक छोटा सा गाँव। हमारे देश में ही क्या दुनिया के अनेक देशों में ऐसा दृश्य हमें दिख जाएगा।

हमारे पूर्वजों ने जंगलों को छोड़कर जब स्थाई निवास बनाने की सोची होगी तो उन्होंने अपनी आवश्यकता के अनुसार ऐसे स्थानों को चुना होगा जहाँ उन्हें सरलता से पानी मिल सके। फिर उन्होंने पानी के किनारे अपने आवास बनाए होंगे। इसलिए हमें बहती जल धाराओं के किनारे लोगों की बस्तियाँ अधिक मिलती हैं।

हमारी आज की सच्ची कहानी भी एक ऐसे ही गाँव की है जो एक नदी के किनारे बसा हुआ था। नदी महाराष्ट्र राज्य के वाशिम जिले में होकर बहती है। इसी नदी के किनारे बसा हुआ है एक गाँव जिसका नाम है असोला।

असोला गाँव बहुत अधिक बड़ा नहीं है। इसमें मुश्किल से दो ढाई सौ घर थे और पाँच सात सौ लोगों की कुछ जनसंख्या थी। जिला मुख्यालय वाशिम से गाँव की दूरी केवल सात किलोमीटर थी।

वह अगस्त महीने की इक्कीस तारीख थी और वर्ष २००१ का था। जब उसी गाँव का एक बारह वर्ष का बालक धनंजय रामाराव इंगोले नहाने के लिये नदी की ओर जा रहा था। रास्ते में उसे गाँव की ही पाँच महिलाएँ नदी की ओर जाती हुई दिखाई दी।

जिनमें उसके घर परिवार और पास पड़ोस की महिलाएँ थीं। वह छोटा सा गाँव था। सभी एक–दूसरे से परिचित थे। सभी में पारिवारिक संबंध थे। इसलिए उन्होंने उसे जाते देखा तो एक महिला ने पूछ लिया–''धनंजय, कहाँ जा रहे हो?''

धनंजय ने उत्तर दिया– ''नदी की ओर जा रहा हूँ।''

''अच्छा तो चलो। हम लोग भी नदी की ओर ही चल रहे हैं।'' उन्होंने हँसते हुए कहा।

फिर वे सब एक साथ बातें करते–करते नदी के किनारे जा पहुँचे। अगस्त का महीना था। नदी में पानी भी भरपूर था। मगर उससे क्यो वे महिलाएँ तो प्राय: नदी पर आती ही रहती थीं। कभी कपड़े धोने तो कभी नहाने के लिए उनका आना–जाना नदी पर लगा ही रहता था।

आज भी वे वैसे ही आईं थीं। कुछ को कपड़े धोने थे और फिर सभी को नहा कर वापस चले जाना था। उन्होंने तय किया कि पहले कपड़ों को धो लेते हैं फिर सभी एक साथ नहाएँगे।

इस तरह वे बातें करते हुए कपड़े धोने में लग गईं। धनंजय को भी कोई काम नहीं था इसलिए उसने सोचा कि इन सबके ही वह नहाकर वापस जाएगा। बस यही सोचकर वह वहाँ नदी के किनारे बैठकर प्रतीक्षा करने लगा।

कपड़े धोने के बाद वे सबकी सब एक साथ नहाने के लिये नदी में उतरीं। वे प्राय: नदी की ओर आतीं और ऐसे ही कपड़े धोकर नहाकर पुन: लौट जातीं थीं। यह एक सामान्य बात थी। पर उन्हें यह नहीं पता था कि आज का उनका यह

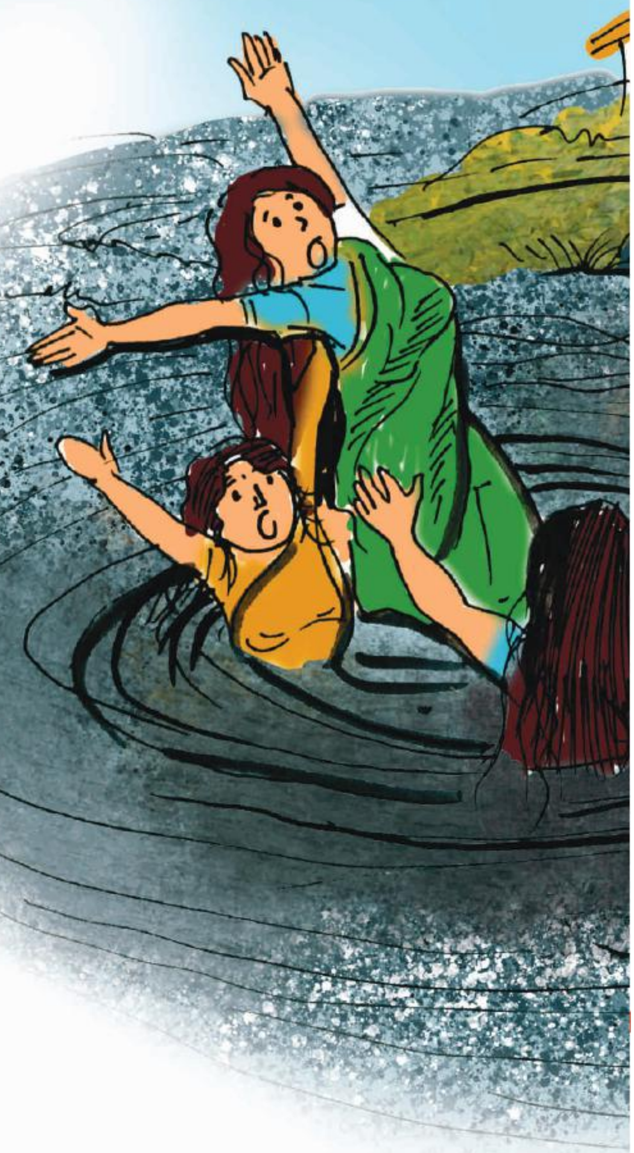

नदी पर आना वे जीवन में कभी भी नहीं भुला पाएँगी।

हुआ यह कि वे उस समय नदी में किनारे पास–पास एक ही जगह पर नहा रहीं थीं किन्तु दुर्भाग्य से नदी के पानी में बनती हुई एक भँवर उनकी ओर आ निकली। जिसने एक–एक करके उन सबको अपनी चपेट में ले लिया। वे सब अपने पैरों पर स्थिर न रह पाईं। भँवर के चक्र में लड़खड़ाती हुईं वे पानी में गिर गईं।

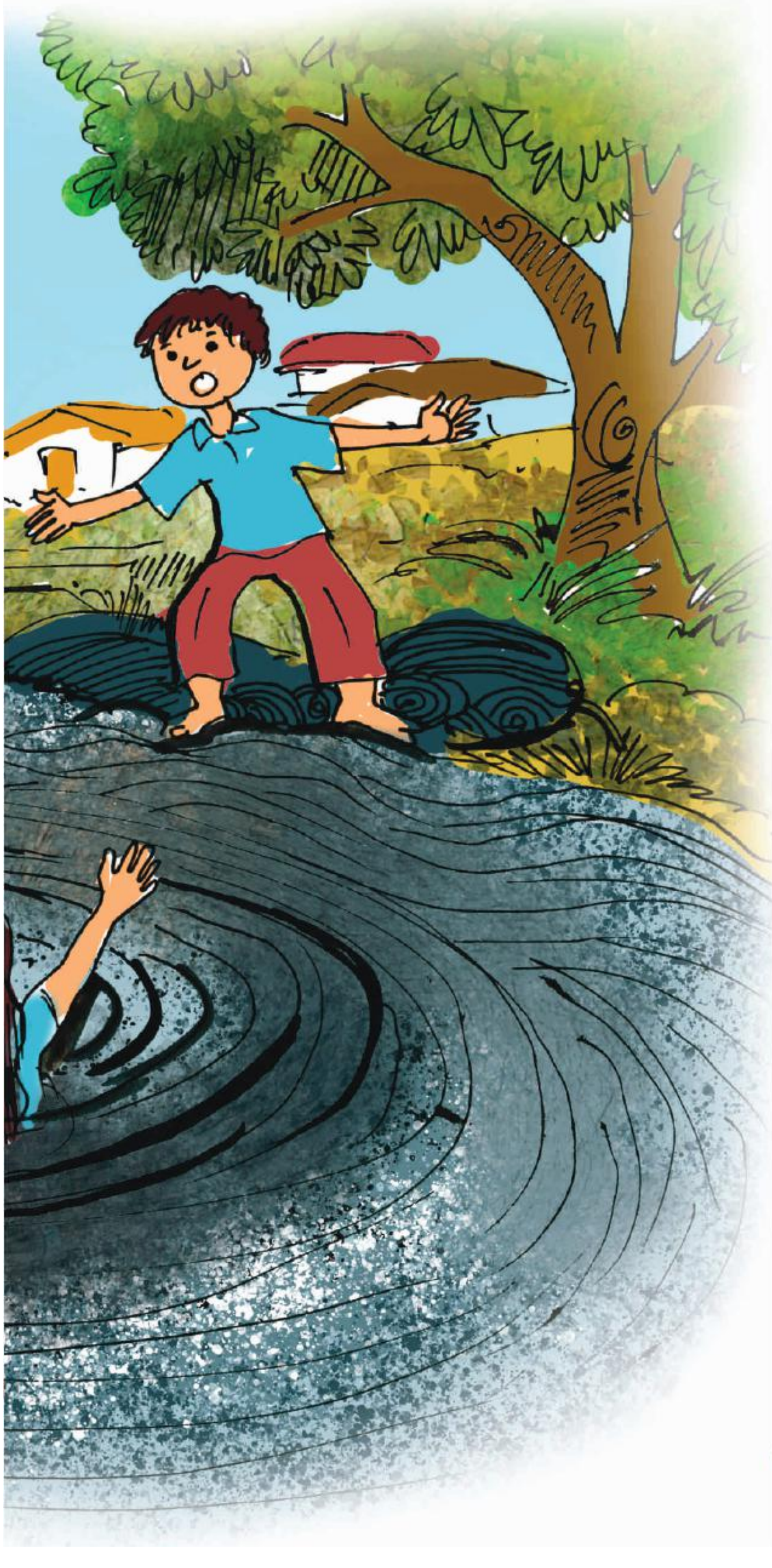

यकायक आई इस मुसीबत के लिये वे तैयार नहीं थीं। पहले तो उन्होंने सँभलने का प्रयत्न किया किन्तु वे सँभल न सकीं और लहरों के चक्र में डूबने लगीं। कोई चारा न देख उन्होंने बचने के लिए चिल्लाना शुरू किया। किनारे पर उपस्थित धनंजय ने जब उनकी चीखें सुनी तो तुरन्त पानी में कूद गया।

वह तैरता हुआ शीघ्र ही उनके पास जा पहुँचा। उसने देखा कि सचमुच ही एक भँवर की गोल–गोल घूमती लहरों में वे सब फँस चुकी हैं। उनके अपने बचने के सभी प्रयास निष्फल सिद्ध हो रहे थे। धनंजय ने बड़ी ही समझदारी से खुद को बचाते हुए उन्हें एक–एक पर उस भँवर के चक्र से बाहर निकाला और सुरक्षित किनारे तक पहुँचाया।

लेकिन इस प्रयास में वह पूरी तरह सफल नहीं हो सका क्योंकि जब वह चार महिलाओं को किनारे ले जाकर छोड़ आया तो पाँचवीं महिला संगीता इंगोले को बचाने के लिए चल दिया।

भँवर इस समय तक किनारे से दूर जा चुकी थी और जब धनंजय उसके पास पहुँचा तो उसमें संगीता उसको कहीं नहीं दिखाई दे रही थी। उसने काफी प्रयास किया किन्तु उसे नदी के पानी में संगीता की कोई भी झलक न मिल सकी।

थक हारकर वह निराश हो नदी के बाहर आ गया। वे चारों महिलाएँ जिन्हें धनंजय ने बचाया था किनारे पर डरी सहमी खड़ीं थीं। एकदम से आ पड़ी इस मुसीबत ने उनकी बोलती बंद कर दी थी। धनंजय उनके लिए मानो देवदूत की तरह आया था। मगर वह वहाँ नहीं होता तो वे शायद जीवित न बच पातीं।

उन्होंने सच्चे मन से धनंजय को धन्यवाद कहा। उन नन्हे देवदूत ने उनकी प्राणरक्षा की थी। धनंजय के इस साहस के लिए उसका नाम वीरता पुरस्कार के लिए प्रस्तावित किया गया। उसे वर्ष २००२ के बाल वीरता पुरस्कार के लिए चुन लिया गया। उसे अगले गणतंत्र दिवस के अवसर पर देश की राजधानी नई दिल्ली में बुलाया गया। जहाँ पर देश के तत्कालीन प्रधानमंत्री श्री अटल बिहारी वाजपेयी जी ने उसे राष्ट्रीय बाल वीरता पुरस्कार से सम्मानित किया।

– गाजियाबाद (उ. प्र.)

देश विशेष

हमारे देश के कुछ रोचक भौगोलिक तथ्य

आलेख
श्रीधर बर्वे

(अमरनाथ गुफा)

१) सबसे लम्बी गुफा– अमरनाथ गुफा। ५० मीटर चौड़ी/२५ मीटर ऊँची। स्थिति–समुद्र सतह से ३८०० मीटर ऊँचाई।

२) सबसे लम्बी नहर– इंदिरा गांधी नहर। लंबाई ६८२ किलोमीटर/ ४६७ मुख्य नहरें, २१५ उप नहरें।

३) सबसे गरम स्थान– बिरयावाली (बीकानेर)। ५६ डिग्री से. ५ जून १९९१ को अंकित।

४) सबसे ठंडा स्थान– द्रास (लद्दाख)। २५ दिसम्बर १९१० को अंकित।

५) सर्वोच्च शिखर– के–२ (जम्मू–कश्मीर) ८६११ मीटर ऊँचाई।

६) सबसे ऊँचा बांध– भाखड़ा (सतलज नदी पर)। २२६ मीटर।

७) सबसे बड़ा मरुस्थल– थार (राजस्थान) क्षेत्रफल २,५९,००० वर्ग किलोमीटर।

८) सबसे लम्बी नदी (भारत में बहने वाली) गंगा नदी। २५१० किलोमीटर – कैंचमेंट क्षेत्र ८,६१,४०० वर्ग किलोमीटर।

९) सबसे आर्द्र स्थान– मॉसिनराम (मेघालय)। औसत वार्षिक वर्षा ११,८७३ मिली मीटर।

१०) सबसे बड़ा नदी द्वीप– माजूली (असम)। ब्रह्मपुत्र नदी का द्वीप– क्षेत्रफल १,५०० वर्ग कि. मी.।

११) सबसे लम्बे समुद्र तट का राज्य– गुजरात। १,६०० कि. मी. लंबा तट। भारत के कुल सागर तट की लम्बाई ६,१०० कि. मी. है।

१२) सबसे ऊँचा जल प्रपात– जोग प्रपात (कर्नाटक) शारावती नदी का प्रपात– २५३ मीटर।

१३) सबसे बड़ा पठार– दक्षिण भारत पठार। क्षेत्रफल १० लाख वर्ग किलोमीटर। भारत के कुल क्षेत्रफल का ३० प्रतिशत भूभाग।

१४) समुद्र स्थित भारत का सबसे बड़ा द्वीप– मध्य अण्डमान द्वीप– बंगाल की खाड़ी स्थित। क्षेत्रफल १,५२० वर्ग कि. मी.।

१५) सबसे लंबा बांध– महानदी पर हीरा कुण्ड बांध। २०.४ कि. मी. लम्बा।

(जोग प्रपात)

(चिलिका झील)

१६) सबसे लंबा बीच (समुद्र का आकर्षक रेतीला मैदानी तट) मैरिना बीच चैन्नई (तमिलनाडु)। १३ कि. मी. लंबा। विश्व में इसका दूसरा क्रम है।

१७) भारत का सक्रिय ज्वालामुखी– बैरन द्वीप यह द्वीप अंडमान निकोबार द्वीप समूह में है। इसकी ऊँचाई ३०० मीटर है। पिछली बार १० अप्रेल १९९१ में सक्रिय हुआ था।

१८) सबसे दक्षिणी स्थल– इंदिरा पॉइंट। निकोबार द्वीप समूह में स्थित।

१९) सबसे लम्बी बोगदा (सुरंग)– गोवा मुंबई को जोड़ने वाले कोंकण रेलमार्ग पर खारबुदे बोगदा ६.४५ कि. मी. लंबा है।

२०) नदी बंदरगाह– समुद्र (बंगाल की खाड़ी) से २३२ किलोमीटर दूर कोलकाता भारत का एक मात्र नदीय बंदरगाह है। हुगली नदी कोलकाता को समुद्र से जोड़ती है।

२१) समुद्र सतह से ३,५०० मीटर से ५,००० मीटर की ऊंचाई पर स्थित लाहौल स्पीती एवं लद्दाख क्षेत्र ठण्डे मरुस्थल है। यहाँ तापमान का न्यूनतम अंक –२८ डिग्री से. है तथा वार्षिक वर्षा ११५ मिलीमीटर होती है।

२२) ५,६८२ मीटर की ऊंचाई पर स्थित सड़क जो खरदुंगला में है, वह लेह मनाली को जोड़ती है।

२३) खारे पानी की सबसे बड़ी झील– ओड़िसा में बंगाल की खाड़ी के पास चिलिका झील। भारत ही नहीं बल्कि एशिया की सबसे बड़ी खारे पानी की झील है। यह ९१६ वर्ग कि. मी. के क्षेत्र में फैली है।

२४) विश्व का सबसे बड़ा डेल्टा– गंगा ब्रह्मपुत्र नदी के सागर संगम का स्थित डेल्टा विश्व का सबसे बड़ा डेल्टा है। भारत और बांग्लादेश में यह डेल्टा ७५,००० वर्ग कि. मी. क्षेत्र में फैला हुआ है।

२६) भारतीय रेल विश्व का सबसे बड़ा नियोक्ता (रोजगारदाता) है।

– इन्दौर (म. प्र.)

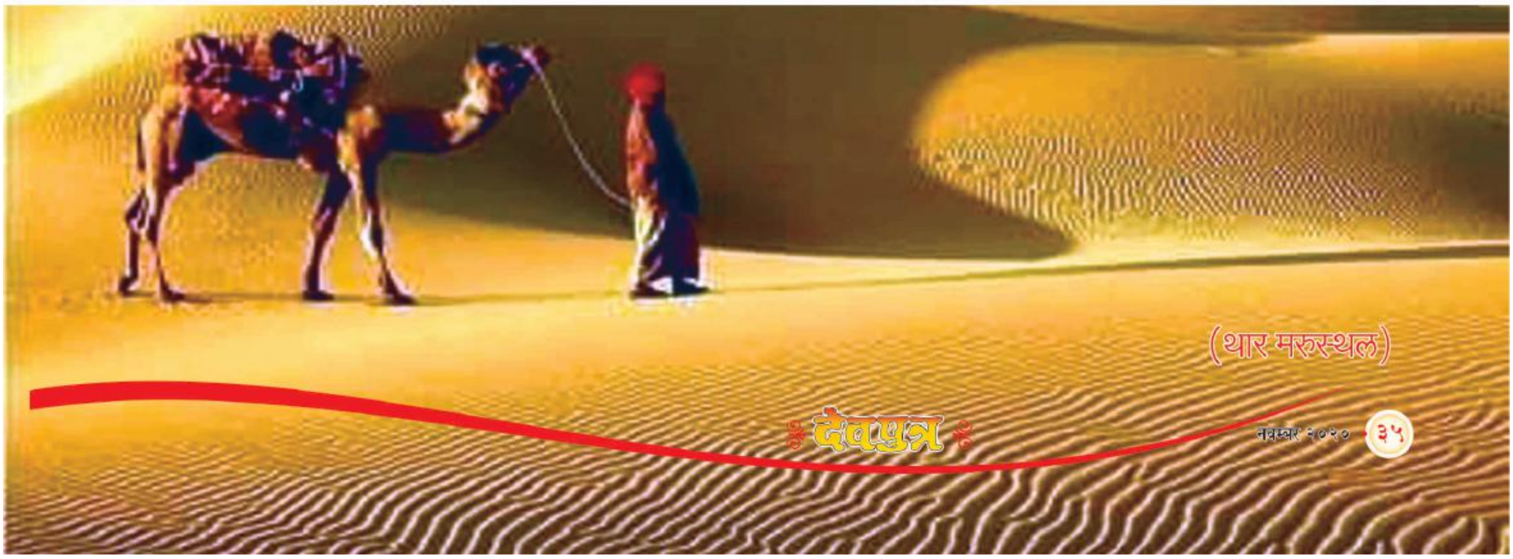

(थार मरुस्थल)

परख

कहानी

मनीषा बनर्जी

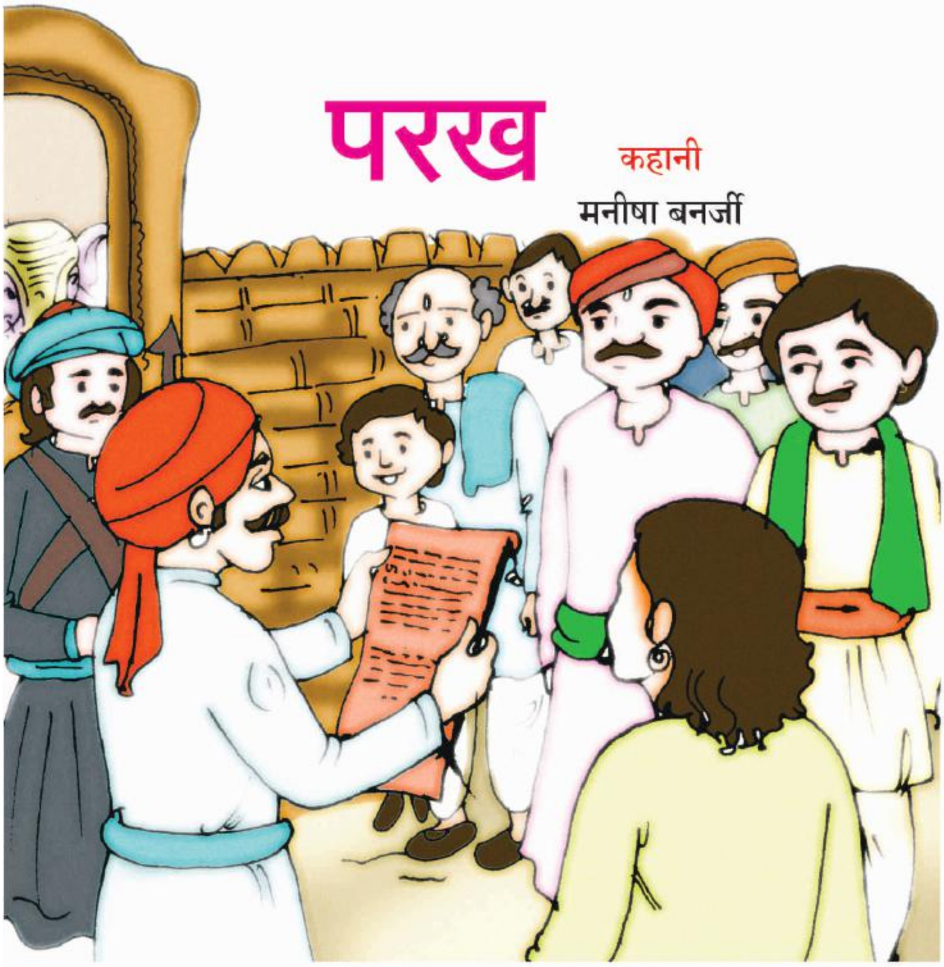

एक तो कवि, वह भी कोई साधारण कवि नहीं! अत्यंत उच्चकोटि के रचनाकार! देवी सरस्वती की सच्ची व कठोर साधना करने के फलस्वरूप तन–मन दोनों ही आग में तपे हुए कुंदन में परिवर्तित हो चुके थे। पर हाय रे भाग्य! इस गुदड़ी के लाल के कौशल का मोल संसार ने कौड़ियों के भाव लगाया। अंतत: एक दिन भुखमरी से तंग आकर कवि महोदय ने रातोंरात अपना ठौर–ठिकाना छोड़ महानगर की राह पकड़ी। राजधानी में पहुँच कर लोगों से पूछते–पूछते अंतत: वह राजमहल के सिंहद्वार तक जा पहुँचे। द्वारपालों को अपना परिचय देने के कुछ ही क्षणों के बाद महाराजाधिराज के अनुचर उन्हें सम्मानपूर्वक राजसभा में ले गए।

महाराज के तेजस्वी श्रीमुख की ओर देखकर कविवर एकदम ठगे से खड़े रह गये। उनके मन के भाव को ताड़कर महाराज ने अपने सेवकों को बुलाकर आज्ञा दी– ''आज से कविगुरु के भोजन व आवास की व्यवस्था हमारे राजमहल में की जाए।''

एक वह दिन था और एक आज का दिन है। समय अपनी गति से चलते–चलते एक वर्ष की अवधि पूर्ण करने को अधीर हो उठा है। इधर हमारे कवि महोदय भी राजमहल छोड़ अन्यत्र कहीं और भाग्य परखने के लिए अधीर हो उठे हैं। दु:ख, अपमान, क्रोध, ग्लानि, तिरस्कार से कवि का सुकुमार हृदय चिता में धधक रही काठ के समान धू–धू करके जल रहा है। इसका कारण है– महाराज स्वयं। कहाँ तो महाराज की गुणग्राहकता, अद्भुत दानवीरता के प्रसंग सुनकर इतनी आशा लिए कविवर महाराज के पास आए थे और कहाँ इस पूरी अवधि में महाराज ने एक बार भी उन्हें स्मरण तक नहीं किया।

उधर राजसभा में भारी आवागमन भरा वातावरण है। काश्मीर (वर्तमान कश्मीर) के महामंत्री स्वयं महाराज के समक्ष हाथ जोड़कर खड़े हैं। उनके मुखमंडल पर चिंता के बादल स्पष्ट दिखाई दे रहे हैं। काश्मीर के वर्तमान महाराज की अचानक मृत्यु हो जाने से राज्य में संकट की स्थिति निर्मित हो चुकी है। यदि शीघ्र ही कोई उपाय नहीं किया गया तो दो प्रतिद्वन्द्वी दलों के बीच राजसिंहासन को लेकर रक्त की नदियाँ बहने में अधिक समय नहीं लगेगा। काश्मीर राज्य महाराजाधिराज के साम्राज्य के आधीन होने के कारण काश्मीर के महामंत्री सहायता माँगने उपस्थित हुये थे– हमारे महाप्रतापी सम्राट के पास।

सिंहासन पर गंभीर मुद्रा में बैठे चक्रवर्ती सम्राट के मन में उथलपुथल मची हुई थी। सहसा उनके मन के आकाश में बिजली सी कौंध गई। पलक झपकते ही उनके मुख से चिंता की रेखाएँ मिट गईं और उनके होंठों पर एक

रहस्यमयी मुस्कान खेल गयी। काश्मीर के महामंत्री को सम्राट ने शीघ्र कार्रवाई करने का आश्वासन देकर वापस भेज दिया।

इधर इन सारी घटनाओं से अनभिज्ञ कवि महाराज, अपने सामान की पोटली बाँधकर अगली सुबह की प्रतीक्षा कर रहे हैं। पौ फटने के साथ ही स्नान–ध्यान कर ललाट पर चंदन का तिलक लगाकर जैसे ही कवि महाराज ने अपनी पोटली उठाई वैसे ही उनके कक्ष के द्वार पर खटखटाने का स्वर उभरा। द्वार के सामने राज सेवक खड़ा था। कवि महाराज को तुरंत महामंत्री के समक्ष ले जाने का आदेश था। कविवर के आश्चर्य की सीमा तो तब और भी बाँध तोड़ने लगी जब महामंत्री ने एक मुद्रांकित राजाज्ञा उनके हाथ में थमाकर गुरुगम्भीर स्वर में कहा–''महाराजाधिराज के आदेशानुसार आपको इसी क्षण यह राजपत्र लेकर काश्मीर की ओर प्रस्थान करना पड़ेगा।''

भय, चिंता, कौतूहल के सागर में गोते खाते हुए अन्तत: कवि महाराज काश्मीर जा पहुँचे। तुरंत काश्मीर के महामंत्री उनके पास पहुँच कर राजाज्ञा को एक साँस में पूरी पढ़ गए।

उसके बाद तो जो हुआ, वह कवि महाराज ने कभी स्वप्न में भी नहीं सोचा होगा। पलक झपकते ही महामंत्री व उनके अंगरक्षक कवि महाराज को सोने के हौदे वाले हाथी पर बैठाकर राजमहल के प्रवेशद्वार पर ले गए। वहाँ उन्होंने उपस्थित प्रजागण के समक्ष घोषणा की– ''आज से यह हैं हमारे परम आदरणीय नए महाराज। काश्मीर नरेश के राजतिलक के उपरांत सारे राज्य में उत्सव का आयोजन किया जायेगा। इस पत्र में हमारे नए नरेश के विषय में यह लिखा गया है कि यह न केवल उच्च कोटि के विद्वान हैं, अपितु अत्यंत धैर्यवान व विपरीत परिस्थितियों में भी अविचलित बने रहते हैं। ऐसे व्यक्ति ही वास्तविक अर्थ में प्रजावत्सल व प्रतापी राजा बनने के योग्य हैं।''

अब तो अपने काश्मीर नृपति के ऊपर मानो घड़ों पानी पड़ गया। कहाँ तो वे महाराजाधिराज की गुणग्राह्यता और पारखी दृष्टि पर संदेह जताते हुए उन्हें मन ही मन धिक्कार रहे थे और कहाँ महाराजाधिराज अपनी ख्याति के अनुरूप कसौटी पर सोलहों आने खरे उतर गए। काश्मीर नृपति मन ही मन अपने चक्रवर्ती सम्राट की पारखी दृष्टि व गुणों का सम्मान करने की अद्भुत योग्यता के समक्ष नतमस्तक हो गए। यह काश्मीर नृपति और कोई नहीं बल्कि प्रकांड विद्वान व कवि मातृगुप्त थे। प्रिय पाठको! क्या आप जानते हैं उन कलामर्मज्ञ, पारखी परम प्रतापी चक्रवर्ती सम्राट को जिन्होंने पलक झपकते ही ऐसी प्रतिभा को पहचानकर राजसिंहासन तक पहुँचा दिया था?

जी हाँ, सही पहचाना, आपने ये महाप्रतापी शासक थे– उज्जयिनी (वर्तमान उज्जैन) के नरेश, चक्रवर्ती सम्राट विक्रमादित्य!

– नागपुर (महाराष्ट्र)

उलझ गए!

देवांशु वत्स

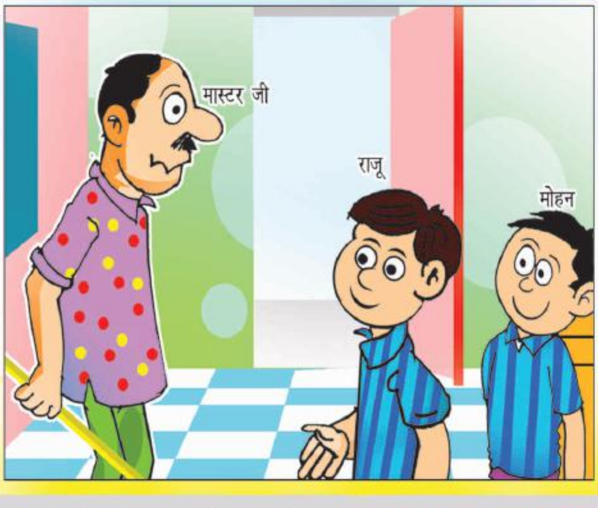

राजू ने मोहन के बारे में मास्टर जी से बताया,–'यह मेरी बुआ की भतीजी की दादी के एकमात्र पुत्र का बेटा है।' राजू और मोहन का क्या रिश्ता है?

उत्तर: राजू और मोहन आपस में भाई हैं।

कविता

तुलसी का बिरवा

– रामकुमार गुप्त

मेरी माँ तुलसी पर प्रात:
जल हर रोज चढ़ातीं हैं।
पूजा करतीं और शाम को,
घी का दीप जलाती हैं।
गाती हैं श्रद्धा से इसकी,
महिमा बड़ी चमत्कारी।
गुणकारी, अपार हितकारी,
कहलाती हरि की प्यारी।
दर्शन से मन पुलकित होता,
वातावरण शुद्ध करती।
सेवन से मन होता निर्मल,
रोग–शोक सबका हरती।
वायु, पित्त, कफ, सर्दी, ज्वर,
पीड़ा को दूर भगाती है।
चर्मरोग में रामबाण, मुख–
की दुर्गन्ध मिटाती है।
स्वास्थ्य, शान्ति, सुख देने वाले,
अति पावन हैं तुलसी दल।
अमृत के समान बन जाए,
अगर मिला लो गंगा–जल।
अम्मा कहतीं, ''इसीलिए, हो,
घर–घर में तुलसी बिरवा।
हरि सुमिरन के साथ–साथ में,
मिले सभी को मुफ्त दवा।''

– खीरी (उ. प्र.)

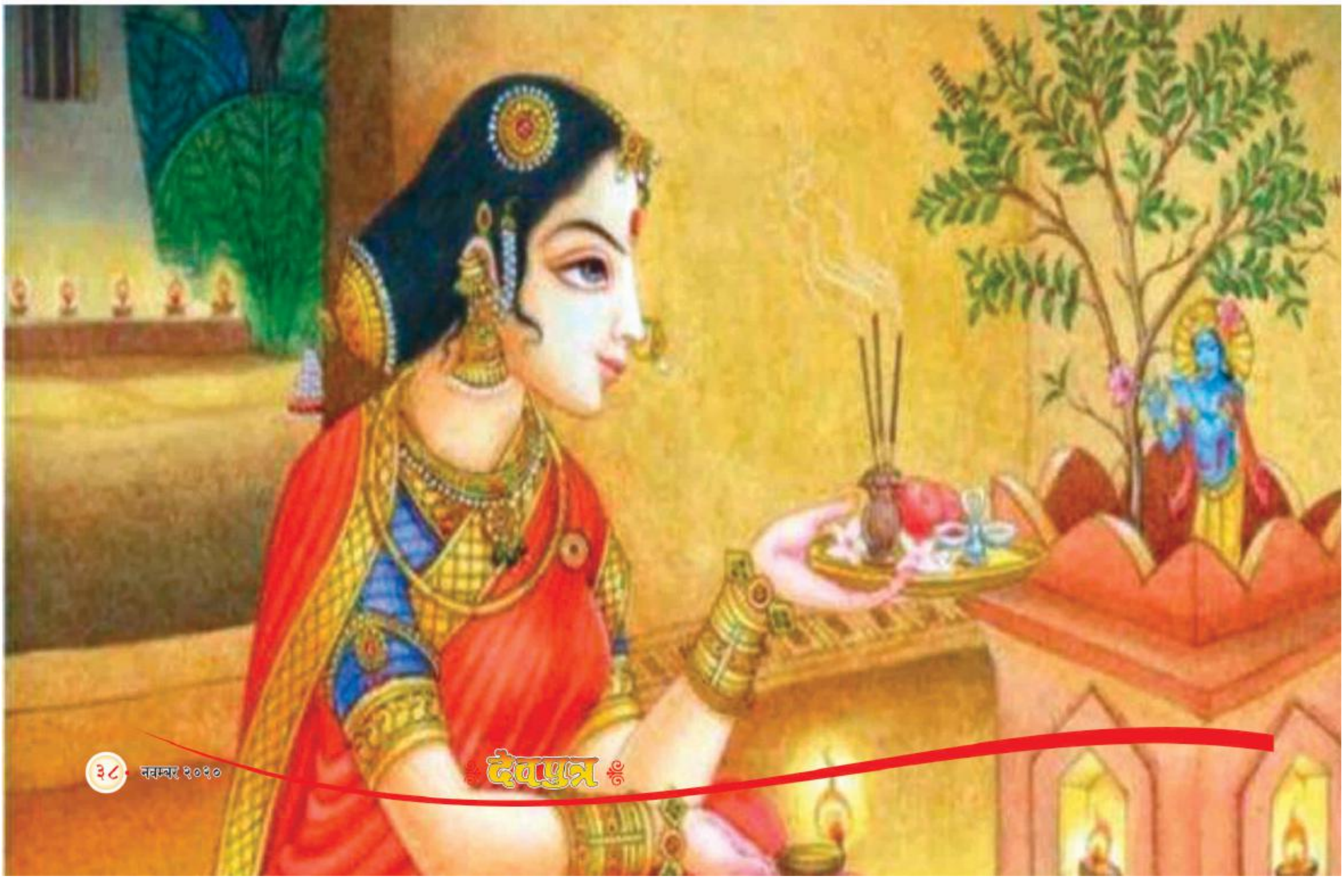

कुछ नहीं पाया

चित्रकथा-

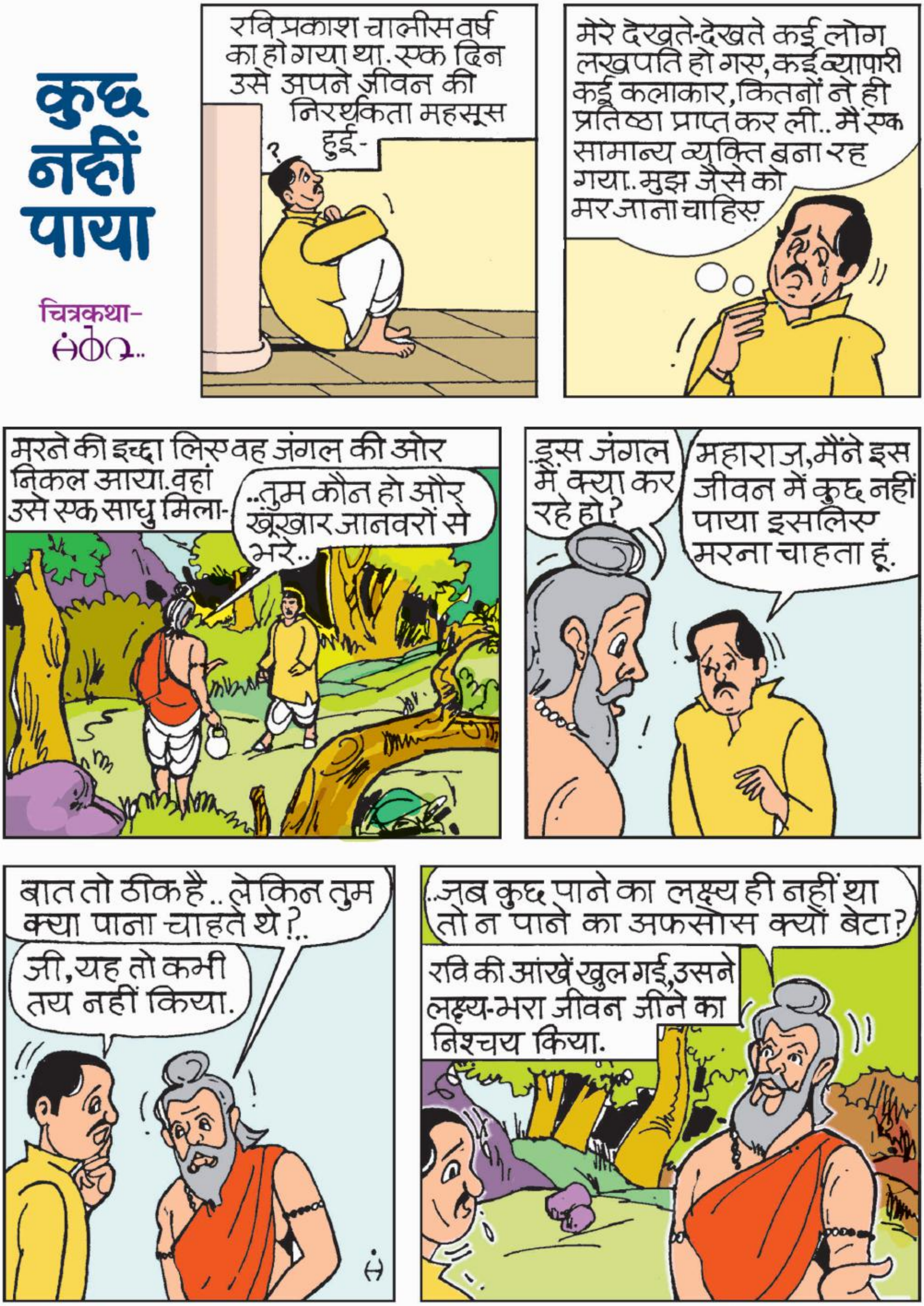
रवि प्रकाश चालीस वर्ष का हो गया था. एक दिन उसे अपने जीवन की निरर्थकता महसूस हुई-
?
मेरे देखते-देखते कई लोग लखपति हो गए, कई व्यापारी कई कलाकार, कितनों ने ही प्रतिष्ठा प्राप्त कर ली.. मैं एक सामान्य व्यक्ति बना रह गया.. मुझ जैसे को मर जाना चाहिए
मरने की इच्छा लिए वह जंगल की ओर निकल आया. वहां उसे एक साधु मिला-
..तुम कौन हो और खूंखार जानवरों से भरे..
..इस जंगल में क्या कर रहे हो?
महाराज, मैंने इस जीवन में कुछ नहीं पाया इसलिए मरना चाहता हूं.
बात तो ठीक है.. लेकिन तुम क्या पाना चाहते थे?..
जी, यह तो कभी तय नहीं किया.
..जब कुछ पाने का लक्ष्य ही नहीं था तो न पाने का अफसोस क्यों बेटा?
रवि की आंखें खुल गई, उसने लक्ष्य-भरा जीवन जीने का निश्चय किया.

बाल अधिकार दिवस : २० नवम्बर

भिखारी

– अश्वनी कुमार पाठक

''बाबूजी, एक रुपया दे दो, भगवान आपका भला करे।'' एक १०–११ साल के बच्चे ने आवाज लगाई। वह पुराने बस स्टेण्ड में सुनील वीडियो की पहली मंजिल पर दुकान के सामने खड़ा था। बिखरे–बिखरे बाल, पैबंद लगी चिथड़ी, गंदी कमीज, फटा पैंट, पाँवों में दो रंग की चप्पलें और कंधे पर मैला–कुचैला थैला, यही उसकी वेशभूषा थी।

सुबह के दस बजे थे। दुकान के स्वामी सुनील ने दुकान खोली ही थी कि उस लड़के ने एक रुपये की माँग रख दी। सुनील बड़े दयालु थे। कोई कुछ माँगे और उनके मुँह से 'न' निकले ऐसा नहीं होता था। उन्होंने तुरंत जेब से एक सिक्का निकाला और लड़के के फैले हुए हाथ पर रख दिया।

''आपकी जय हो, बाबूजी।''– बोलकर लड़का चला गया।

सुनील सोचते रहे, बेचारा! विपत्ति का मारा! आजादी के सत्तर साल बाद भी, जिस बच्चे के हाथ में कलम होनी चाहिये, उस हाथ में कटोरा है, भीख का कटोरा।

सुनील की आँखों में बार–बार भीख माँगने वाले उस बच्चे का मुखड़ा घूम जाता था। उसे लगा, काश! वह ऐसे बच्चों के लिये कुछ कर पाता।

दूसरे दिन दुकान खुलते ही, वही लड़का फिर दुकान के सामने खड़ा था। उसने फिर आवाज लगाई– ''बाबूजी, एक रुपया दे दो, भगवान आपका भला करें।'' सुनील ने फिर उसके हाथ में एक सिक्का थमा दिया। लड़का–''आपकी जय हो बाबूजी।'' कहकर जाने के लिये पीछे लौटा, तो सुनील ने उससे कहा– ''रुको।'' उसके पैर थम गये, बोला–''क्या है, बाबूजी?''

सुनील ने पूछा– ''तुम्हारा नाम क्या है?'' ''बुद्धू'' लड़के ने नाम बताया। सुनील ने प्रश्न किया– ''बुद्धू क्यों?'' ''बाबूजी, मैं बुधवार को पैदा हुआ था। नाम रखा गया था– बुद्धिराम, लेकिन लोग मुझे बुद्धू कहने लगे।'' ''पिताजी हैं?'' सुनील ने पूछा। ''हाँ, हैं।'' बुद्धू का जवाब था। ''क्या करते हैं?'' सुनील ने फिर पूछा। बुद्धू ने उत्तर दिया– ''पल्लेदारी।'' ''और माँ?'' सुनील का अगला सवाल था। बुद्धू बोला– ''माँ नहीं है, मर गई।'' और रोने लगा। उसके भीतर का दुःख पिघलकर आँखों से बहने लगा।

सुनील ने कहा– ''चलो, मेरे साथ।'' सुनील बुद्धू को लेकर चल पड़ा, झंडा बाजार की ओर। दोनों एक सिलेसिलाए

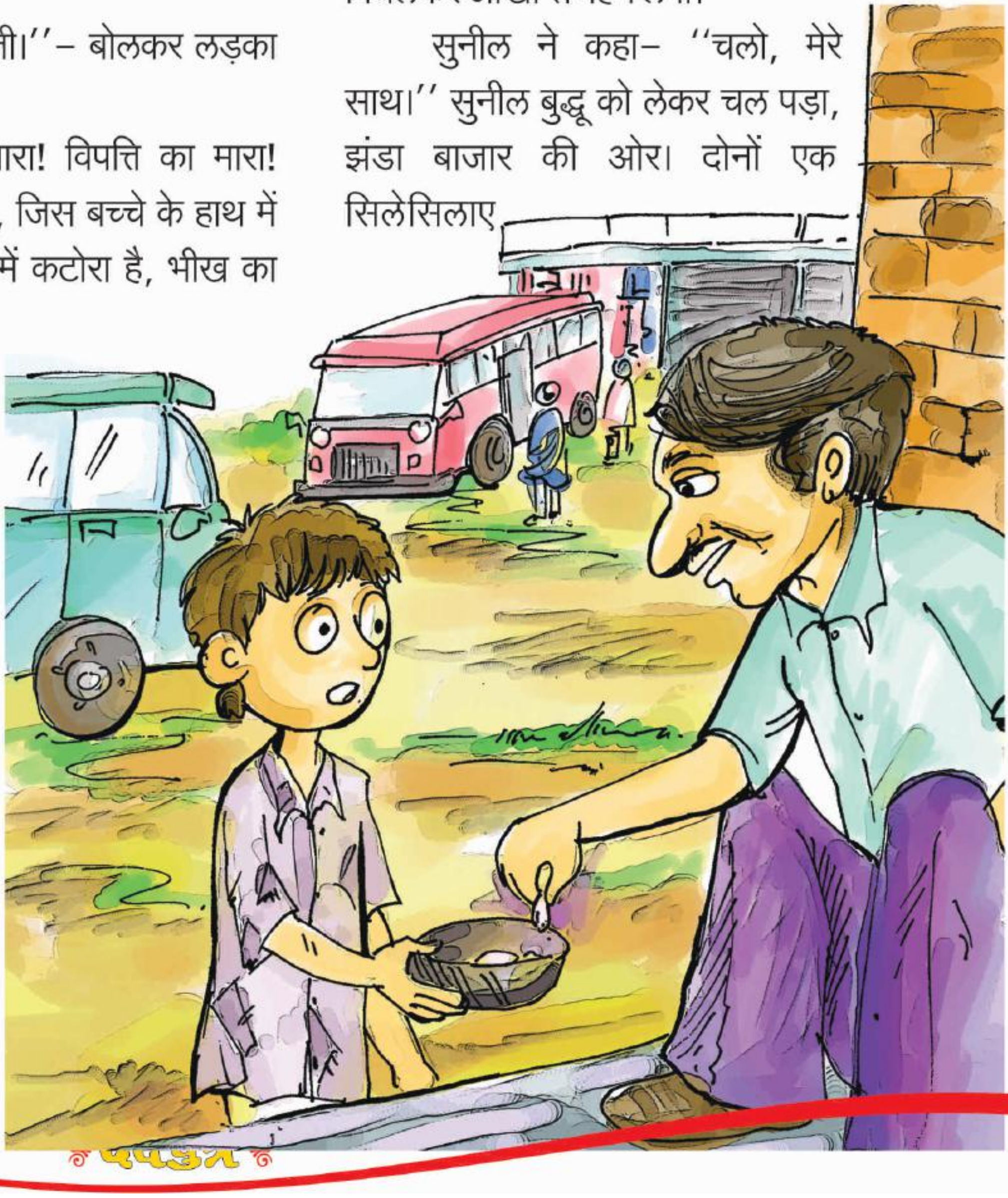

वस्त्रों की दुकान पर पहुँचे। सुनील ने बुद्धू के लिये दो पैंट, दो कमीजें और एक तौलिया खरीदे, एक जोड़ा मोजा भी, फिर जूतों की दुकान पर पहुँचकर उसके लिये जूते खरीदे।

अपनी दुकान लौटकर सुनील ने उसे नये कपड़े पहनने के लिये दिये और पुराने, जो फटे चिथड़े थे, उतरवा लिये। बुद्धू पुराने कपड़े वही छोड़कर चला गया।

जब बुद्धू चला गया, तब सुनील को ध्यान आया कि उसने बुद्धू से उसके घर का पता तो पूछा ही नहीं। चलो, कोई बात नहीं, जब आयेगा, तब पूछ लेंगे।

अगले दिन लगभग ११ बजे दुकान खोली, लेकिन बुद्धू नहीं आया। सुनील ने सोचा, आता होगा। १२ बज गये, एक बज गया, दो बज गये, लेकिन बुद्धू का पता नहीं था। सुनील ने सोचा हो सकता है, बीमार पड़ गया हो, घर में कोई जरूरी काम आ गया हो।

दो दिन बाद सुनील की दुकान पर एक बूढ़ा आया। बिखरे हुए बड़े–बड़े बाल। चारों ओर बिखरी हुई सफेद–काली रूखी–सूखी दाढ़ी, जो चेहरे पर चिड़िया के अस्त–व्यस्त घोंसले जैसी लग रही थी। बुझी हुई घुसी–घुसी आँखें, बगल में दबी हुई मैली–कुचैली पोटली! बूढ़े ने सुनील की ओर मुख करके पूछा– ''क्या आप ही सुनील है?'' सुनील बोला– ''हाँ, कहिये, मैं ही सुनील हूँ, आपका नाम?'' बूढ़ा कुछ गुस्साया, बोला– ''नाम से आपको क्या करना है? बस यह समझ लीजिये, मैं बुद्धू का बाप हूँ।''

''बुद्धू के बाप? कहाँ है बुद्धू?'' सुनील ने पूछा। बूढ़े ने कहा– ''बुद्धू घर में है।'' फिर झुँझलाकर बूढ़ा बोला– ''आप मेरा धंधा चौपट करना चाहते हैं?'' सुनील ने अचरज में आकर पूछा– ''कैसा धंधा, कौन चौपट कर रहा है? आपका मतलब क्या है?''

बूढ़ा आपे से बाहर हो गया। हाथ मटकाकर बोला– ''अब आप ज्यादा अनजान मत बनिये। मैं गरीब हूँ। पहले पल्लेदारी में कुछ कमा लेता था, अब वह भी नहीं होती। बच्चा भीख माँगकर अपना और बाप का पेट भर रहा था। आपने वह साधन भी छीन लिया। उसके फटे–चिथड़े कपड़े लेकर उसे नये कपड़े जूते दे दिये। इन नये कपड़ों में कौन देगा उसे भीख?'' उसने बगल में दबी पोटली खोलते हुए नये कपड़े निकाले और कहा– ''ये कपड़े–जूते आप ही रखिये, आपके बच्चों के काम आयेंगे। आप उसके फटे–पुराने कपड़े लौटा दीजिये, ताकि वह भीख माँगता रहे और जिन्दगी की गाड़ी चलती रहे।''

सुनील बूढ़े की अजीबो–गरीब बातें सुन कर गुस्से में बोला– ''क्या मैंने कोई अपराध किया है? भीख माँगना क्या कोई अच्छा काम है? वह भी पढ़ने लिखने की इस आयु में?''

बूढ़े ने खिसियाकर कहा– ''बाबूजी, आदर्शवाद मत बघारिये। यदि आपके मन में हमारे लिये सचमुच सहानुभूति है, तो पहले हमारी रोजी–रोटी का व्यवस्था कीजिये। बुद्धू की पढ़ाई–लिखाई कैसे हो, यह बताइये, फिर आगे कुछ और।''

सुनील की आँखें खुल गई। उसके पिता सेवा–निवृत्त शिक्षक थे। उन्हें पेंशन के रूप में अच्छी रकम मिलती थी। उसके बच्चे नहीं थे। वह, पिता और पत्नी–केवल तीन प्राणी।

सुनील के हृदय से प्रेम का झरना फूट पड़ा, ममता की नदी उमड़ आयी। सुनील बोला– ''हाँ, दादा, आज तुमने मेरे अन्दर की मनुष्यता जगा दी। चलो मैं तुम्हें अपना बड़ा पिता और बुद्धू को भाई मानता हूँ। आज से तुम और बुद्धू मेरे घर में रहेंगे। अब मेरा भाई भीख नहीं माँगेगा। पढ़ेगा, लिखेगा और अपने बाप का नाम करेगा। वह बुद्धू नहीं, बुद्धिराम बनेगा।''

बूढ़ा फूट–फूटकर रोने लगा, बोला– ''आज की दुनिया में कौन किसका है? बेटा! सब स्वार्थ में अंधे हैं। लोग माता–पिता तक को अपना नहीं मानते। वृद्धाश्रम की राह दिखा देते हैं। तुम तो देवता हो, बेटा! देवता!! यदि लोगों में प्रेम, करुणा और दया की भावना जाग जाये, तो यह दुनिया स्वर्ग बन जाये। फिर किसी बुद्धू को भीख न माँगनी पड़े और कोई बूढ़ा पिता खून के आँसू न रोये।

– सिहोरा (म. प्र.)

स्वयं बनें वैज्ञानिक

कागज की सात घड़ी

आलेख – प्रो. राजीव ताम्बे
अनुवाद – सुरेश कुलकर्णी

चलो मित्रो! अब की बार हम यह नया कारनामा करते हैं जो कठिन है और संभव भी नहीं। चलो प्रयास करते हैं।

सामग्री

एक समाचार–पत्र लीजिये। इसमें कुछ शर्तें हैं।

१. मोडना मतलब कागज की सामने वाली परतों को जोड़ना।

२. यह करते समय एक ही दिशा में यह कार्य करना है।

३. पहले नीचे से ऊपर मोड़ना और इसी क्रम में अगला मोड़ना यह ध्यान रहे।

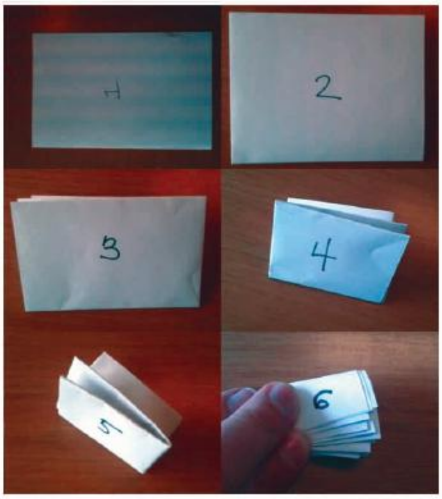

आप कितना भी प्रयास कीजिए अधिक से अधिक ४ या ५ ही घड़ी होती है। हमने कागज बड़ा लिया तो भी इससे घड़ी भी नहीं होती हैं, कितना भी प्रयास कीजिए यह कार्य असंभव ही है। आप मोड़ने का प्रयास ही छोड़ देते हैं। कारण परत इतनी बड़ी होती है कि वह कागज मुड़ ही नहीं पाता फिर भले आप दो समाचार पत्र का जोड़ लगाकर देखें।

क्यों?

कागज को मोड़ना या घड़ी करना आसान सा लगता है परन्तु जैसे प्रारंभ में दो घड़ी, फिर ४ फिर ८ फिर १६ फिर ३२ इस तरह कागज की परत दर परत इतनी बढ़ती है कि वह घड़ी नहीं हो पाती है, और मोड़ना संभव ही नहीं होता। कारण ६४ या १३२ कागज की घड़ी असंभव ही है। इसमें भूमितीय तत्व काम करता है जो हमें चक्रवृद्धि ब्याज जैसे कागजों की परत बढ़ने का संकेत देते हुये काम न होने का संकेत देता है।

यहाँ पर मशीन हो तो भी वह अपनी असमर्थता जताएगी।

– पुणे (महाराष्ट्र)

आओ, आओ खेलें खेल

★ चाँद मोहम्मद घोसी

ध्यान से देखकर बताइए यहां चित्रित 7 कबूतरों में बिल्कुल एकसे 2 कबूतर कौन-कौनसे हैं?

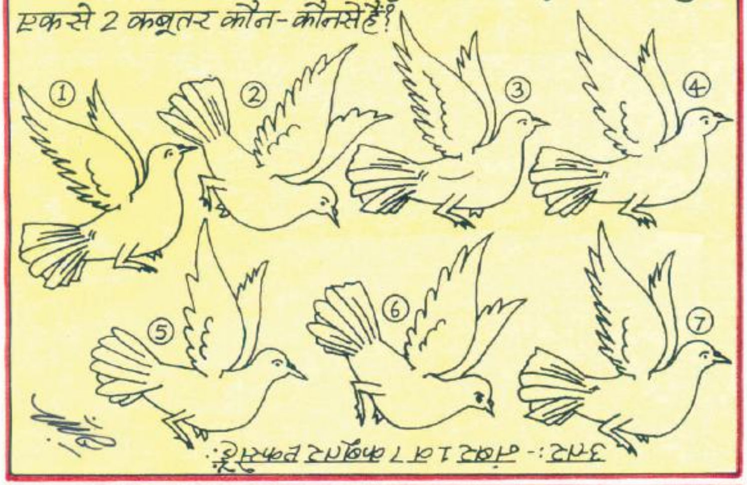

उत्तर:- क्रमांक 1 व 7 कबूतर एकसे हैं:

अंक 3 की सहायता से मुर्गे का सरल व सुन्दर चित्र बनाना सीखो.

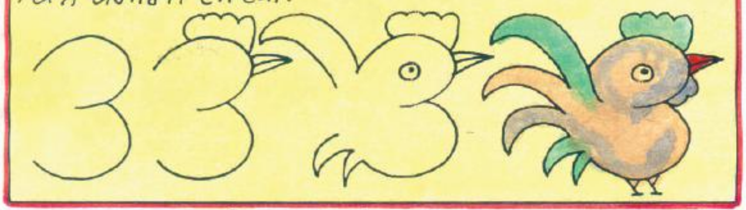

– मेड़ता सिटी (राजस्थान)

यह देश है वीर जवानों का (१२)

मेजर होशियार सिंह

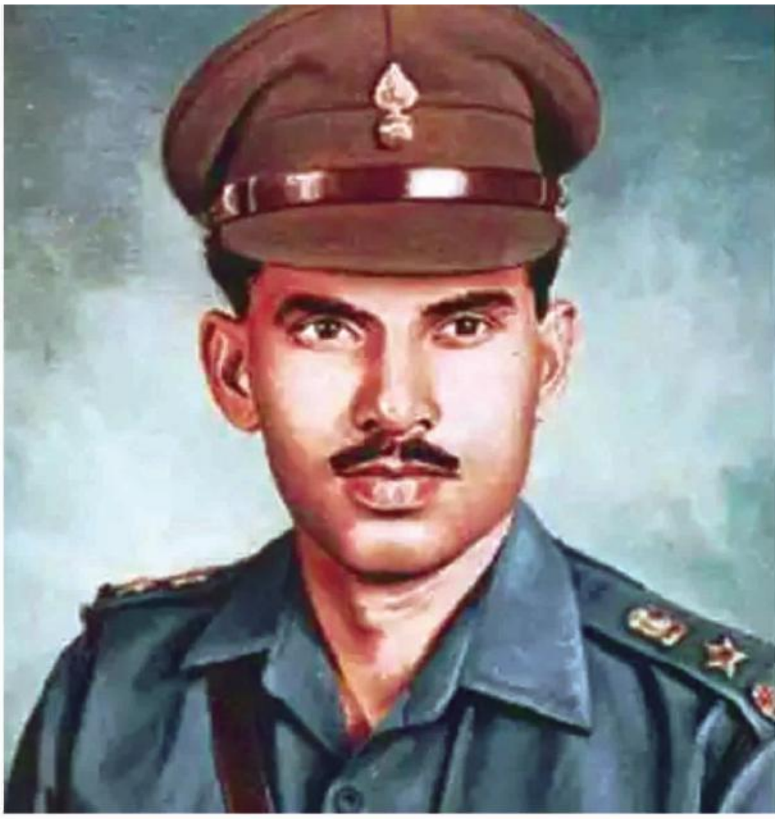

सन् १९७१ का युद्ध भारत को पाकिस्तान से दो दो मोर्चों पर लड़ना पड़ा ये मोर्चे थे पूर्वी मोर्चा और पश्चिमी मोर्चा। इनमें से पश्चिमी मोर्चा वह मोर्चा था जिसके दो–दो वीरों को परमवीर चक्र से सम्मानित किया गया। ३ ग्रेनेडियर्स के मेजर होशियार सिंह उनमें से एक हैं। जम्मू कश्मीर का शकरगढ़ भारत और पाकिस्तान दोनों के लिये विशेष सामरिक महत्व का क्षेत्र है। भारतीय सेना के प्रचण्ड आक्रमण को रोकने हेतु पाक सेना ने चेनाब और देध नदी के बीच बीच बड़े–बड़े टैंक रोधी गड्ढे तैयार कर दिये। पूर्व के सुपवाल गड्ढे को बसंतर से जोड़ा गया। जाफरवाल, दमताल, किला सोबासिंह तथा नाटोवाल आदि प्रमुख शहरों के सामने बड़े टैंक अवरोधक गड्ढे बनाकर सबको देध नदी से रावी नदी तक जोड़ दिया गया साथ ही बड़ी संख्या में बारूदी सुरंगों का जाल भी बिछा दिया गया।

५४ इन्फैंट्री डिविजन को इस क्षेत्र में बसंतर नदी पर एक पुल बनाना था और सुपवाल पर कब्जा करते हुए जाफरवाल आदि को अपने अधिकार में ले लेना था।

वह १५–१६ दिसम्बर की तारीख थी ५४ इन्फैंट्री डिविजन की ब्रिगेडें शत्रु पर टूट पड़ीं। १६ दिसम्बर दस बजकर पचास मिनिट पर शत्रु ने बख्तरबंद दस्तों व टैंकों से प्रतिरोध किया।

१६ दिसम्बर से १७ दिसम्बर के बीच पाकिस्तान ने छह जवाबी हमले कर अपने ४६ टैंक धूल में मिलवा लिये। १७ दिसम्बर की सर्दीली शाम छ: बजकर दस मिनिट दुश्मन का छटा व आखिरी आक्रमण भारतीय ३ ग्रेनेडियर्स ने निष्फल किया पर इस प्रतिकार में हमारी सेना के मेजर होशियार सिंह सदा के लिये हमसे बिछुड़ गये। उन्हें भारत ने परमवीर चक्र से विभूषित किया।

प्यारा परिवार

– प्रवीन कुमार

दादी स्वेटर बुनती है
गीत अनोखे गुनती है
गुड़िया लोरी गाती है
सबके मन को भाती है
भोजन अम्मा रोज बनाए
हम सब मन भरभर कर खाएं
बापू बाजार जाते हैं
फल–मिठाई लाते हैं
बच्चे धूम मचाते हैं
सबके मन को भाते हैं

– रेवाड़ी (हरियाणा)

मित्र हो तो ऐसा

– राजा चौरसिया

अशोक ने जब सुना कि विद्यालय में भाषण–प्रतियोगिता होने वाली है, तो उसकी खुशियों को मानो पंख लग गए। अल्प अवकाश की घंटी बजते ही उसने कार्यालय की ओर दौड़ लगाई। दीवार के सूचना पटल पर बड़े–बड़े अक्षरों में सूचना पढ़कर अशोक के मन में लड्डू फूट रहे थे। बालदिवस के उपलक्ष्य में प्रतियोगिता का आयोजन था।

कार्यक्रम नए प्राचार्य जी के सौजन्य से था क्योंकि बालदिवस को उनका भी जन्मदिवस था। प्रथम विजेता को एक हजार रुपये का नकद पुरस्कार उनकी ओर से ही था। अन्य पुरस्कार भी थे।

प्रतियोगिता का यह विषय बड़ा रोचक और प्रेरक था– ''पंख और उड़ान''। अशोक सभी साहित्यिक प्रतियोगिताओं में हमेशा बाजी मारता था। प्रथम आने का उसका पहले से कीर्तिमान था। सारे प्रतियोगी उसके कौशल का लोहा मानते थे।

ऐसी मनचाही प्रसन्नता के चलते अशोक को अपने दोस्त मोती की याद आई जो दूसरे वर्ग में पढ़ता था। दोनों में दूध–भात जैसा तालमेल था अर्थात दोस्ती में खूब गढ़ास थी, मिठास थी। अशोक बड़े घर का बेटा था जबकि मोती उस गरीब घर का बेटा था जहाँ गरीबी में गीला आटा होता रहता था। पिता मजदूरी कर परिवार का पेट पालते थे। माँ बीमार रहती थीं।

उनकी इस बेमेल मित्रता पर कक्षा और पड़ोस के लड़के जमकर हँसी उड़ाते रहते थे। ''एक है मालामाल दूसरा फटेहाल, एक कुबेर तो दूसरा बेर है।'' इस तरह की तानेबाजी से उन्हें चोट तो लगती थी मगर वे हँसकर चुप रह जाते थे। एक दिन अशोक ने मोती को समझाते हुए कहा– ''जलने वाले जलते हैं, चलने वाले चलते हैं। अशोक भी यह मानता था कि असली मित्रता धन से नहीं बल्कि मन से होती है।

मोती भी साहित्यिक प्रतियोगिताओं में बढ़–चढ़कर हिस्सा लेता था लेकिन वह दूसरे तीसरे स्थान पर ही रहता था। जब उसे सूचना की जानकारी मिली तो वह भी तैयारी करने लगा था।

इधर मोती की याद आने पर अशोक सोचने लगा कि हे भगवान! इस बार कुछ ऐसा हो जाए कि मेरा मोती ही प्रथम आए। उसने कई बार अपने मित्र की मदद करनी चाही लेकिन वह हाथ जोड़कर बस यही कह देता था– ''मेरे पिताजी ने कहा है कि रूखी–सूखी, नून रोटी खाना पर किसी के सामने हाथ नहीं फैलाना। सहायता के उपकार के बोझ से आदमी अपना सिर कभी नहीं उठा पाता है।'' मित्र तुम्हारा स्नेह ही मेरे लिए सहारा है।

अशोक अपने मित्र की सहायता के उपाय ढूँढ़ता रहता था। वह थक गया था मगर उसने हार नहीं मानी थी। उसने सोचा कि जब गंदा पानी भी अपना रास्ता बना लेता है तो कभी मेरी नेकी भी अवश्य रंग लाएगी।

मोती के पिता अनपढ़ थे मगर बहुत समझदार थे। जब कभी वह बेटे को दीन–हीन या उदास देखते थे, तो

वह उसका मनोबल बढ़ाते रहते थे। एक बार उन्होंने यह कहकर मोती को उत्साहित कर दिया ''बेटे! चिंता मत करो। जब घूरे के दिन भी फिरते हैं तो कभी मेरे गुदड़ी के लाल के भी दिन फिरेंगे। रात चाहे कितनी लंबी हो सबेरा जरूर आएगा।''

रविवार और छुट्टी के दिन वे आपस में खूब खेलते हँसते बतियाते थे। इसके बाद भी इस बात का ध्यान आते ही अशोक गंभीर सा हो जाता था कि मोती फटा बस्ता लेकर नंगे पैर शाला जाता है। वह तुरंत इस पीड़ा को भुलाने का प्रयास कर लेता था। पढ़ने लिखने में भी यह जोड़ी चाहने और सराहने योग्य थी।

उधर प्रतियोगिता के विषय में जानकारी मिलते ही मोती के पिता ने ढाढस बँधाते हुए बस इतना कहा– ''बेटा! उड़ान भरने की क्षमता पंखों में नहीं उड़ान भरने के विश्वास में होती है। मैंने यह सुना है।''

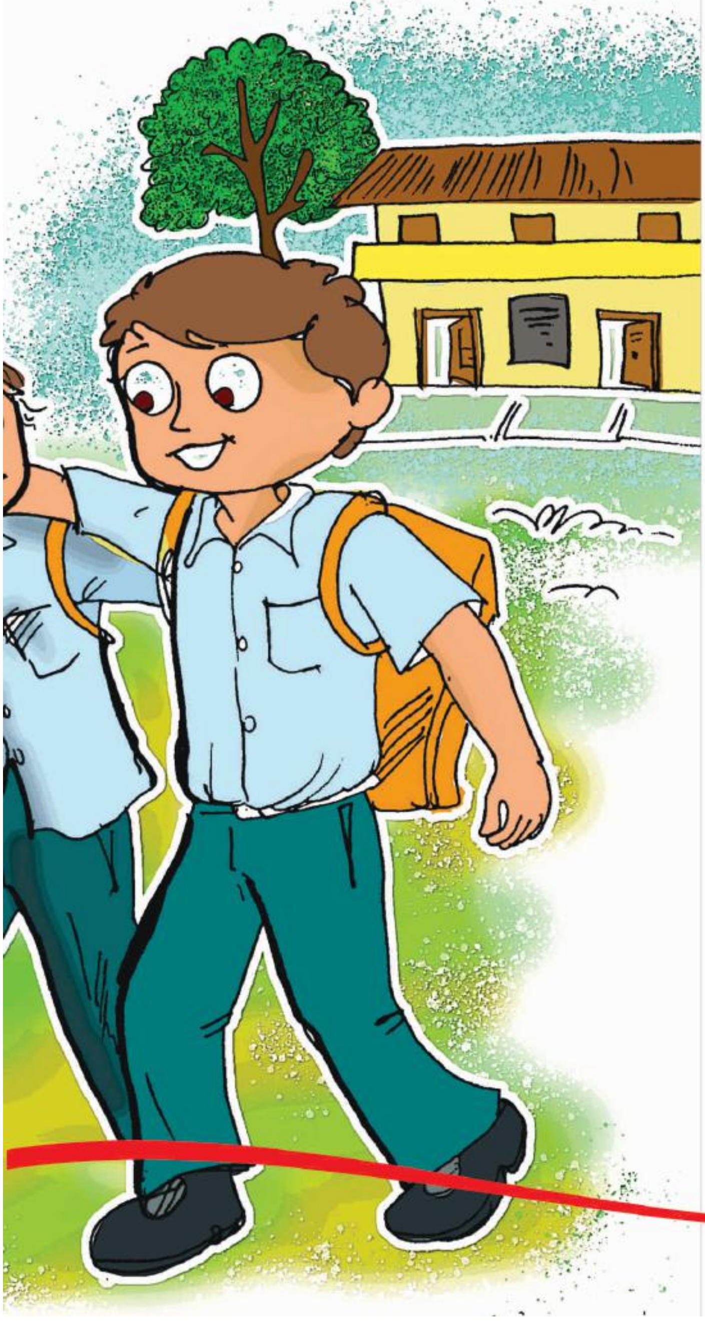

अब प्रतियोगिता के लिए कुछ ही समय बचा था लेकिन अशोक की बैचेनी और बढ़ गई थी। वह फिर सोचने लगा कि जो अपने साथी का थोड़ा सा भी कष्ट साझा न कर सके, वह हाथी के दाँत जैसा है। उसने प्रतियोगिता की तैयारी की ओर ध्यान नहीं दिया। क्योंकि उधेड़बुन जस की तस थी। इसके बाद भी उसे विश्वास था कि तनाव से मुक्ति की कोई न कोई युक्ति अवश्य मिलेगी। उसको अपने दादाजी की कही हुई बात बहुत याद आ रही थी, ''आत्मा की आवाज को परमात्मा अवश्य सुनता है।'' अशोक अपने प्यारे निर्मल मित्र के लिए वह अभी तक कुछ नहीं कर पाया था। धन के गरीब मगर मन के धनी मित्र पर उसे गर्व था, तो भी उसकी फटेहाली उसे विचलित करती रहती थी।

देवपुत्र

अशोक ने कभी मोती से रात में आए सपने के बारे में बताया था– ''मुझे लगा कि अचानक कोई साँप मेरे पैर में काटकर कहीं चला गया।'' विनोदी मोती ने तत्काल कह दिया– ''ऐसा सपना मुझे भी आया था कि तुम्हें साँप काटकर चला गया लेकिन मुझे ऐसा लगा कि मैं उस काटे गए स्थान पर अपना मुँह लगाकर जहर खींचकर थूँक रहा था।''

सोच–विचार की राह से अंततः एक दिन लक्ष्य मिल ही गया। दिमाग में बिजली के समान कौंध गई सूझ ने अशोक की चाहत को राहत प्रदान कर दी थी। यह बात उसने किसी से भी न बताने का निश्चय कर लिया। प्रतियोगिता के पहले इस सूझ की ऐसे प्रतीक्षा कर रहा था जैसे सूखी धरती वर्षा की प्रतीक्षा करती है।

अंत में बालदिवस आ ही गया। कार्यक्रम चलते रहे लेकिन अशोक को मोती की दृष्टि ढूँढ़ती रही। उसका कहीं भी अता–पता नहीं था। वह बेचारा अधीर था। उसका जी कसमसा रहा था। विविध कार्यक्रमों के बाद भाषण प्रतियोगिता शुरु होने का समय आ गया था। हाल शाला परिवार से खचाखच भरा हुआ था। प्राचार्य जी के उद्बोधन के बाद संचालक ने प्रतियोगिताओं की सूची पढ़कर सुनाई। विषय जोरदार होने के कारण प्रतियोगी भी कुछ अधिक थे। अन्ततः प्रतियोगिता शुरू हो गई।

नाम पुकारे जाने पर मोती अपने माता–पिता और साथी अशोक का नाम लेकर मंच पर गया।

उधर अशोक सिरदर्द की आड़ लेकर घर में विश्राम कर रहा था। उसकी आँखों में वहाँ के कार्यक्रम के चित्र थे। बीच–बीच में स्वास्थ्य के बारे में पूछने पर वह अपनी माँ से कह देता था। ''माँ! आज मेरा जी अच्छा नहीं है। शाला जाने का मन ही नहीं है। प्यास में ही पानी अच्छा लगता है लेकिन जल्दी ठीक हो जाऊँगा।''

भाषण प्रतियोगिता का परिणाम सुनकर मोती सीमा से अधिक गदगद था क्योंकि वह पहली बार प्रथम आया था। प्राचार्य जी ने उसकी पीठ पर हाथ फेरते हुए आशीर्वाद दिया– ''मोती बेटा! तुम्हारी चमक में बढ़ोत्तरी होती रहेगी।'' मोती फिर हाथ में पुरस्कार का लिफाफा लिए घर जाने लगा।

वैसे तो अशोक को देखने की उसकी बड़ी इच्छा थी पर उसका घर शाला से बहुत दूर था। पाँव गाड़ी से वहाँ जल्दी पहुँचना कठिन था। घर पहुँचते ही उसने माँ के चरणों पर माथा टेककर, उसके हाथ में लिफाफा थमाया और कुछ देर बाद मजदूरी करके लौटे पिता को सब कुछ बताया। उनके चरण स्पर्श किए तो उन्होंने प्रसन्न होकर उसके सिर पर हाथ फेरते हुए कहा ''मेरे पुत्तर! तूने कर दिया कमाल। ये पैसे अपने परिवार को बीमार के लिए अनार जैसे होंगे वाह।''

अशोक को यह शुभ समाचार मिल चुका था। वह सावन के मोर सा भाव–विभोर होकर नाचने लगा। दूसरे दिन सुबह मोती को बधाई देने चल पड़ा। रास्ते में यह सोचता जा रहा था कि अब तो मोती का परिवार ठंड में ठिठुरने से अवश्य बच जाएगा। कुछ साल के लिए तो यह जुगाड़ बहुत काम आएगा। उसे याद आया कि पिछले साल की भीषण ठंड से वे लोग किसी तरह बच गए थे। फटी रजाई कितना साथ दे सकती है।

अशोक ज्योंही मोती के घर पहुँचा त्योंही सभी प्रसन्नता के मारे सरसों की तरह फूले नहीं समाए। बधाई मिलते ही मोती अशोक से लिपट गया। स्वास्थ्य के बारे में पूछने पर उसने बस इतना बताया– सिर में बहुत पीड़ा थी। लेकिन तुम्हारी सफलता सुनते ही फुर्र हो गयी। मोती अपने मित्र के स्वभाव को अच्छी तरह जानता था। वह सब कुछ समझ चुका था।'' खग जाने खग ही की भाषा!'' यह दृश्य देखकर मोती के माता–पिता स्वयं को धन्य कह रहे थे, उधर भोले मोती की आँखों से प्रसन्नता के आँसू मोती जैसे झर–झर बह रहे थे।

– उमरियापान (म. प्र.)

पुस्तक परिचय

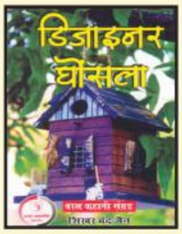

डिजाइनर घोंसला

मूल्य– १५०/–

प्रकाशक– अंतरा शब्द शक्ति
१५, नेहरू चौक मेन रोड, बारासिवनी
जिला बालाघाट–४८१३३१ (म.प्र.)

प्रसिद्ध बाल साहित्यकार **श्री शिखरचन्द जैन** की 21 कहानियों का यह संग्रह बालमन को एक नई और सार्थक दिशा देने वाला है। इसमें लेखक की कल्पना है मनोरंजन है लेकिन वैज्ञानिक यथार्थ भी है। एक ऐसा सृजन प्रयास जो लेखक को भीड़ से परे एक सम्मान योग्य स्थान प्रदान करता है।

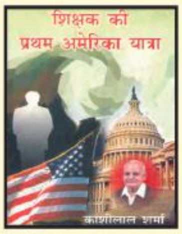

शिक्षक की प्रथम अमेरिका यात्रा

मूल्य ४००/–

प्रकाशक– यतीन्द्र साहित्य सदन
सरस्वती विहार कोर्ट के सामने,
भीलवाड़ा–३११००१ (राजस्थान)

बच्चो! अपने देश के अतिरिक्त भी संसार के अन्यान्य देशों को देखने की ललक संसार में प्रायः सभी को होती है। पुस्तक में प्रस्तुत यात्रावृत्तान्त एक ऐसे ही विश्वभ्रमण की आकांक्षा रखने वाले शिक्षक **श्री काशीलाल शर्मा** जी की पहली अमेरिका यात्रा का विस्तृत वर्णन है। जिसे पढ़कर हमारी अनेक अमेरिका विषयक जिज्ञासाओं और धारणाओं को समाधान मिलता है।

॥ बाल प्रस्तुति ॥

दीपक

कविता

चारुशिला अब्हाड़

उन दीपों को याद करो,
जिसने ये सम्मान दिया।

लिए देश के सीमाओं पर,
प्राणों का बलिदान दिया।

धन्य है माँ तू, तेरा दीपक
कभी नहीं बुझ पाएगा।

सूरज जैसा यह बलिदानी
जग में प्रकाश बिखराएगा।

उसकी स्मृति को मन में लेकर
क्यों आँखों को सजल किया।

देश के पथ में तूने अपनी
ममता को बलिदान किया।

तेरी नहीं देश के जन-जन
के नयनों की वह ज्योति ।

बलिदानी पुत्रों की माँ तो
देव पूज्य भी है होती।

- खण्डवा (म.प्र.)

बड़े लोगों के हास्य प्रसंग

गुजराती के प्रसिद्ध कवि नरभैराम को छोटे बालकों से बड़ा स्नेह था। वे उनके हर काम में मदद करने को तैयार रहते थे। एक दिन वे कहीं जा रहे थे कि देखा एक लड़का एक घर के बाहर घण्टी बजाने की कोशिश में है किन्तु बजा नहीं पा रहा है। उन्होंने तुरन्त उसकी मदद के लिए घण्टी बजा दी और बालक से पूछा, '' बोल भाई, और तेरी क्या मदद करूँ?''

बालक यह कहता हुआ भाग खड़ा हुआ '' मैं तो अब जा रहा हूँ। तुम सोच लो कि घरवाला निकलेगा तो क्या कहोगे?''

*****

पं. नेहरू और किसी एक अन्य व्यक्ति का किसी गंभीर मामले पर वाद विवाद हो रहा था। वह व्यक्ति अपने तर्कों द्वारा यह सिद्ध करने की कोशिश कर रहा था कि मामले में श्री नेहरू के विचार गलत है पर उसे जब किसी प्रकार सफलता नहीं मिली तो खीझ कर बोला, '' नेहरू जी । शायद आप यह नहीं समझते कि हर समस्या के दो पहलू हुआ करते हैं। ''

'' अच्छा तो आप इसीलिए उसके गलत पहलू का समर्थन कर रहे हैं?'' श्री नेहरू ने तत्क्षण जवाब दिया।

दीवाली के व्यंग्य चित्र

– संकेत गोस्वामी

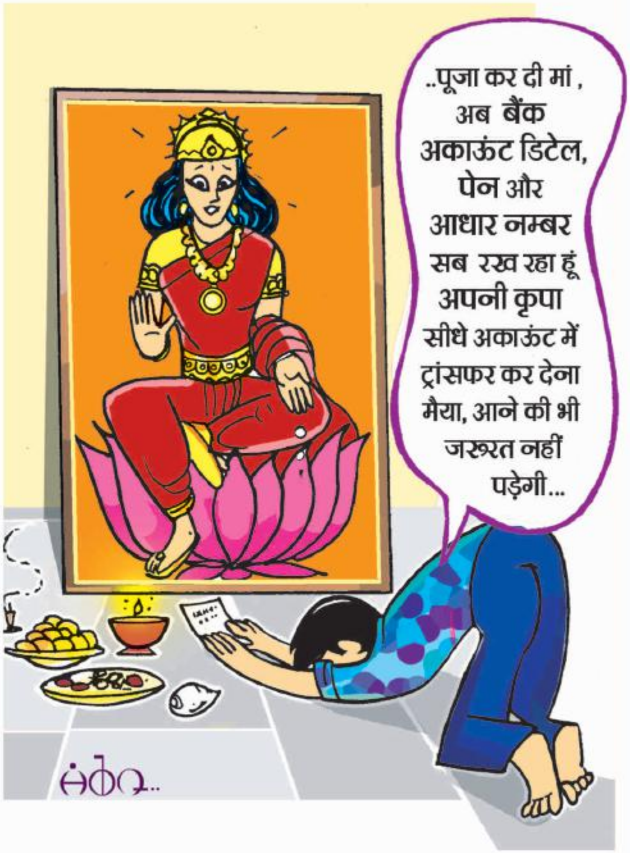
..पूजा कर दी मां, अब बैंक अकाऊंट डिटेल, पेन और आधार नम्बर सब रख रहा हूं अपनी कृपा सीधे अकाऊंट में ट्रांसफर कर देना मैया, आने की भी जरूरत नहीं पड़ेगी...

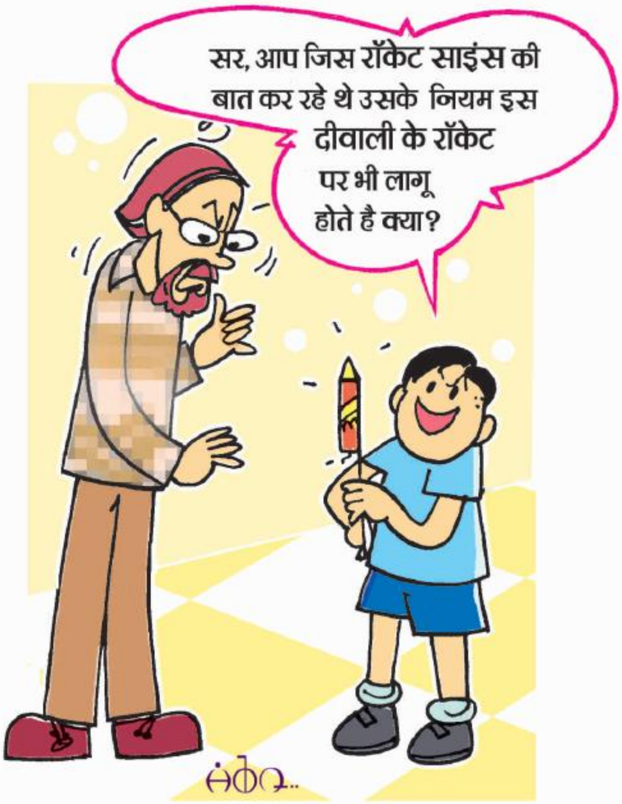
सर, आप जिस रॉकेट साइंस की बात कर रहे थे उसके नियम इस दीवाली के रॉकेट पर भी लागू होते है क्या?

सही उत्तर ....
संस्कृति प्रश्न माला – अगस्त्य, वसुदेव, पुराण, सम्मेरशिखर जी, सूर्यासावित्री , अफजल खान, सम्मोहिनी, चम्पकरमण पिल्लै, जालौर (जाबालिपुरम्). टमकोर गाँव (जिला झुंझुनू)
बूझो पहेली– १ शतरंज २ उल्लू ३ मच्छर ४ गंगानदी ५ छिपकली।

आपकी पाती

• शशांक देव सिंह, उतैली, सतना (म.प्र.)

मेरा नाम शशांक देव है मैं देवपुत्र पत्रिका का बहुत पहले से पाठक हूँ। मैं लगभग कक्षा १ या २ से इसका पाठक हूँ क्योंकि ये मुझे बहुत अच्छी लगती है, इसके रंग बिरंगे चित्र व मन मोहक कहानियाँ मुझे बहुत अच्छी लगती है। जब भी मेरे पास समय बचता है मैं इसे अवश्य पढ़ता हूँ।

अनोखे उपहार

चित्रकथा: देवांशु वत्स

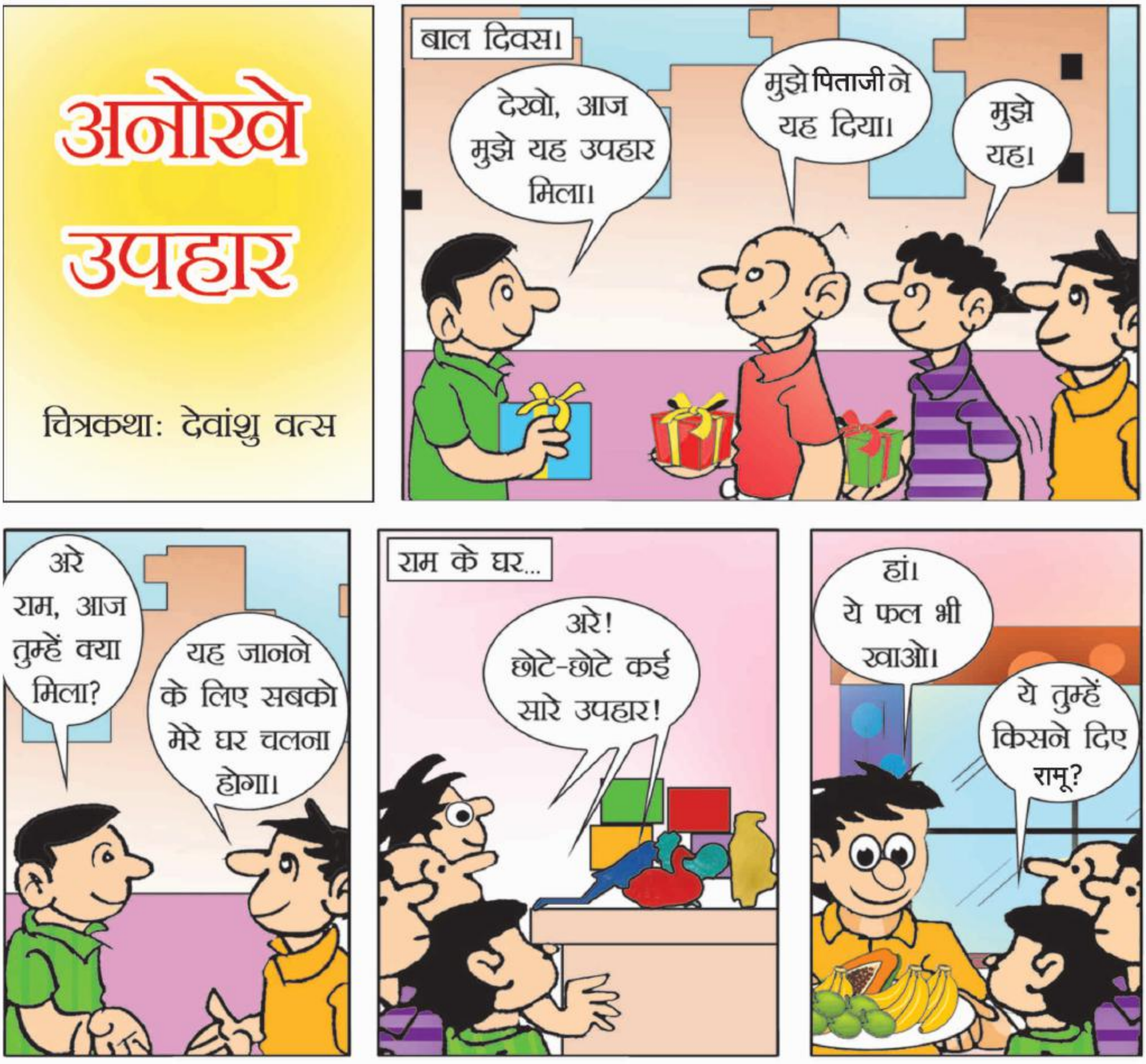
बाल दिवस।
देखो, आज मुझे यह उपहार मिला।
मुझे पिताजी ने यह दिया।
मुझे यह।
अरे राम, आज तुम्हें क्या मिला?
यह जानने के लिए सबको मेरे घर चलना होगा।
राम के घर...
अरे! छोटे-छोटे कई सारे उपहार!
हां। ये फल भी खाओ।
ये तुम्हें किसने दिए रामू?
राजू, मेरे पास बहुत सारी पुरानी पत्रिकाएं थीं। मैंने बस्ती के बच्चों को वो पत्रिकाएं और टॉफियाँ उपहार में दीं।
अच्छा।
हां, फिर उन बच्चों ने भी कुछ-कुछ चीजें मुझे उपहार में दीं...
...जैसे मिट्टी के खिलौने, फल इत्यादि!
वाह!

टिकिया वाले आ

कविता

डॉ. विष्णु शास्त्री 'सरल'

आजा- आजा आ
टिकिया वाले आ।
गरम चटपटी आलू वाली
टिकिया तू दे जा।

दादा- दादी, भैया को भी
एक-एक टिकिया दे देना,
खायेंगे हम रोज इसलिए
पैसे भी अब अधिक न लेना,
पैसे लेने अन्दर भैया-
को मैंने भेजा।

रोज दोपहर बाद हमारे
घर के आगे तू आ जाना,
'होमवर्क' जब हम कर लेंगे
अपना ठेला यहाँ लगाना,
मुझे बता दे क्या कल से भी
तू आ जाएगा?

दादी तब मुन्नी से बोली,
''अधिक चाट में मत ललचाना,
सेब, संतरे, लीची, केले
रोज मौसमी फल तू खाना,
इच्छा है तो आज भले ही
टिकिया तू ले आ।

● चम्पावत (उत्तराखण्ड)

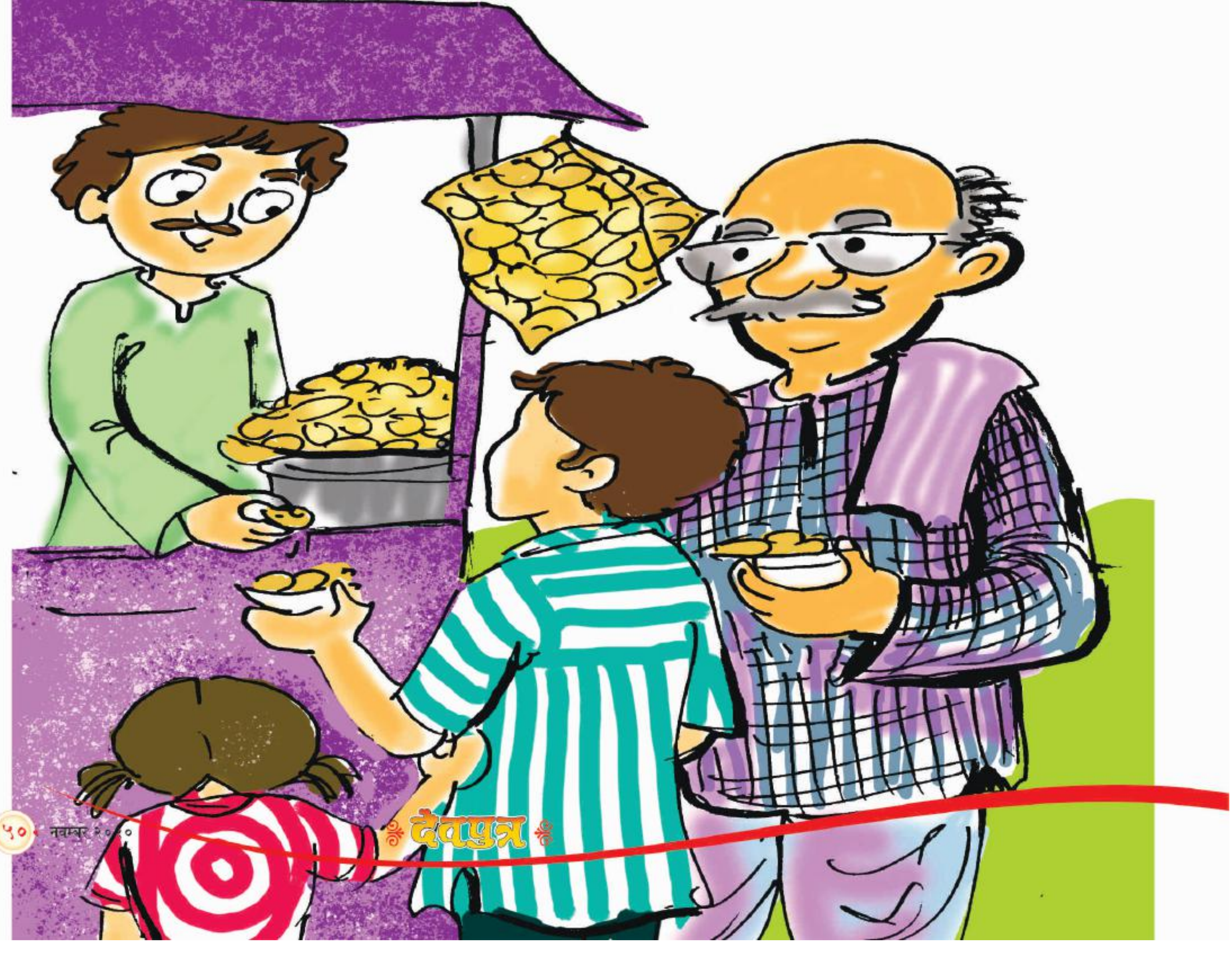

देवपुत्र द्वारा आयोजित प्रतियोगिताओं के परिणाम
वर्ष २०१९

डॉ. परशुराम शुक्ल

(१) वरिष्ठ बाल साहित्यकार डॉ. परशुराम शुक्ल द्वारा प्रायोजित

डॉ. परशुराम शुक्ल बाल साहित्य पुरस्कार वर्ष २०१९

विषय– बाल लोक कथाएं

प्रथम–	सुन्दरवन का साहसी राजकुमार	१५००/–
लेखिका–	डॉ. उपासना पाण्डेय (प्रयागराज, उ. प्र.)	
द्वितीय–	एक लाख का दोहा	१२००/–
लेखक–	डॉ. श्याम मनोहर व्यास (उदयपुर, राजस्थान)	
तृतीय–	लोहे का दैत्य	१०००/–
लेखिका–	मनीषा बनर्जी (नागपुर, महाराष्ट्र)	
प्रोत्साहन–	स्वर्णपक्षी	५००/–
लेखिका–	श्रीमती रीता जैन (भोपाल, मध्यप्रदेश)	
प्रोत्साहन–	चल मेरी ढोलक	५००/–
लेखिका–	इन्जी. आशा शर्मा (बीकानेर, राजस्थान)	

डॉ. सरोजिनी कुलश्रेष्ठ

(२) वरिष्ठ बाल साहित्यकार डॉ. सरोजिनी कुलश्रेष्ठ द्वारा प्रायोजित

'मायाश्री राष्ट्रीय बाल साहित्य पुरस्कार' २०१९

विषय–	यात्रा वृत्तान्त पर प्रकाशित कृति	
प्रथम–	देखा घर पद्मिनी का	५०००/–
लेखिका–	डॉ. इन्दुराव (गुरुग्राम, हरियाणा)	

श्री पूरनमलजी गुप्ता एवं श्रीमती केशरदेवी गुप्ता

(३) वरिष्ठ समाज सेवी श्री रमेशजी गुप्ता द्वारा प्रायोजित

'केशर–पूरन स्मृति पुरस्कार' २०१९

वरिष्ठ साहित्य प्रेमी श्री रमेश जी गुप्ता द्वारा प्रायोजित इस प्रतियोगिता के लिये पुस्तक 'चलें भ्रमण की ओर' लेखिका डॉ. सुधा गुप्ता 'अमृता' (कटनी, मध्य प्रदेश) को विशेष पुरस्कार के रूप में २१००/– की राशि प्रदान की जा रही है। यह पुरस्कार प्रतिवर्ष देवपुत्र के 'पुस्तक परिचय' स्तंभ के अन्तर्गत प्रकाशित पुस्तकों में से सर्वश्रेष्ठ कृति पर दिया जाएगा।

श्री शान्ताराम भवालकर

(४) देवपुत्र के पूर्व व्यवस्थापक मा. श्री शान्ताराम जी भवालकर की स्मृति में आयोजित

'भवालकर स्मृति कहानी प्रतियोगिता' २०१९

प्रथम–	कहानी 'सच्चा मित्र' लेखक माधवगुप्ता कक्षा ९वीं (करनाल, हरियाणा)	१५००/–
द्वितीय–	कहानी 'कुसंगति का फल' लेखक शुभप्रतापसिंह कक्षा ६टी (खैर, म. प्र.)	११००/–
तृतीय–	कहानी 'इलाज' लेखिका वेदिका साहू कक्षा ७वीं (सारंगपुरी, छ. ग.)	१०००/–
प्रोत्साहन–	कहानी 'मूर्ति' लेखक कार्तिकेय प्रतापसिंह कक्षा ८वीं (उतैली, म. प्र.)	५००/–
प्रोत्साहन–	कहानी 'ग्रहों का परिचय' लेखक विकास त्रिपाठी कक्षा ६टी (उतैली, म. प्र.)	५००/–

डाक पंजीयन : एम.पी./आय.डी.सी./६२३/२०१८-२०२० आर.एन.आय. पं. क्रं. ३८५७७/८५
प्रकाशन तिथि २०/१०/२०२० प्रेषण तिथि ३०/१०/२०२० प्रेषण स्थल- आर.एम.एस., इन्दौर

संस्कार संजोना अच्छी बात है
संस्कार फैलाना और अच्छी बात।

देवपुत्र
देवपुत्र
देवपुत्र
देवपुत्र
देवपुत्र
देवपुत्र

वार्षिक शुल्क
180/-

आजीवन शुल्क
1400/-

बाल साहित्य और संस्कारों का अग्रदूत

सचित्र प्रेरक बाल मासिक

देवपुत्र *सचित्र प्रेरक बहुरंगी बाल मासिक*

स्वयं पढ़िए औरों को पढ़ाइये

अब और आकर्षक साज-सज्जा के साथ

अवश्य देखें- वेबसाईट : ***www.devputra.com***

देवपुत्र अब ***Jio Net*** *पर भी !*

सरस्वती बाल कल्याण न्यास, इन्दौर के लिए मुद्रक एवं प्रकाशन कृष्णकुमार अष्ठाना द्वारा टी.एन. ट्रेडर्स, सांवेर रोड, इन्दौर से मुद्रित एवं ४०, संवाद नगर, इन्दौर से प्रकाशित
प्रधान सम्पादक - कृष्णकुमार अष्ठाना